फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 76 संख्याः 4 प्रभात जयपुर, सोमवार 4 अगस्त, 2025 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

ARBiT

Submarines Too Need Looking Up

The Indian Navy does not have an AIP fitted submarine as yet. The absence of this capability, on the six Kalvari class (Scorpene) submarines, is a major constraint

PahadiFare @ Fairfield

The ten day long Pahadi Zaika food festival, currently on at Fairfield by Marriott, serves the best of Garhwal, Uttarakhand and Himachal

एयर इंडिया का पुनः "राष्ट्रीयकरण" (नैशनलाइज़ेशन) करने की माँग उठने लगी है

रद्द उड़ानें, उड़ान भरने में बेवजह देरी आदि कारणों से यह छवि बन रही है कि एयर इंडिया में अब शीर्ष स्तर पर नागरिक उड्डयन (सिविल एविएशन) के पर्याप्त अनुभव की कमी है

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 03 अगस्त। कांग्रेस नेता मनीष तिवारी द्वारा टाटा समूह से एयर इंडिया को वापस लेने की सरकार से की गई मांग ने एक बार फिर उस बहस को जिंदा कर दिया है, जिसके बारे में कई लोगों का मानना था कि जनवरी 2022 में एयरलाइन के निजीकरण के साथ ही यह मामता सुलझ गया था। टाटा के नेतृत्व वाली एयर इंडिया के "प्रबंधन में गड़बड़ी" बताते हुए, तिवारी ने समूह पर राष्ट्रीय संपत्ति को कुप्रबंधन की मिसाल बनाने का आरोप लगाया, जिसमें उड़ान रद्द हो रही हैं समय पर उड़ानें नहीं मिल रहीं और विमानन क्षेत्र की समझ की कमी दिखाई दे रही है।

तिवारी की निराशा पूरी तरह निराधार नहीं है। सोशल मीडिया पर यात्रियों की शिकायतें भरी पड़ी हैं, अनियमित समय-सारणी, खराब ग्राहक सेवा और व्यवस्थागत गड़बड़ियाँ। समूह द्वारा आधुनिक, और

- **पर, क्या पुनः नैशनलाइज़ेशन करना इस समस्या का सही निदान है। क्योंकि एयर इंडिया को टाटा समूह को सौंपना एक "इमोशनल" निर्णय नहीं था, बल्कि आर्थिक विवशता दी। एयर इंडिया 60 हजार करोड़ रूपए का घाटा दे चुकी थी तथा सरकार के अनुदान के कारण घिसट रही थी। आशा की थी कि प्राइवेट हाथों में मैनेजमैंट जाने के बाद, यह घाटा रूकेगा तथा धीरे-धीरे एयर इंडिया चुस्त होकर अपने पैरों पर खड़ी हो जायेगी।**
- **टाटा संस ने चुस्त बनाने की दिशा में कदम भी उठाये तथा सिविल एविएशन इंडस्ट्री का अब तक का सबसे बड़ा ऑर्डर दिया नये हवाई जहाजों के लिए। स्टाफ के प्रशिक्षण के नये कोर्स शुरु किये गये तथा एयर इंडिया ब्राण्ड की विश्वसनीयता पुनः स्थापित करने की कोशिश की गई। पर, यह काम वर्षों चलने के बाद रिजल्ट दिखाता है। अतः एक प्रतिक्रिया यह भी है कि अब पुनः नैशनलाइज़ेशन की बात करना न्यायोचित नहीं है।**

यात्रियों के अनुकूल एयर इंडिया का जो वादा किया गया था, वह अब तक पूरी तरह हकीकत नहीं बन पाया है। लेकिन क्या इन शुरुआती समस्याओं की वजह से एक ऐतिहासिक सुधार को वापस लिया जाना चाहिए? क्या सरकार को उस एयरलाइन को फिर से अपने हाथ में लेना चाहिए, जिसे वह सालों तक सब्सिडी देकर भी चला नहीं पाई थी?

पहले यह समझना जरूरी है कि एयर इंडिया का निजीकरण कोई आइडियोलॉजिकल फैसला नहीं था, बल्कि एक वित्तीय मजबूरी थी। यह एयरलाइन सरकार के लिए एक आर्थिक बोझ बन चुकी थी, 60,000 करोड़ से अधिक का नुकसान था, और सरकारी मदद से ही चल रही थी। करदाताओं का पैसा इस अनुत्पादक संस्था को बचाने में खर्च हो रहा था, जबकि वही पैसा स्वास्थ्य सेवा या बुनियादी ढाँचे में लग सकता था।

यह तो कहना पड़ेगा कि टाटा संस ने एक बहुत ही जटिल और संकटग्रस्त एयरलाइन संभाली है। चार एयरलाइनों (एयर इंडिया, एयर इंडिया एक्सप्रेस, विस्तारा और एयरएशिया इंडिया) का एकीकरण कोई आसान काम नहीं है। टाटा ने विमानन इतिहास का सबसे बड़ा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

उम्र कैद की सजा के खिलाफ रेवन्ना हाई कोर्ट पहुँचे

बेंगलु, 03 अगस्त। यौन शोषण के एक मामले में कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु स्थित सांसदों/विधायकों की विशेष अदालत (एमपी/एमएलए कोर्ट) की ओर से आजीवन कारावास की सजा सुनाए जाने के एक दिन बाद जनता दल (सेक्युलर) के नेता प्रज्वल रेवन्ना को बेंगलुरु के परप्पना अग्रहारा केंद्रीय कारागार में कैदी नंबर दिया गया। इस बात की जानकारी रविवार (3 अगस्त, 2025) को जेल अधिकारियों ने दी।

प्रज्वल ने कथित तौर पर

- **यौन शोषण के मामले में सांसद विधायकों की विशेष अदालत ने शेष जीवन तक कारावास की सजा सुनाई थी।**

कर्मचारियों को सूचित किया है कि उसने अपनी सजा को चुनौती देने के लिए उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया है। पूर्व सांसद फिलहाल उच्च सुरक्षा वाली कोठरी में बंद है और उसे कड़ी सुरक्षा दी जा रही है।

प्रज्वल को शनिवार (2 अगस्त) को शेष जीवन तक कारावास में रहने की सजा सुनाई गई और कुल 11.50 लाख रुपये का जुर्माना लगाया। अदालत ने निर्देश दिया कि 11.25 लाख रुपये रेवन्ना के परिवार की घरेलू सहायिका व पीड़िता को दिए जाएं।

'साढ़े छः लाख बिहारी श्रमिकों को तमिलनाडु का मतदाता बनाना अवैध'

चिदंबरम ने इसे तमिलनाडु के मतदाताओं के मनपसंद सरकार चुनने के अधिकार में हस्तक्षेप बताया

चेन्नई, 03 अगस्त। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी चिदंबरम ने रविवार को कहा कि तमिलनाडु में बिहार के प्रवासी श्रमिकों को भी मतदान का अधिकार देने का चुनाव आयोग का फैसला चिंताजनक और अवैध है।

उन्होंने यह भी कहा कि यह कदम तमिलनाडु के मतदाताओं के मनपसंद सरकार चुनने के अधिकार में घोर हस्तक्षेप होने के साथ-साथ प्रवासी श्रमिकों का भी "अपमान" है।

एक सोशल मीडिया पोस्ट में चिदंबरम ने कहा, "जहाँ बिहार में 65 लाख मतदाताओं के मताधिकार से वंचित होने का खतरा मंडरा रहा है, वहीं तमिलनाडु में 6.5 लाख लोगों को मतदाता के रूप में जोड़ने की खबरें चिंताजनक और स्पष्ट रूप से अवैध हैं। उन्हें "स्थायी प्रवासी" कहना प्रवासी श्रमिकों का अपमान है और तमिलनाडु के मतदाताओं के अपनी पसंदीदा सरकार चुनने के हक में घोर हस्तक्षेप है।"

उन्होंने सवाल उठाते हुए कहा कि

- **चिदंबरम ने कहा कि चुनाव आयोग की प्रक्रिया रोजाना अजीब होती जा रही है। अगर प्रवासी मजदूर के परिवार का बिहार में स्थायी घर है तो उसे तमिलनाडु में "स्थायी प्रवासी" कैसे माना जा सकता है।**

प्रवासी श्रमिक जैसे छठ पूजा में वापस घर जाते हैं वैसे ही वे चुनावों में मतदान के लिए गृह राज्य क्यों नहीं जा सकते। उन्होंने कहा, "प्रवासी श्रमिक विधानसभा चुनाव में मतदान करने के लिए बिहार (या अपने गृह राज्य) क्यों नहीं लौटते, जैसा कि वे आमतौर पर करते हैं? क्या प्रवासी श्रमिक छठ पूजा के त्योहार के समय बिहार नहीं लौटते? जब प्रवासी श्रमिक का बिहार (या दूसरे राज्य) में घर है तो उन्हें तमिलनाडु की मतदाता सूची में कैसे जोड़ा जा सकता है?"

चिदंबरम ने कहा कि चुनाव आयोग की विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया रोजाना ही और भी ज़्यादा अजीब होती जा रही है। अगर प्रवासी मज़दूर के परिवार का बिहार में स्थायी घर है और वह बिहार में रहता है, तो उसे तमिलनाडु में "स्थायी प्रवासी" कैसे माना जा सकता है?"

उन्होंने पोस्ट में लिखा, "चुनाव आयोग अपनी शक्तियों का दुरुपयोग कर रहा है और राज्यों के चुनावी चरित्र और पैटर्न को बदलने की कोशिश कर रहा है। शक्तियों के इस दुरुपयोग का राजनीतिक और कानूनी विरोध करना चाहिए।

विदित हो कि इससे पहले द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) और उसके सहयोगी दलों ने राज्य में प्रवासी मज़दूरों को वोट देने का अधिकार देने के चुनाव

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सितंबर से रजिस्टर्ड पोस्ट सेवा बंद होगी

नई दिल्ली, 03 अगस्त। भारतीय डाक विभाग ने बड़ा ऐलान किया है, जिसमें बताया गया है कि 1 सितंबर से रजिस्टर्ड पोस्ट सेवा को अब स्पीड पोस्ट के साथ ही मिला दिया जाएगा। यानी अब ग्राहकों को पार्सल भेजने के लिए सिर्फ स्पीड पोस्ट की ही सुविधा मिलेगी। डाक विभाग ने बताया है कि इस फैसले के बाद पोस्ट सर्विस तेज और आधुनिक बनेगी।

ज्ञातव्य है कि रजिस्टर्ड पोस्ट

- **डाक विभाग, स्पीड पोस्ट सर्विस को तेज और आधुनिक बनायेगा।**

सर्विस की सुविधा साल1854 में शुरू की गई थी। इसके जरिए ग्राहक जरूरी डॉक्यूमेंट्स के साथ कीमती सामानों को भेजा करते थे। हालांकि अब 1 सितंबर से रजिस्टर्ड पोस्टलेबल नहीं मिलेगा। रजिस्टर्ड पोस्ट सर्विस में प्रूफ ऑफ डिलीवरी और रिसीवर के सिग्नेचर की जरूरत होती थी, जो अब ये स्पीड पोस्ट में मिलेगी।

आधिकारिक डाक डेटा 2011-

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सरयू नहर में बोलेरो डूबी, 11 की मौत

मृतकों में गोंडा के सीहा गाँव के 3 भाईयों के परिवार के 9 सदस्य व दो पड़ौसी हैं

गोंडा, 03 अगस्त। यूपी के गोंडा में रविवार सुबह 10 बजे तेज रफ्तार बोलेरो बेकाबू होकर सरयू नहर में गिर गई। हादसे में 11 लोगों की मौत हो गई। इनमें 3 भाइयों के परिवार के 9 लोग थे, जबकि 2 लोग पड़ोसी परिवार के थे। छोटे भाई का पूरा परिवार खत्म हो गया। ड्राइवर सहित 4 लोग बच गए। अभी 10 साल की बच्ची लापता है। एसडीआरएफ टीम उसकी तलाश में जुटी है।

बोलेरो सवार 16 लोग जल चढ़ाने पृथ्वीनाथ मंदिर जा रहे थे। सभी गोंडा के मोतीगंज थाना के सीहा गांव के रहने वाले थे। हादसा इतना भयावह था कि गाड़ी नहर में गिरने के बाद एक भी शख्स बाहर नहीं निकल पाया। बारिश के कारण नहर में लबालब पानी भरा है। नहर में गिरते ही गाड़ी पूरी तरह से डूब गई। उसके गेट लॉक हो गए। अंदर बैठे लोग छटपटाते रहे।

जानकारी के अनुसार, गाड़ी नहर के किनारे बनी सड़क से निकल रही थी। नहर क्रॉस करके जाना था। पुलिया के पास अचानक ड्राइवर ने ब्रेक लगाया, तेज स्पीड और बारिश की वजह से गाड़ी बेकाबू होकर नहर में गिरने लगी। इस पर ड्राइवर गेट खोलकर कूद गया। आगे की सीट में बैठे 2 लोग भी बाहर आ गए। बच्ची पिंकी बीच में खड़ी थी। झटके से वह भी ड्राइवर साइड के गेट से बाहर आ गई। इसके बाद बोलरो नहर में गिर गई।

जहां हादसा हुआ, वहां आसपास ग्रामीण मौजूद थे। बोलेरो नहर में गिरती देख वो लोग बचाने के लिए पानी में कूद गए, लेकिन गेट नहीं खोल पाए। रस्सी बांधकर बोलेरो को किनारे तक लाए, तब जाकर गाड़ी का कुछ हिस्सा बाहर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ग्रेनाइट खदान में बोल्डर गिरने से 6 मजदूरों की मौत

बापतला, 03 अगस्त। आंध्रप्रदेश में बापतला जिले के बल्लीकुरवा गाँव में एक ग्रेनाइट खदान में रविवार को एक भारी शिलाखंड (बोल्डर) गिरने से छह मज़दूरों की मौत हो गई और आठ अन्य घायल हो गये।

पुलिस सूत्रों ने बताया कि मज़दूरों का एक समूह सत्य कृष्णा ग्रेनाइट खदान में काम कर रहा था, तभी एक पहाड़ी से विशाल पत्थर लुढ़ककर उन पर गिर गया जिसमें छह मज़दूरों की मौके पर ही मौत हो गयी। अब तक चार शव बाहर निकाले जा चुके हैं और दो

- **आंध्र प्रदेश में हुई दुर्घटना में चार अन्य मजदूरों की हालत नाज़ुक है।**

को निकालने के प्रयास जारी हैं। जिस समय यह हादसा हुआ, तब ग्रेनाइट खदान में 16 मज़दूर काम कर रहे थे।

इस हादसे में घायल अन्य मजदूरों को एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहाँ चार मज़दूरों की हालत नाजुक बताई जा रही है। प्रारंभिक जाँच के अनुसार, हादसे में मारे जाने वाले मजदूर ओडिशा के थे।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

इंडिया गठबंधन की बैठक 7 अगस्त को राहुल गांधी के निवास पर होगी

गठबंधन की पिछली बैठक 19 जुलाई को वर्चुअल हुई थी, जिसमें 24 दलों के नेता शामिल हुए थे

नई दिल्ली, 03 अगस्त। विपक्षी दलों के गठबंधन "इंडिया" की अगली बैठक 7 अगस्त को कांग्रेस सांसद और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के आवास पर होगी। सूत्रों के मुताबिक, यह बैठक डिनर के दौरान होगी और इसमें कई अहम मुद्दों पर चर्चा की जाएगी।

राहुल गांधी ने हाल ही में आरोप लगाया था कि 2024 के लोकसभा चुनावों में करीब 70-80 सीटों पर धांधली हुई है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री बहुत मामूली बहुमत से जीते हैं और यदि 15 सीटें भी सही तरीके से हुई होतीं, तो वो प्रधानमंत्री नहीं बन पाते।इसके साथ ही, बैठक में कई मुद्दे उठाए जा सकते हैं। जिसमें बिहार में चल रही विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया,

- **राहुल गांधी के घर डिनर बैठक में मतदाता पुनरीक्षण, महाराष्ट्र में फर्जी वोटर जोड़ना, भारत-अमेरिका व्यापार समझौता, ऑपरेशर सिंदूर तथा ट्रंप की टैरिफ थमकी आदि मुद्दों पर चर्चा होगी।**

महाराष्ट्र में फर्जी वोटर जोड़ने का आरोप, ऑपरेशन सिंदूर, भारत-अमेरिका व्यापार समझौता और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की तरफ से संभावित टैरिफ (शुल्क) धमकी शामिल है।

पिछली बैठक 19 जुलाई को वर्चुअल हुई थी, जिसमें 24 से ज्यादा दलों के नेता शामिल हुए थे, जिसमें एनसीपी-एसपी प्रमुख शरद पवार, आरजेडी नेता और बिहार के पूर्व डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव, जम्मू-कश्मीर के मौजूदा मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला, झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन और शिवसेना यूबीटी प्रमुख उद्धव ठाकरे शामिल थे।

इस बार फारूक अब्दुल्ला (नेशनल कॉन्फ्रेंस) ने भी पुष्टि की है कि वे बैठक में शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि वे बिहार की एसआईआर प्रक्रिया पर चर्चा करेंगे, जिसे भाजपा-जेडीयू गठबंधन की जीत सुनिश्चित करने के लिए उपयोग किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री राष्ट्रपति मुर्मू से मिले

नई दिल्ली, 03 अगस्त। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की। दोनों नेताओं की मुलाकात की वजह अभी सामने नहीं आई है। राष्ट्रपति भवन ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर साझा एक पोस्ट में बताया, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की।

यह मुलाकात ऐसे समय हुई है, जब बिहार विधानसभा चुनाव से पहले बिहार में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया पर चर्चा की विपक्ष की मांग को

- **अभी तक इस मुलाकात का कारण स्पष्ट नहीं हुआ है।**

लेकर संसद में गतिरोध जारी है। साथ ही चुनाव आयोग ने उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए भी अधिसूचना जारी कर दी है। ऑपरेशन सिंदूर पर दोनों सदनों में चर्चा के अलावा, मानसून सत्र शुरू होने के बाद से संसद में बहुत कम कामकाज हुआ है। राष्ट्रपति के साथ प्रधानमंत्री की यह मुलाकात अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप द्वारा भारत पर 25 प्रतिशत टैरिफ लगाने और भारत के रूस से सैन्य उपकरण और तेल की खरीद के चलते पेनल्टी लगाने का भी एलान किया है।

गडकरी के घर को बम से उड़ाने की धमकी देने वाला गिरफ्तार

नागपुर, 03 अगस्त। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी के नागपुर स्थित घर को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। पुलिस कंट्रोल रूम को ये धमकी भरा कॉल आया है। इस कॉल के बाद पुलिस विभाग में हड़कंप मच गया। कुछ ही देर में आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया।

मिली जानकारी के अनुसार,रविवार सुबह 8:46 बजे

- **रविवार की सुबह पुलिस कंट्रोल रूम में बम से उड़ाने की धमकी का फोन आया था।**
- **नागपुर पुलिस ने गडकरी के घर पर डॉग स्क्वॉड के साथ सर्च ऑपरेशन चलाया। कुछ घंटों में ही धमकी देने वाला गिरफ्तार हो गया। वह एक देशी शराब की दुकान पर काम करता है।**

पुलिस कंट्रोल के 112 नंबर पर गडकरी के घर को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। धमकी का कॉल आने के बाद पुलिस ने स्थानीय पुलिस थाने को मामले की जानकारी दी है। कंट्रोल रूम को कॉल आने के बाद प्रताप नगर पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी थी।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

चुनाव आयोग ने तेजस्वी यादव से दो वोटर आईडी कार्ड पर जवाब मांगा

आयोग ने तेजस्वी द्वारा प्रेस कॉन्फ्रैंस में दिखाये वोटर कार्ड की मूल प्रति मांगी

पटना, 03 अगस्त। बिहार विधानसभा चुनावों की तैयारियों में सभी पार्टियां जुटी हुई हैं। इस बीच आरजेडी नेता तेजस्वी यादव की मुश्किलें बढ़ती हुई दिख रही हैं। चुनाव आयोग ने उन्हें नोटिस जारी किया है और 2 वोटर आई कार्ड के संबंध में जवाब मांगा है।

चुनाव आयोग के अनुसार, तेजस्वी यादव की प्रेस वार्ता के दौरान दिखाए गए इलैक्शन फोटो आइडैंटिटी कार्ड (ई.पी.आई.सी.) संख्या आरएबी 2916120 की जांच की जाएगी। आयोग ने तेजस्वी यादव से इसकी मूल प्रति मांगी है, जिसके लिए नोटिस जारी किया है।

चुनाव आयोग की प्राथमिक जांच के अनुसार, तेजस्वी को ई.पी.आई.सी. कार्ड का विवरण (कार्ड की मूल प्रति सहित) आयोग को उपलब्ध कराने को कहा गया है ताकि इसकी गहन जांच की जा सके।

दरअसल तेजस्वी यादव ने दावा किया था कि विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के तहत जारी ड्राफ्ट वोटर लिस्ट में उनका नाम नहीं है। तेजस्वी ने शनिवार को पटना में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा था कि उन्होंने अपने ई.पी.आई.सी. नंबर (आरएबी 2916120) को चुनाव आयोग की वेबसाइट पर सर्च किया, लेकिन नो रिकॉर्ड फाउंड का मैसेज आया। इसी बात को लेकर उन्होंने आयोग पर सवाल उठाए थे।

- **आयोग का कहना है कि जो कार्ड तेजस्वी ने दिखाया वह 10 साल से रिकॉर्ड में नहीं है तथा गत दो चुनाव तेजस्वी यादव ने जिस वोटर आईडी पर लड़े, वह दूसरा है।**

हालांकि, चुनाव आयोग ने उनके दावे को खारिज कर दिया था और कहा था कि तेजस्वी का नाम वोटर लिस्ट में मतदान केंद्र संख्या 204, क्रमांक 416 पर दर्ज है। उनका वैध ई.पी.आई.सी. नंबर आरएबी 0456228 है। चुनाव आयोग के सूत्रों ने बताया था कि तेजस्वी ने पीसी के दौरान जो ई.पी.आई.सी. नंबर आरएबी 2916120 दिखाया, वो पिछले 10 साल में कहीं रिकॉर्ड में नहीं है। जबकि तेजस्वी ने जिस ई.पी.आई.सी. नंबर आरएबी 0456228 के आधार पर 2015 और 2020 के विधानसभा चुनाव लड़े, वो आधिकारिक रिकॉर्ड में मौजूद है।

बिहार एनडीए के घटक दलों के प्रवक्ताओं ने रविवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय में आयोजित एक प्रेस वार्ता में कांग्रेस के नेता राहुल गांधी और राजद के नेता तेजस्वी यादव पर जमकर सियासी हमला बोला।

एनडीए प्रवक्ताओं ने दो ई.पी.आई.सी. नंबर पर सवाल उठाते हुए कहा कि यह आया कहां से? कोई भी व्यक्ति दो मतदाता पहचान

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सरकार ने 35 जरूरी दवाओं की कीमत घटाई

नई दिल्ली, 03 अगस्त। राष्ट्रीय औषधि मूल्य निर्धारण प्राधिकरण (एनपीपीए) ने एक बड़ा फैसला लिया है। अब कई जरूरी दवाएं पहले से सस्ती मिलेंगी। सरकार ने 35 जरूरी दवाओं की कीमत घटा दी है, जिससे दिल, डायबिटीज, मानसिक रोग और इंफेक्शन जैसी बीमारियों के मरीजों को सीधी राहत मिलेगी।

ये फैसला रसायन और उर्वरक मंत्रालय ने एनपीपीए की सिफारिश पर लिया है। इसके तहत जिन दवाओं की कीमतें कम की गई हैं, वह लंबे समय से चल रही बीमारियों के इलाज में इस्तेमाल होती हैं।

प्राइस कंट्रोल ऑर्डर के अंतर्गत आने वाले प्रमुख

- **नोटिफाइड कीमतों की पालना नहीं करने पर दंडात्मक प्रावधान लागू होंगे।**

फॉर्मूले में एसिक्लोफेनाक, पैरासिटामोल और ट्रिप्सिन काइमोट्रिप्सिन, एमोक्सिसिलिन और पोटेशियम क्लैवुलनेट के फिक्स्ड डोज कॉम्बिनेशन, एटोरवास्टेटिन कॉम्बिनेशन और एम्पैग्लिफ्लोजिन, सिटाग्लिप्टिन और मेटफॉर्मिन जैसे नए ओरल एंटीडायबिटिक कॉम्बिनेशन शामिल हैं।

नोटिफाइड कीमतों का पालन न करने पर डीपीसीओ, 2013 और आवश्यक वस्तु अधिनियम, 1955 के तहत दंडात्मक प्रावधान लागू हो सकते हैं, जिसमें ब्याज सहित

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

मस्तिष्क इन्द्रियों की अपेक्षा महान है, शुद्ध बुद्धिमत्ता मस्तिष्क से महान है, आत्मा बुद्धि से महान है, और आत्मा से बढकर कुछ भी नहीं है। –स्वामी शिवानंद

हमारे बच्चे और सोशल मीडिया

क्या आप जानते हैं कि हम भारतीय सोशल मीडिया का कितना प्रयोग करते हैं? शायद यह बात आपके लिए भी चौंकाने वाली हो कि पूरी दुनिया में सोशल मीडिया का सबसे ज़्यादा प्रयोग हम भारतीय ही करते हैं। हमारे यहां एक व्यक्ति औसतन 11 प्लेटफॉर्म्स पर सक्रिय रहता है और हर दिन लगभग 7.3 घण्टे स्क्रीन पर (मोबाइल या अन्य) व्यतीत करता है। समझा जा सकता है कि जब बड़े इतना समय स्क्रीन को देते हैं तो अपने बच्चों को इसका इस्तेमाल करने से शायद ही रोक पाते होंगे। वैसे भी कोरोना काल में तत्कालीन विवशताओं की वजह से शिक्षा के लिए मोबाइल का प्रयोग अपरिहार्य हो गया था। जो मां–बाप अपने बच्चों को मोबाइल से दूर रखना चाहते थे उन्हें भी आगे बढ़कर अपने बच्चों के हाथों में मोबाइल देना पड़ा था। और उसके बाद बहुत मुमकिन है कि उनमें से बहुत सारे लोग उस मोबाइल को वापस लेना भूल गए हों।

हम अपने चारों तरफ देखते हैं कि अधिकांश मां–बाप अपने बच्चों के प्रति अपने लाड़ का प्रदर्शन करने के लिए औचित्य की बहुत सारी सीमाओं की अनदेखी कर जाते हैं। वे बच्चों को बिना रोक–टोक के फास्ट फूड का उपभोग करने देते हैं, ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त करने का पात्र बनें उससे पहले वे उन्हें अपने वाहनों की चाबियां सौंप देते हैं और लाड़–लाड़ में न केवल उन्हें मोबाइल का निर्बाध प्रयोग करने देते हैं, ख़ुद आगे बढ़कर उन्हें मोबाइल खरीद कर भी दे देते हैं। अगर मां–बाप न दें या देने की स्थिति में न हों तो बच्चे ख़ुद लड़–झगड़कर हासिल कर लेते हैं। बहुत बार यह भी देखा गया है कि ये सारी गतिविधियां करते हुए मां–बाप लज्जित नहीं गर्वित होते हैं।

इन बहुत सारी बातों के बीच से आज हम चर्चा यह करना चाह रहे हैं कि क्या बच्चों को सोशल मीडिया का निर्बाध या सीमित उपयोग करने देना चाहिए? यह सवाल इसलिए भी उठ रहा है कि हाल में ऑस्ट्रेलिया की सरकार ने घोषणा की है कि सन 2025 की पहली दिसम्बर से वहां सोलह बरस से कम उम्र के बच्चे यूट्यूब का प्रयोग नहीं कर सकेंगे। इस निषेध का उल्लंघन करने पर यूट्यूब को 50 मिलियन ऑस्ट्रेलियन डॉलर अर्थात लगभग 282 करोड़ रुपये तक का जुर्माना भरना पड़ सकता है। असल में वहां की सरकार ने एक अध्ययन करवाया था जिससे ज्ञात हुआ कि ऑस्ट्रेलिया में 10 से 12 बरस की आयु के 68 प्रतिशत बच्चे नियमित रूप से यूट्यूब देखते हैं और यूट्यूब का एल्गोरिदम कुछ इस तरह का है कि वह बच्चों को ख़तरनाक स्टंट, हिंसा, डरावने दृश्यों और अश्लीलता भरे वीडियो या शॉर्ट्स बार–बार दिखाता है। इस कारण इन बच्चों में बहुत तेज़ी से डोपामाइन साइकल बनने लगा है और इसका कुप्रभाव उनकी नींद, पढ़ाई और मानसिकता पर पड़ रहा है। यहीं यह भी जान लें कि ऑस्ट्रेलिया में बच्चों के लिए टिकटॉक, इंस्टाग्राम, स्नैपचैट और फ़ेसबुक का प्रयोग पहले से वर्जित है।

इसी क्रम में यह भी जान लिया जाए कि ऑस्ट्रेलिया के अलावा भी दुनिया के बहुत सारे देशों में बच्चों के सोशल मीडिया प्रयोग पर बंदिशें लागू हैं। फ्रांस में 15 वर्ष से कम उम्र के बच्चे बग़ैर माता–पिता की अनुमति के सोशल मीडिया का प्रयोग नहीं कर सकते हैं। और जैसे इतना ही पर्याप्त न हो वहां तो 15 वर्ष की उम्र तक के बच्चों द्वारा मोबाइल के उपभोग को पूरी तरह बंद करने के मामले में भी एक ट्रायल चल रही है। फ्रांस की ही तरह जर्मनी में भी 13 से 16 वर्ष तक की आयु के बच्चे बग़ैर मां–बाप की अनुमति के सोशल मीडिया का प्रयोग नहीं कर सकते हैं। बेल्जियम में यह प्रतिबंध 13 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए प्रभावी है।

> **हमारे यहां अगर कानून बन भी जाएगा तो यह निश्चित मानिए कि उसके पालन से ज़्यादा उसका उल्लंघन होगा, और अंततः वह कानून मज़ाक बन कर रह जाएगा। अधिकांश मां-बाप में इस समझ का अभाव है कि मोबाइल और सोशल मीडिया का अत्यधिक प्रयोग उनके बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए घातक है। उन्हें यह बात समझाने का न तो किसी में धैर्य है, न उत्साह और न इच्छा।**

चीन में 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए बहुत कड़े नियम लागू हैं। वहां टिकटॉक के चीनी संस्करण के नियमित उपयोग की दैनिक सीमा केवल 45 मिनिट है और रात 10 से सुबह 6 बजे तक इसका उपयोग किया ही नहीं जा सकता है। युनाइटेड किंगडम का 2023 का ऑनलाइन सेफ्टी एक्ट सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर कड़े प्रतिबंध लागू करता है। इसमें उपयोग कर्ता की उम्र का सत्यापन भी शामिल है। दक्षिणी कोरिया में काफी पहले, सन 2011 में ही शटडाउन कानून लागू कर दिया गया था जिसमें 16 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को रात 10.30 बजे से सुबह 6 बजे तक ऑनलाइन गेमिंग का प्रयोग करने से रोका गया था। यह बात अलग है कि वहां बाद में यह प्रतिबंध हटा लिया गया। संयुक्त राज्य अमरीका में चिल्ड्रन्स ऑनलाइन प्राइवेसी प्रोटेक्शन एक्ट के अन्तर्गत 13 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की निजी जानकारी एकत्रित करना वर्जित है। और यूरोपीय संघ, फ्रांस और स्पेन जैसे देश 15 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के सोशल मीडिया प्रयोग के लिए मां–बाप की सहमति अनिवार्य करने पर गंभीरता से विचार कर रहे हैं।

अब ज़रा एक नज़र अपने देश की स्थिति पर भी डाल लें। अप्रैल 2024 में हमारे सर्वोच्च न्यायालय में एक याचिका दायर हुई थी जिसमें 13 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के सोशल मीडिया उपयोग को प्रतिबंधित करने की मांग की गई थी। सर्वोच्च न्यायालय ने संसद का विचारणीय विषय बताते हुए इस याचिका को खारिज़ कर दिया। असल में अभी भारत में बच्चों के सोशल मीडिया उपभोग को प्रतिबंधित करने पर कोई गंभीर विचार नहीं हो रहा है। इसकी बजाय हम सामाजिक सहमति, अभिभावकों के विवेक और डेटा सुरक्षा पर भरोसा कर रहे हैं।

सोशल मीडिया और स्क्रीन के प्रयोग, प्रयोग के सीमा उल्लंघन और प्रयोग के ख़तरों से हम सभी वाक़िफ़ हैं। बच्चों के हाथ में जब स्क्रीन होता है तो वे उस पर किस तरह का कंटेंट देखते हैं, इस बात पर बड़ों का बहुत कम नियंत्रण संभव होता है। भारत जैसे देश में जहां मां–बाप अपनी रोज़ी–रोटी की समस्याओं में बहुत बुरी तरह उलझे होते हैं, उनसे यह उम्मीद करना कि वे यह देखेंगे कि बच्चे मोबाइल या कंप्यूटर का उपयोग किस काम के लिए कर रहे हैं, उनके प्रति ज़्यादती ही होगा। स्कूलों की जो हालत है,ख़ास तौर पर सरकारीस्कूलों की, वहां काम के बोझ से दबे (और कभी–कभी काम से बचने वाले भी) अध्यापकों से कोई उम्मीद की ही नहीं जा सकती। यह भी सही है कि आज मोबाइल हम सबके लिए इतना अपरिहार्य हो गया है कि उससे बच्चों को वंचित रखना व्यावहारिक नहीं रह गया है। मोबाइल तो उन्हें देना ही पड़ेगा। और जब आप उन्हें यह उपकरण सौंप देंगे तो फिर वे उसका कैसा उपयोग करेंगे, यह तय करना आपके लिए बहुत कठिन है।

और बात केवल बच्चों ही नहीं है। यह भी देखा जाए कि बड़े भी मोबाइल के किस तरह एडिक्ट हो चुके हैं। इस बात की विस्तृत विवेचना अनावश्यक है। अब जो मां–बाप ख़ुद मोबाइल से चिपके हुए हैं वे अपने बच्चों को इसका प्रयोग करने से कैसे रोकेंगे? बहुत बार तो हम देखते हैं कि मां–बाप इस बात पर गर्व करते हैं कि उनका शिशु मोबाइल के बग़ैर खाना तक नहीं खाता है या उनका बारह वर्ष का बेटा किस फर्राटे से स्कूटर दौड़ाता है। यह बताते हुए उनके चेहरे पर अपराध बोध नहीं गर्व झलकता है। बहुत सारे शिक्षक बताते हैं कि अगर वे बच्चों को फास्ट फूड का प्रयोग करने से रोकते हैं तो उनके मां बाप लड़ने के लिए आ जाते हैं।

ऐसे में भारत जैसे देश की स्थितियां अन्य देशों से बहुत अलग है। हमारे यहां अगर कानून बन भी जाएगा तो यह निश्चित मानिए कि उसके पालन से ज़्यादा उसका उल्लंघन होगा, और अंततः वह कानून मज़ाक बन कर रह जाएगा। अधिकांश मां–बाप में इस समझ का अभाव है कि मोबाइल और सोशल मीडिया का अत्यधिक प्रयोग उनके बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए घातक है। उन्हें यह बात समझाने का न तो किसी में धैर्य है, न उत्साह और न इच्छा। ऐसे में जो समझदार लोग हैं वे दुखी होते रहेंगे, और उनके बच्चे यह देखकर अपने मां–बाप पर कुढ़ते रहेंगे कि उनके अन्य दोस्तों के मां–बाप जिस काम के लिए अपने बच्चों को बिल्कुल भी नहीं रोक रहे हैं, उसी काम के लिए उनके मां–बाप उनसे रोज़ किच–किच क्यों करते हैं! ऐसे में बस यही संभावना बची रहती है कि जो मां–बाप इस बात को समझते हैं वे अपने बच्चों के सोशल मीडिया और स्क्रीन प्रयोग पर निगाह रखें और प्रयास करें कि बच्चे इनका सीमित प्रयोग करें।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

छात्रसंघों के चुनाव : छात्रों ने बजाया आंदोलन का बिगुल

बालमुकुंद ओझा

राजस्थान के विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में बीते 2022 के बाद से छात्र संघ चुनाव नहीं हुए है। छात्रों के साथ ही छात्र संगठन लगातार चुनाव की मांग करते आ रहे हैं। गहलोत सरकार ने 2023 में विधानसभा चुनाव के चलते चुनाव स्थगित किये थे। इसके बाद आई भाजपा सरकार ने भी चुनाव कराने की कोई घोषना नहीं की है। दिल्ली विश्व विधालय छात्र संघ के चुनावों के बाद राजस्थान में भी छात्र संघों के चुनावों की मांग जोर शोर से उठ रही है। राजस्थान में छात्रसंघ चुनावों को लेकर अनिश्चितता बनी हुई है। वहीं छात्र संघों के चुनाव कराने को लेकर छात्र नेताओं ने आंदोलन का बिगुल बजा दिया है। छात्रों ने सरकार द्वारा छात्र संघों के चुनाव नहीं कराने के फैसले के विरोध में उठा आंदोलन शुरू किया है। इसको लेकर छात्र संघों व छात्र नेताओं का गुस्सा लगातार उबाल मार रहा है। छात्र राजनीति पूरी तरह ठप पड़ी है।छात्र नेताओं का कहना है लोकतंत्र का पहला दरवाजा छात्र संघ होता है। छात्र संघ से युवा निष्पक्ष चुनाव, मतदान व प्रचार का ककहरा सीखते हैं। निर्वाचित छात्रसंघ न होने से छात्रों की समस्याएं अनसुनी रह जा रही हैं और प्रतिनिधित्व का अभाव गहरी निराशा पैदा कर रहा है। छात्र संगठनों व छात्र नेताओं का आरोप है कि राज्य सरकार जान–बूझ कर चुनाव की प्रक्रिया को टालता आ रहा है। राजस्थान विश्व विधालय छात्र संघ देशभर में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है।

यहां के छात्र नेता सिर्फ यूनिवर्सिटी अथवा कॉलेज तक सीमित नहीं रहते, बल्कि आगे चलकर देश और प्रदेश की राजनीति में अपनी अमिट छाप छोड़ते हैं। जो इस सीढ़ी को चढ़ गया वह राजनीति के ऊंचे मुकाम तक पहुंच जाता है। छात्र संघ के कई नेता बाद में राजनीति के दिग्गज चेहरे भी बने हैं। प्रदेश में कई साल से छात्र संघ चुनाव नहीं हो रहे हैं, लेकिन आज भी प्रदेश की सियासत में छात्र राजनीति से निकले नेताओं का बोल बाला है। छात्र संघ चुनाव में राजनीति का पहला ककहरा सीखा जाता है। केंद्रीय मंत्री, मुख्यमंत्री, मंत्री और विधायक तक हर स्तर पर प्रभावशाली नेता दिए हैं। छात्र संघ की जड़ें गहराई तक फैली हुई हैं, जो न केवल छात्रों की समस्याओं के समाधान का मंच रहा है, बल्कि प्रदेश की सियासत को भी दिशा देने वाला स्तंभ साबित हुआ है। समय की माँग है कि छात्र संघ को फिर से जीवित किया जाए।

पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार ने विधानसभा चुनावों के मधे नज़र राज्य के विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में होने वाले छात्रसंघ चुनावों पर रोक लगा दी थी। अब कांग्रेस के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत छात्र संघ चुनाव कराने की मांग कर रहे है। गहलोत ने ही अपने कार्यकाल में चुनावों पर रोक लगाई थी जो भाजपा सरकार के दौरान भी बदसतूर जारी है। राज्य की राजनीति में आज भी कई ऐसे नेता उच्च पदों पर आसीन हैं, जिन्होंने छात्र राजनीति से अपना सियासी सफर शुरू किया है। आज देश की लगभग 60 प्रतिशत आबादी युवा है। जो अपने मताधिकार का उपयोग कर देश तथा प्रदेश की सरकारें बनाती हैं। इतनी बड़ी आबादी का वोट सरकारें तय करती है। दूसरी तरफ छात्र संघों के चुनाव प्रदेशभर में प्रतिबंधित हैं। यह विचारणीय है।

एक छात्र नेता ने यूनिवर्सिटी की राजनीति से निकले राजस्थान के प्रसिद्द नेताओं के कटआउट लगाकर अनोखे अंदाज में प्रदर्शन किया और छात्र संघ चुनाव की मांग की। राजस्थान विश्वविद्यालय में लगाए कटआउट के जरिये बताया गया कि अनेक नेता और मंत्री छात्र संघों के जरिये सियासत में अपनी मज़बूत स्थिति संभाले हुए है। छात्र संघ चुनाव की बदौलत ही आज देश और प्रदेश को ऐसे संघर्षशील नेता मिलें है जो हर परिस्थिति मैं पीड़ितों ओर शोषितों की आवाज मजबूती से उठाते है। छात्र नेताओं का कहना है कि छात्रसंघ चुनाव राजनीति की पहली सीढ़ी है और इस पर रोक नहीं लगनी चाहिए। प्रदर्शन में छात्र राजनीति से निकल मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री, मंत्री, सांसद और विधायक बनने वाले अशोक गहलोत, डॉक्टर सीपी जोशी, कालीचरण सर्राफ, हनुमान बेनीवाल, रघु शर्मा, सतीश पूनिया, प्रताप सिंह खाचरियावास, विकास चौधरी, महेंद्र चौधरी, रविंद्र सिंह भाटी, मनीष यादव, गजेंद्र सिंह शेखावत, राजेंद्र राठौड़, अशोक लाहोटी, हरीश चौधरी, राजपाल सिंह शेखावत, रामलाल शर्मा,मुकेश भाकर, रामनिवास गवाड़िया, अभिमन्यु पूनिया और राजकुमार शर्मा के कट–आउट लगाए थे।

सरकार ने लिंगदोह समिति की शर्तों की पालना नहीं होना भी चुनाव नहीं कराने का एक कारण बताया है। देखा जाता है छात्र संघ चुनावों में लिंगदोह समिति की अचार संहिता की सरेआम धज्जियां उड़ाई जाती है। चुनाव एक मखौल बनकर रह जाता है। जाति और धनबल का खुला प्रदर्शन देखने को मिलता है। हिंसात्मक घटनाएं आम हो गई है। लिंगदोह समिति ने देश के विश्वविद्यालयों में होने वाले छात्रसंघ चुनावों के लिए कुछ सिफारिशें जारी की थीं, जिनका उद्देश्य बाहुबल और धनबल के प्रभाव को रोकना और चुनाव प्रक्रिया को सुचारु रूप से चलाना था। सिफारिशों के अनुसार, कोई छात्र केवल एक बार चुनाव लड़ सकेगा, और चुनाव में अधिकतम 5,000 रुपये खर्च किए जा सकेंगे। उम्मीदवार और उनके संगठन पर चुनावी चंदा लेने पर प्रतिबंध रहेगा। चुनाव में सार्वजनिक स्थानों पर पोस्टर, विज्ञापन और बैनर पर पूरी तरह प्रतिबंध होगा कॉलेज परिसर में किसी प्रकार के हथियार लाने पर भी प्रतिबंध रहेगा। नियमों का उल्लंघन करने पर उम्मीदवार पर दो साल का प्रतिबंध लगाया जाएगा, और उस साल की परीक्षा में भी वह वंचित हो जाएगा। वास्तविकता में लिंगदोह समिति की सिफारिशें कागजों में दबकर रह गई है।

–बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

ब्लैक बोर्ड से स्मार्ट बोर्ड का सफर – राजकीय विद्यालयों में स्मार्ट शिक्षा की ओर बढ़ते कदम

डॉ. अमृता कटारा

जयपुर। राजस्थान के राजकीय विद्यालय अब परंपरागत शिक्षण विधियों से आगे बढ़कर डिजिटल युग में प्रवेश कर चुके हैं। ब्लैकबोर्ड और किताबों की सीमाओं को पीछे छोड़ते हुए अब कक्षाएं स्मार्ट स्क्रीन, प्रोजेक्टर और डिजिटल कंटेंट से सजी हैं। राज्य सरकार की सूचना एवं संचार तकनीक योजना के तहत वर्ष 2024 तक 13,976 सरकारी विद्यालयों में आईसीटी लैब्स की स्थापना की जा चुकी है। इनमें से 13,411 लैब माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर पर कार्यरत हैं जबकि 565 आदर्श विद्यालयों को भी इस नेटवर्क से जोड़ा गया है। प्रदेश के 13 हजार से अधिक विद्यालयों में 17,421 स्मार्ट क्लासों की स्थापना भी की गयी है।

इन लैब्स के माध्यम से विद्यार्थी अब बेसिक कंप्यूटर ज्ञान के साथ ई–मेल, एमएस वर्ड, एमएस एक्सेल, एमएस पावर पॉइंट आदि सॉफ्टवेयर पर कार्य करना, इंटरनेट सर्चिंग, विषय आधारित वीडियो लेक्चर देखना और इंटरएक्टिव डिजिटल कंटेंट से परिचय भी सीख रहे हैं। इससे खासतौर पर ग्रामीण व दूरस्थ अंचलों के विद्यार्थी तकनीकी साक्षरता की ओर अग्रसर हो रहे हैं और राष्ट्रीय व वैश्विक स्तर की शिक्षा से जुड़ने का अवसर प्राप्त कर रहे हैं।

शिक्षक- विद्यार्थी दोनों हो रहे डिजिटल रूप से दक्ष- ये प्रयोगशालाएं केवल उपकरणों का जमावड़ा भर नहीं हैं बल्कि यह एक सशक्त डिजिटल कक्षा के रूप में विकसित की गई हैं, जहां विद्यार्थियों में तकनीकी दक्षता के साथ–साथ आत्मविश्वास, संवाद कौशल और निर्णय लेने की क्षमता जैसे जीवनोपयोगी गुणों का भी विकास हो रहा है। प्रत्येक लैब में कंप्यूटर, प्रिंटर, यूपीएस, आवश्यक शैक्षिक सॉफ्टवेयर और इंटरनेट कनेक्टिविटी की व्यवस्था की गई है। साथ ही फर्नीचर, पावर बैकअप और सुरक्षा के मानकों का भी ध्यान रखा गया है ताकि तकनीकी शिक्षण में किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो।

राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक विद्यालय में एक प्रशिक्षित आईसीटी प्रभारी शिक्षक की नियुक्ति की गई है जो न केवल लैब का संचालन करते हैं बल्कि विद्यार्थियों को तकनीकी शिक्षण में मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं। यह शिक्षक समय–समय पर विद्यालय के अन्य स्टाफ व प्रशासन को भी डिजिटल उपकरणों के प्रभावी उपयोग हेतु प्रशिक्षित कर रहे हैं जिससे विद्यालय समग्र रूप से डिजिटल रूपांतरण की दिशा में अग्रसर हो रहा है।

तकनीक बनी सीखने का माध्यम- आज के विद्यार्थी केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं हैं। वे इंटरनेट के माध्यम से विषयवस्तु की खोज करने, डिजिटल नोट्स तैयार करने, वर्चुअल क्विज़ में भाग लेने और ऑनलाइन कक्षाओं का हिस्सा बनने में पूरी तरह सक्षम हो रहे हैं। आईसीटी लैब्स एवं स्मार्ट क्लास ने विद्यार्थियों के भीतर आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दिया है। अब विद्यार्थी कंप्यूटर को केवल गेमिंग या मनोरंजन का माध्यम नहीं बल्कि अपने भविष्य निर्माण का एक शक्तिशाली औजार समझने लगे हैं। राज्य के शिक्षा अधिकारियों द्वारा विभिन्न विषयों पर ई–क्लास वीडियो, एनिमेटेड प्रजेंटेशन और पावरपॉइंट लेक्चर जैसे डिजिटल कंटेंट समय–समय पर तैयार किए जा रहे हैं। ये सामग्री आईसीटी लैब्स के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुंचाई जाती है। इससे न केवल विद्यार्थियों की समझ में सुधार हुआ है बल्कि विज़ुअल लर्निंग के कारण उनकी याददाश्त और विषय पर पकड़ भी पहले से बेहतर हो रही है। यह दृष्टिकोण परंपरागत शिक्षा प्रणाली से हटकर एक सहभागी और बहुआयामी शिक्षण वातावरण की ओर बढ़ता कदम है।

मॉडल राज्य के रूप में स्थापित होगा राजस्थान - शिक्षा विभाग के प्रयास और सूचना एवं संचार तकनीक के माध्यम से राज्य के राजकीय विद्यालय अब डिजिटल इंडिया की रफ्तार से कदमताल कर रहे हैं। आईसीटी लैब्स और स्मार्ट क्लास न केवल विद्यार्थियों को तकनीकी रूप से सशक्त बना रही हैं बल्कि उन्हें वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार कर रही हैं। यह पहल राजस्थान को न केवल डिजिटल शिक्षा में आत्मनिर्भर बनाएगी बल्कि पूरे देश के लिए एक मॉडल राज्य के रूप में स्थापित करेगी।

–डॉ. अमृता कटारा,
सहायक सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग

मीरा महोत्सव में उप मुख्यमंत्री दीया कुमारी ने मीरा बाई के दर्शन किये

मेड़ता सिटी, (निसं)। विश्व ऐतिहासिक चारभुजानाथ के 521वें मीरा जयंती महोत्सव में उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी ने शिरकत की।

महोत्सव में उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी ने चारभुजानाथ व रजत रेवाड़ी के दर्शन कर महिलाओं के साथ भजनों का लाभ उठाया व महोत्सव में मीरा स्मारक के कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में मौजूद रही। वहीं महिला बाल विकास मंत्री मंजू बाघमार, किसान आयोग अध्यक्ष सीआर चौधरी, मेड़ता विधायक लक्ष्मणराम कलरू, खींवसर विधायक रेवतराम डांगा, जनता प्रधान संदीप चौधरी, मेड़ता नगरपालिका अध्यक्ष शोभा लाहोटी, किन्नर समाज गादीपति राजकुमारी बाई कार्यक्रम में अतिथि के रूप में मौजूद रहे। इस अवसर पर मीरा जयंती महोत्सव समिति के अध्यक्ष व पूरी टीम के द्वारा उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी को स्मृति चिन्ह देकर अभिनंदन किया गया। मीरा महोत्सव में उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी ने मीरा बाई के दर्शन किये।

इस मौके पर दीया कुमारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि मेड़ता मीरा की नगरी है, यहां आने का मौका इस महोत्सव में ही मिलता है। दीया कुमारी ने कहा कि मेड़ता में जो भी विकास कार्य होंगे वो गुणवत्ता के साथ होंगे। मेड़ता में एक पैरोनमा जल्द ही बनने जा रहा है, उसकी डीपीआर तैयार हो रही है। भारत सरकार व राजस्थान सरकार पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए भी कार्य कर रहे हैं। वहीं जहां पर कोई भगवान या भक्त सहित कई लोगों के सर्किल उनके नाम से निर्माण कराने का प्रस्ताव जन प्रतिनिधियों द्वारा आयेगा उस पर कार्य किए जाएंगे।

महिला बाल विकास मंत्री मंजू बाघमार ने कहा मेड़ता भक्ति भाव की नगरी है। यहां के नागरिक प्रेम भाव से भरे हुये हैं। मेड़ता विधायक लक्ष्मणराम कलरू ने कहा कि उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी द्वारा मीरा महोत्सव को सरकारी कैलेंडर में स्थान दिलाने पर पूरा मेड़ता इनका आभारी है। मेड़ता से इनका सम्बन्ध पुराना है।

मीरा महोत्सव में उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी ने महिलाओं के साथ भजनों का आनंद लिया।

- ‘मेड़ता में एक पैरोनमा जल्द ही बनने जा रहा है, उसकी डीपीआर तैयार हो रही है’
- दीया कुमारी ने चारभुजानाथ व रजत रेवाड़ी के दर्शन कर महिलाओं के साथ भजनों का लाभ उठाया

इसलिए मेड़ता क्षेत्र में विकास की गंगा बही है और गुणवत्ता के साथ सड़कों का निर्माण करवाया है। इस मौके पर उपखंड अधिकारी पूनम चोयल, जितेंद्र गहलोत मीरा महोत्सव समिति अध्यक्ष, सचिव रविप्रकाश कमेडिया, विरमदेव सिंह जैसास, अभय सिंह भेसड़ा, ऋषभ राठी, लोक अभियोजक अभिमन्यु शर्मा, उमा शर्मा रजत, दशरथ सारस्वत, कैलाश गौड, मोहित माली, रवि गहलोत सहित कई लोग मौजूद थे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 4 अगस्त, 2025

सावन मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, अनुराधा नक्षत्र प्रातः 9:13 तक, ब्रह्म योग प्रातः 7:05 तक, गर करण दिन 11:42 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–कर्क, चन्द्रमा–वृश्चिक, मंगल–कन्या, बुध–कर्क, गुरू–मिथुन, शुक्र–मिथुन, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से प्रातः 9:13 तक है। रवियोग सम्पूर्ण दिन–रात रहेगा। भद्रा रात्रि 12:47 से आरम्भ होगी। आज चतुर्थ सावन वन सोमवार व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:36 तक, शुभ 9:15 से 10:54 तक, चर 2:12 से 3:51 तक, लाभ–अमृत 3:51 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:56, सूर्यास्त 7:09

मेष
पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य परेशानी हो सकती है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मिथुन
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कर्क
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

सिंह
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में आपसी अनबन–मतभेद हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है।

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित परेशानियां दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेंगी।

'प्रधानमंत्री का अभियान हरियाली बढ़ाने के साथ प्रकृति से जुड़ने के अवसर प्रदान करता है'

कांग्रेस का सारा शासन झूठ की बुनियाद पर, भाजपा राजनीति से लोगों के जीवन में ला रही है सकारात्मक परिवर्तन : भूपेंद्र यादव

■ भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड ने कहा,'एक पेड़ मां के नाम' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किया, एक ऐतिहासिक एवं भावनात्मक अभियान है, यह हमें न केवल हमारी मातृभूमि एवं मातृशक्ति के प्रति श्रद्धा प्रकट करने का अवसर देता है

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ और मंत्री भूपेंद्र यादव ने अलवर के थानागाजी स्थित उदयनाथ धाम में पौधारोपन किया ।

जयपुर/अलवर । भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ और केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने रविवार को अलवर के थानागाजी स्थित उदयनाथ धाम में वन विहार एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर दोनों नेताओं ने एक पेड़ मां के नाम और हरियालो राजस्थान अभियान के अंतर्गत पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपना संकल्प व्यक्त किया।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड ने कहा,'एक पेड़ मां के नाम' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किया गया एक ऐतिहासिक एवं भावनात्मक अभियान है, यह हमें न केवल हमारी मातृभूमि एवं मातृशक्ति के प्रति श्रद्धा प्रकट करने का अवसर देता है, बल्कि हरियाली बढ़ाने और पर्यावरण संरक्षण में भी सहायक है। उन्होंने कहा कि संगठन को मजबूत करने का काम केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव के द्वारा किया जा रहा है, राजस्थान में 2003 में भाजपा की सरकार को बनाने में भी भूपेंद्र यादव की अहम भूमिका रही थी। भूपेंद्र यादव जी के अपने क्षेत्र में इतने प्रवास होते है कि हर व्यक्ति के मुंह से इनका नाम सुनने को मिल रहा है। राजस्थान में जितने भी सांसद हैं जितने भी विधायक हैं भूपेंद्र यादव जी की तरह सब अपने-अपने क्षेत्र को संभालते रहे तो राजस्थान से भारतीय जनता पार्टी को कोई हटाने वाला नहीं है।

केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने एक पेड़ माँ के नाम अभियान के अंतर्गत पौधरोपण करने की अपील करते हुए कहा कि आप सब पेड़ लगाएं और बरगद के पेड़ की तरह समाज सेवा में समर्पित रहें। उन्होंने कहा कि इमरजेंसी के दौर में जनसंघ के कार्यकर्ताओं के साथ बहुत अन्याय किए गए, अनेक यातनाएं दी गई और लालच देकर उन्हें अपने साथ विलय करने की कोशिश की गई। इतनी यातनाओं और वेदनाओं को सहकर भी लोगों ने राष्ट्रीय राजनीतिक विचार को आगे बढ़ाने के संकल्प को नहीं छोड़ा यह भारतीय जनता पार्टी की विचार यात्रा थी।

केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने कहा कि इमरजेंसी के दौरान इंदिरा गांधी के द्वारा यातनाएं देखकर जनसंघ को समाप्त करने की कोशिश की गई,लेकिन अटल बिहारी वाजपेई के नेतृत्व में अप्रैल 1980 में भारतीय जनता पार्टी का जन्म मुंबई में हुआ। अटल जी की वह पंक्तियां हमारे मन में हमेशा रहती है कि अंधेरा छटेगा, सूरज उगेगा और कमल खिलेगा। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अपना बलिदान कश्मीर में भारत की एकता के लिए दिया। भाजपा ने कश्मीर से धारा 370 समाप्त करके देश को एक करने का काम किया। कांग्रेस ने सारा शासन झूठ की बुनियाद पर किया लेकिन भारतीय जनता पार्टी की राजनीति लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए है, अंतिम छोर तक खड़े हुए व्यक्ति को शासन की सारी सुविधाएं पहुंचाने के लिए है।

कार्यक्रम में संभाग प्रभारी नारायण पंचारिया, बहरोड़ विधायक जसवंत यादव, बानसूर विधायक देवी सिंह शेखावत, रामगढ़ विधायक सुखवंत सिंह, कठूमर विधायक रमेश खींची सहित पार्टी के पदाधिकारी, मंडल अध्यक्ष, कार्यकारिणी सदस्य एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

कानोता बांध में युवक की डूबने से मौत

जयपुर। जामडोली थाना इलाके में स्थित कानोता बांध में रविवार सुबह एक युवक की डूबने से मौत हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस और सिविल डिफेंस टीम की मौके पर पहुंची और शव को बाहर निकाला। पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए शव को सवाई मानसिंह अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया है। पुलिस जांच में सामने आया है कि पारिवारिक कलह के चलते युवक ने कानोता बांध में कूद कर आत्महत्या की है। वहीं परिजनों का कहना है कि मृतक नहाने के लिए बांध गया था और पैर फिसलने से डूब गया। फिलहाल पुलिस इस मामले की जांच पड़ताल में जुटी है।

हेड कांस्टेबल रामसहाय ने बताया कि जामडोली के केशव विद्यापीठ चौराहे के पास रहने वाले 27 वर्षीय त्रिलोक ने कानोता बांध में कूद कर आत्महत्या की है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं पाथेय कण पत्रिका के संरक्षक माणकचंद 'भाईजी' के निधन के उपरांत रविवार को अम्बाबाड़ी स्थित आदर्श विद्यामंदिर में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सिक्किम के राज्यपाल ओम माथुर, राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी, हरियाणा प्रभारी सतीश पूनियां समेत बड़ी संख्या में स्वयंसेवकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और प्रबुद्ध नागरिकों ने उपस्थित होकर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए।

पूर्वी राजस्थान क्षत्रिय समागम में हजारों राजपूतों ने भरी हुँकार

■ ईडब्ल्यूएस आरक्षण 20 प्रतिशत तक बढ़े, पंचायत राज चुनाव में ईडब्ल्यूएस आरक्षण लागू हो , केंद्र में ईडब्ल्यूएस आरक्षण सरलीकरण के साथ लागू हो

जयपुर। राजधानी में आज पूर्वी राजस्थान क्षित्रय समाज समागम ऐतिहासिक उत्साह, गरिमा और सामाजिक चेतना के साथ सम्पन्न हुआ। पहली बार जयपुर में पूर्वी राजस्थान के विभिन्न जिलों - भरतपुर, धौलपुर, करौली, दौसा, अलवर, सवाई माधोपुर, बहरोड़, डीग, खेरथल-तिजारा - से समाज के सैकड़ों प्रतिनिधियों, वरिष्ठजनों और युवाओं ने एक जाजम पर एकत्र होकर सामाजिक समन्वय और अधिकारों के लिए एकजुटता दिखाई।

उन्होंने कहा कि पूरे समाज की माँग है कि आर्थिक पिछड़ो में शामिल जातीयों की जनसंख्या के आधार पर इसे बीस फ़ीसदी तक बढ़ाया जाय ।

पंचायत राज व्यवस्था में एसी/एसटी, ओबीसी की तर्ज पर प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए ईडब्ल्यूएस आरक्षण लागू करे। साथ ही केंद्र सरकार द्वारा दिए जा रहे ईडब्ल्यूएस आरक्षण को राजस्थान की तरह सरल और व्यावहारिक बनाया जाए।शक्ति सिंह बांदीकुई ने कहा कि पूर्वी राजस्थान की 35 विधानसभा सीटों में सिर्फ एक राजपूत विधायक , 5 लोकसभा सीट पर एक भी सांसद नहीं , राजनैतिक पार्टियो को हमारा प्रतिनिधित्व बढ़ाना होगा,यह हमारा अधिकार है । साथ ही यह भी स्पष्ट किया कि यदि इन आवश्यक सुधारों को लेकर सरकारें संवेदनशील नहीं हुई, तो पूर्वी राजस्थान का क्षित्रय समाज एकजुट होकर सशक्त आंदोलन के लिए भी तैयार है।कार्यक्रम में यूनाइटेड ग्लोबल पीस फाउंडेशन के चेयरमैन मेघराज सिंह रॉयल ने कहा कि अब आर्थिक कमजोरी प्रतिभावान बच्चो को उच्च शिक्षा में आगे बढ़ने से नहीं रोक सकती, यूजीपीएफ ने एक साल से कम समय में शिक्षा के लिए चार करोड़ से अधिक राशि छात्रवृति के रूप में प्रदान की हैइस समागम में सेवानिवृत वयोवृद्ध आई ए एस रामवीर सिंह भंवर, सीनियर सर्जन डॉ एस पी सिंह,पत्रकार भंवर पुष्पेंद्र ,पत्रकार शिवेंद्र सिंह परमार सहित अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाली विभूतियों को पूर्वी राजस्थान क्षित्रय समाज गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया।

दुष्कर्म की कोशिश करने वाला आरोपित गिरफ्तार

जयपुर। जयसिंहपुरा खोर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए नाबालिग लड़की से दुष्कर्म की कोशिश करने वाले आरोपित परिचित युवक को गिरफ्तार किया है। बताया जा रहा है कि वह उत्तर प्रदेश भागने की फिराक में घर से निकला था। पुलिस फिलहाल आरोपित से पूछताछ कर रही है।

जयसिंहपुरा खोर थाना पुलिस ने पॉक्सो एक्ट में आरोपित हासिम खान निवासी सराय जिला फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) गिरफ्तार को किया है। 29 जुलाई को जयसिंहपुरा खोर के रहने वाले व्यक्ति ने मामला दर्ज करवाया था कि उसकी नाबालिग बेटी के साथ परिचित युवक ने डरा-धमकाकर दुष्कर्म का प्रयास किया। किसी को बताने पर मारने की धमकी भी दी। डरी-सहमी नाबालिग बेटी ने परिजनों को आपबीती सुनाई। परिजनों को पता चलने आरोपित फरार हो गया। पुलिस ने आरोपित का पीछा कर उसे ट्रांसपोर्ट नगर बस स्टेंड से धर-दबोचा।

संकट के समय में सही निर्णय लेना अहिंसा को प्रभावित करता है : के के गुप्ता

■ जयपुर अहिंसा फेस्टिवल 2025 का आयोजन, वृक्षारोपण करने और स्वच्छता को जीवन में उतारने का किया आव्हान

जयपुर। दिगंबर जैन मंदिर ट्रस्ट और इंद्र प्रभा चैरिटेबल ट्रस्ट जयपुर के सहयोग से रविवार को जयपुर अहिंसा फेस्टिवल 2025 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि और प्रमुख वक्ता स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के कोऑर्डिनेटर तथा नगर परिषद डूंगरपुर के पूर्व सभापति के के गुप्ता रहे। आयोजन समिति द्वारा गुप्ता का स्वागत अभिनंदन किया गया।

भगवान महावीर स्वामी और भारत माता के जयकारो के साथ अपना ओजस्वी उद्बोधन देते हुए गुप्ता ने कहा कि हमारा देश एक विकसित और विश्व गुरु देश तब बन सकता है जब देश का प्रत्येक नागरिक स्वच्छता सहित पर्यावरण और जल संरक्षण को अपने जीवन में एक नैतिक कर्तव्य के रूप में अपनाए। आज हम देख रहे हैं कि वृक्षारोपण कम होने के कारण ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रहा है तथा हमारा देश के लोगों की जीवन प्रत्याशा दर भी अन्य देशों के मुकाबले कम हो रही है, देश में 66 वर्ष की औसत आयु हो रही है जबकि विदेशों में यह औसत आयु 88 वर्ष है। भारत देश के लोग जल्दी मर रहे हैं इसका भी एक प्रमुख कारण पर्यावरण का शुद्ध नहीं होना है। उन्होंने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी जी ने भी देश से अपील की है कि एक पेड़ अपनी मां के नाम अभियान में आगे बढ़कर साथ दे और इस वर्ष काल में देशभर में करोड़ों की संख्या में वृक्षारोपण किया जाना चाहिए और सिर्फ फोटोग्राफी अथवा भाषण तक वृक्षारोपण कार्यक्रम को सीमित नहीं रख बल्कि सही ईमानदारी के साथ तथा लगभग 8 से 12 फीट ऊंचाई के वृक्ष लगाने होंगे इसके साथ ही वृक्ष की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी लेनी चाहिए। गुप्ता ने यह भी कहा कि हमें एक पेड़ स्वयं के नाम से भी आवश्यक रूप से लगाना चाहिए क्योंकि जब हमारा अंतिम समय आएगा और शमशान घाट में अंतिम संस्कार के समय लगभग एक पूरे वृक्ष के बराबर लकड़ी की आवश्यकता रहती है। इसलिए एक मनुष्य अपने जीवन काल में कम से कम एक पेड़ तो अवश्य ही लगे जो अपने अंतिम संस्कार विधि में काम आएगा। उन्होंने संदेश दिया कि गौ माता को राष्ट्रीय पशु घोषित करने के लिए जो मुहिम चलाई जा रही है इसमें राजस्थान के लोग भी अपनी भागीदारी निभाएं। हमारे वेद पुराण में लिखे गए वाक्य अनुसार पहली रोटी गाय के नाम निकाले और गौ माता की सेवा करें लेकिन यह भी ध्यान रखा जाए कि आज के समय में गौ माता सड़कों पर बेसहारा घूम रही है ऐसा नहीं होना चाहिए और हमें प्लास्टिक उपयोग भी बंद करना होगा ताकि गौ माता प्लास्टिक खाकर और असमय ही काल का ग्रास नहीं बने और हम भी पाप के भाग नहीं बने। इसके साथ ही वैज्ञानिक को द्वारा भी यह सिद्ध किया गया है कि गौ माता जो प्लास्टिक का सेवन करती है तथा उसके दूध का यदि हम सेवन करते हैं तो हमें कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी का भी खतरा उत्पन्न हो सकता है।

गुप्ता ने कहा कि संकट के समय में संयम के सही निर्णय लेना अहिंसा को प्रभावित करता है और समस्या का निस्तारण करने की सोच हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी में है और इसी दूरदर्शी सोच के साथ मोदी जी ने हाल ही में किए गए ऑपरेशन सिंदूर में पड़ोसी दुश्मन देश पाकिस्तान और उसका साथ देने वाले अन्य देशों को भी यह कड़ा संदेश दिया है कि यह नया भारत है जो झुकना नहीं जानता है।

विप्र फाउंडेशन ने किया चतुर्वेदी का अभिनंदन

विप्र फाउंडेशन ने डॉ अरुण चतुर्वेदी को श्री परशुराम जी की मूर्ति भेट कर अभिनंदन किया।

जयपुर। विप्र फाउंडेशन राजस्थान जोन-1 की ओर से राजस्थान वित्त आयोग के नवनियुक्त अध्यक्ष डॉ अरुण चतुर्वेदी का अभिनंदन किया गया।विप्र फाउंडेशन की ओर से डॉ अरुण चतुर्वेदी को श्री परशुराम जी की मूर्ति भेट कर उनकी राजनीतिक यात्रा और सेवा मार्ग पर निरंतर अग्रसर होती रहे, इसकी कामना की गई।

स्वागत में विप्र फाउंडेशन प्रदेश अध्यक्ष राजेश कर्नल एडवोकेट, राष्ट्रीय सचिव नरेंद्र हर्ष, प्रदेश संगठन महामंत्री सतीश शर्मा, प्रदेश कोषाध्यक्ष धर्मेंद्र शर्मा, युवा प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष मुकेश शर्मा काका, प्रदेश सचिव हितेश शर्मा, दीपेश शर्मा ,एडवोकेट विजय भारद्वाज,जयपुर जिला मंत्री सुनील शर्मा,प्रदीप शर्मा,दिलीप भारद्वाज आदि उपस्थित थे।

बिटकॉइन में निवेश में लाखों रुपए गवाने से आहत होकर युवक ने खुद को आग लगाई

जयपुर। भांकरोटा थाना इलाके में बिटकॉइन में निवेश का झांसे में आकर लाखों रुपए गवाने से आहत होकर युवक ने खुद को आग के हवाले कर अपार्टमेंट की 9वीं मंजिल से छलांग लगाकर आत्महत्या कर ली। युवक ने आत्महत्या से पहले सुसाइड नोट में अपने परिजनों से माफी मांगी। हादसे के बाद इलाके में सनसनी फैल गई। सूचना पर मौके पहुंची ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के सवाई मानसिंह अस्पताल के मुर्दाघर में भिजवाया।

थानाधिकारी मनीष गुप्ता ने बताया कि हैगिंग गार्डन निवासी आदित्य शर्मा (24) ने अपने परिवार सहित रहता था और बगरु स्थित ग्रेनाइट कंपनी में नौकरी करता था। शनिवार रात आदित्य नौकरी से घर लौटा था उसी समय छोटा भाई मोहित किसी काम से बाहर चला गया। पिता नरेंद्र और आदित्य ही घर पर थे। आदित्य देर रात अपार्टमेंट से नीचे उतरा और बाइक से बोतल में पेट्रोल निकाला और अपार्टमेंट की 9वीं मंजिल पर चला गया। जहां पर उसने खुद पर पेट्रोल डालकर आग लगा ली और 9वीं मंजिल से छलांग लगा दी। स्थानीय लोगों की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने ही मृतक के पिता नरेंद्र को मामले की जानकारी दी।आग की लपटों में घिरे युवक की आत्महत्या की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शिनाख्तगी के प्रयास किए। आसपास पूछताछ करने पर पता चला की आदित्य की मां रीना गोवर्धन पूजा करने के लिए गई हुई और पिता और छोटा बेटा मौजूद है।

जैसे ही पुलिस ने युवक की शिनाख्त कराई तो पिता नरेंद्र के पैरों तले जमीन निकल गई और पूरे अपार्टमेंट में कोहराम मच गया। पुलिस ने हादसे के बाद मृतक के मोबाइल फोन को खंगाला तो उसमें वाट्स एप पर सुसाइड नोट बरामद हुआ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN
RISING RAJASTHAN PARTNERSHIP CONCLAVE 11 & 12 DEC 2025 JAIPUR
IDEAS & IMPACT
प्रत्यक्ष आवंटन योजना - 2025
राइज़िंग राजस्थान में MoU करने वाले निवेशकों के लिए भूखण्ड के आरक्षित मूल्य पर
औद्योगिक भूखण्डों का डायरेक्ट अलॉटमेंट
चतुर्थ चरण
आवेदन एवं EMD की अन्तिम तिथि
07 अगस्त, 2025 (सायं 6 बजे तक)
विभिन्न श्रेणियों / वर्गों के लिए आरक्षित भूखण्ड
ई-लॉटरी
12 अगस्त, 2025
154 भूतपूर्व सैनिक
218 महिला वर्ग
126 बेंचमार्क दिव्यांगता
101 औद्योगिक क्षेत्र
7,123 कुल औद्योगिक भूखण्ड
248 अनुसूचित जाति/जनजाति
64 सशस्त्र बलों/अर्ध सैनिक बलों के मृतक के आश्रित
6,313 अनारक्षित भूखण्ड
42 नियोजित लॉजिस्टिक भूखण्ड
अन्तिम 4 दिन शेष
आवंटन की प्रक्रिया
एक भूखण्ड पर एक ही आवेदक होने पर सीधा आवंटन तथा एक से अधिक आवेदक होने पर ई-लॉटरी के माध्यम से आवंटन
EMD - भूखण्ड की कुल देय प्रीमियम राशि की 5 प्रतिशत राशि आवेदन के साथ ही ऑनलाइन जमा।
पात्रता - निवेशक जिन्होंने 09/07/2025 तक राइजिंग राजस्थान में राज्य सरकार के साथ एमओयू किये हैं वे सभी इस स्कीम में भूखण्ड के लिए पात्र हैं।
आवेदन हेतु स्कैन करें
भूखण्ड की राशि का भुगतान
*25% भुगतान के बाद, शेष 75% भुगतान 11 किश्तों में 8.5% ब्याज के साथ या 120 दिनों के भीतर ब्याज रहित भुगतान
या
RIICO की टर्म लोन स्कीम के तहत भूमि की लागत का 75% तक का ऋण 5 साल की पुनर्भुगतान अवधि एवं 8.5% ब्याज के साथ
औद्योगिक क्षेत्रों में नियोजित लॉजिस्टिक भूखण्डों के आवंटन से संबंधित पॉलिसी riico.rajasthan.gov.in पर देखें।
इस योजना के तहत भूखण्ड देखने या आवेदन करने के लिए https://riico.rajasthan.gov.in पर दिए गए Direct Land Allotment लिंक पर क्लिक करें अथवा SSO Portal पर login के बाद RIICO के आइकन पर क्लिक करके Land Allotment पर जाएं और Direct Land Allotment Policy - 2025 (for RR MoU Holders) पर क्लिक करें।
*केवल औद्योगिक भूखण्डों के लिए
राज.संवाद/सी/25/7387
राजस्थान स्टेट इंडस्ट्रियल डवलपमेंट एण्ड इन्वेस्टमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड
उद्योग भवन, तिलक मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर 302005
हैल्पलाइन नंबर : 0141 4593250, 4593237 | वाट्सएप : +91 90013 06515 | ई-मेल : riico@riico.co.in
riico.rajasthan.gov.in · riicogis.rajasthan.gov.in/riicogiscitizen

केनरा बैंक में चोरी का प्रयास करने वाले शटर तोड़ गैंग के दो बदमाश गिरफ्तार

■ पूछताछ में सामने आया है कि दिन के समय बाइक से टारगेट को चिह्नित करते थे

पुलिस ने बदमाश गिर्राज सैन और कुमेर सिंह करधनी को गिरफ्तार किया

जयपुर। झोटवाडा थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए में केनरा बैंक में चोरी के लिए घुसे मध्य प्रदेश की शटर तोड़ गैंग के दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है। पुलिस जांच में सामने आया कि बदमाशों ने दिन में टारगेट चुनकर रात को वारदात करते है। पुलिस पूछताछ में कई वारदातों का खुलासा होने की संभावना जताई है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (पश्चिम) हनुमान प्रसाद मीणा ने बताया कि झोटवाडा थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए में केनरा बैंक में चोरी के लिए घुसे मध्य प्रदेश की शटर तोड़ गैंग के बदमाश गिर्राज सैन (26) निवासी गुना मध्यप्रदेश,हाल झोटवाड़ा और कुमेर सिंह अहिरवाल (28) निवासी गुना मध्य प्रदेश, हाल रावणगेट करधनी को गिरफ्तार किया है। पुलिस जांच में सामने आया कि दोनो ही आरोपित मकान तोड़ने और झिरी खोदने का काम करते हैं। मकानों में काम के दौरान आस-पास के घर-दुकानों और बैंकों की रेकी करते है। उसके बाद साथियों से मिलकर वारदात को अंजाम देते।

पूछताछ में सामने आया है कि दिन के समय बाइक से टारगेट को चिह्नित करते थे। उसी के आस-पास किराए का कमरा लेकर या पार्क में बैठकर समय बिताते। रात होने के बाद नकाब पहनकर चोरियां करते।

गौरतलब है कि झोटवाड़ा के भौमिया नगर में केनरा बैंक की ब्रांच है। बैंक की वरिष्ठ प्रबंधक रवनीत कौर (35) ने थाने में मामला दर्ज करवाया था कि 27 जुलाई की रात को बदमाशों ने चोरी की नीयत से बैंक का शटर तोड़कर चैनल गेट से बदमाश अंदर घुसे और फिर ट्रेजरी में बने स्ट्रॉन्ग रूम के लॉक को तोड़ने का प्रयास किया। काफी कोशिश के बाद भी कामयाब नहीं होने पर पकड़े जाने के डर से फरार हो गए थे। पुलिस ने मिले सीसीटीवी फुटेज से बदमाशों को चिन्हित किया।

बिना प्रक्रिया अपनाए पंचायत सदस्यों को हटाने पर जताई आपत्ति

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने पंचायत सदस्यों को हटाने से जुड़े कई मामलों पर संज्ञान लेते हुए कहा है कि वर्ष 1996 के राजस्थान पंचायती राज नियमों के नियम 22 में निर्धारित अनिवार्य प्रक्रिया का पालन किए बिना इन्हें हटाने के आदेश पारित किए जा रहे हैं। जस्टिस अनूप कुमार ढंड ने पाया कि जांच अधिकारी इन नियमों से भलीभांति अवगत नहीं हैं, जिससे आदेशों में गंभीर त्रुटियां हो रही हैं। कोर्ट ने पंचायती राज विभाग के प्रमुख सचिव, संभागीय आयुक्तों और जिला कलेक्टरों को निर्देश दिया कि वे सभी पंचायत समितियों के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों को नियम 22 के महत्व के बारे में सूचित करें, ताकि भविष्य में चुने हुए जनप्रतिनिधियों को हटाते समय ऐसी गलतियों से बचा जा सके। कोर्ट ने यह भी कहा कि एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में चुना हुआ प्रतिनिधि जनता की आवाज़ होता है और उसे उसके पद से हटाने में अत्यधिक सावधानी व निष्पक्ष प्रक्रिया का पालन आवश्यक है। इसके साथ ही अदालत ने याचिकाकर्ता को हटाने के आदेश को रद्द करते हुए नियम 22 की पालना करते हुए मामले में पुनः विचार करने को कहा है।

कालोटा में दबिश देने गई वन विभाग की टीम पर खनन माफिया ने पत्थर बरसाये

टीम ने खेतड़ी, चिड़ावा और झुंझुनूं रेंज के स्टाफ के साथ कालोटा गांव में दबिश दी

वन विभाग की टीम ने दो ट्रैक्टरों को जब्त कर चालक को गिरफ्तार किया।

- पांच किमी तक वन विभाग की गाड़ियों और जब्त ट्रैक्टरों को छुड़वाने के लिए दो दर्जन से अधिक बाइक सवार युवकों ने अधिकारियों व कर्मचारियों को धमकियां दी
- वन विभाग की टीम को चलती बाइक से धमकी देने और भारी संख्या में बाइकों को गाड़ियों के आगे-पीछे दौड़ने का वीडियो भी वायरल हो रहा है

झुंझुनूं, (निसं)। जिले के खेतड़ी इलाके के कालोटा गांव में रविवार को कार्रवाई करने गई वन विभाग की टीम के सामने खनन माफिया हो गए। टीम पर ना केवल पत्थर बरसाए गए, बल्कि करीब पांच किलोमीटर तक वन विभाग की गाड़ियों और जब्त ट्रैक्टरों को छुड़वाने के लिए दो दर्जन से अधिक बाइकों पर सवार युवकों ने विभागीय अधिकारियों व कर्मचारियों को धमकियां दी।

एसीएफ कमलचंद ने बताया कि काफी दिनों से सूचना मिल रही थी कि कालोटा वन क्षेत्र स्थित पहाड़ी में अवैध खनन माफिया सक्रिय हो रहे हैं, जिस पर झुंझुनूं डीएफओ गुलजारीलाल जाट के निर्देशन में रविवार को खेतड़ी, चिड़ावा और झुंझुनूं रेंज के स्टाफ के साथ कालोटा गांव में दबिश दी गई। टीम मौके पर पहुंची तो वहां पर करीब डेढ़ दर्जन ट्रेक्टरों में अवैध चेजा पत्थर भरा हुआ था, लेकिन टीम को देखकर सभी ट्रैक्टर इधर-उधर भाग गए। मौके पर टीम ने चार ट्रैक्टरों को पकड़ा और उन्हें अपने साथ ले जाने लगे तो पहाड़ी में छुपे खनन माफियाओं ने पत्थर बरसाने शुरू कर दिए, जिसके चलते महिला वनकर्मी और वाहन बाल-बाल बचे। टीम ने जैसे तैसे दो ट्रैक्टर और एक आरोपी को अपने साथ लिया और मौके से रेंज कार्यालय खेतड़ी के लिए रवाना हुए।

रेंजर विजय कुमार फगेड़िया ने बताया कि खनन माफियाओं में किसी प्रकार का खौफ नहीं दिखा, जिस आरोपी शीशराम को वन विभाग की टीम ने पकड़ा था, उसका ही सगा भाई भागीरथ बाइक पर अपने साथियों के साथ आया। भागीरथ और उसके साथ बड़ी संख्या में युवक करीब दो दर्जन बाइकों पर सवार थे, जिन्होंने कालोटा से लेकर बबाई तक, करीब पांच किलोमीटर तक वन विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों को धमकाने और डराने की कोशिश की। साथ ही जब्त ट्रैक्टर और अपने भाई को छुड़वाने की कोशिश की, लेकिन नाकामयाब रहे। वन विभाग की टीम को चलती बाइक से धमकी देने और भारी संख्या में बाइकों को गाड़ियों के आगे पीछे दौड़ने का वीडियो भी वायरल हो रहा है, जिससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि खेतड़ी इलाके में खनन माफियाओं की हद तक बेखौफ हो चुके हैं।

वहीं टीम ने दो ट्रैक्टरों को जब्त कर शीशराम नाम के चालक को गिरफ्तार कर प्रकरण दर्ज कार्रवाई शुरू कर दी है। कार्रवाई टीम में एसीएफ कमलचंद, रेंजर विजय फगेड़िया, वनपाल संजय कुमार, सत्यवीर झाझड़िया, सहायक वनपाल पिंकू कुमार, मनोज कुमार मीणा, ओमप्रकाश, वनरक्षक भारत कुमार, सुमेर सिंह, राधेश्याम गुर्जर कविता कुमारी, सुमन कुमारी, महेंद्र सिंह, वाहन चालक रामकुमार, महिपाल सिंह इत्यादि मौजूद रहे।

प्रदेश के 509 प्रिंसिपल का तबादला, आदेश जारी

- बड़ी संख्या में प्रिंसिपल को उनके जिले से बाहर अन्य जिलों में भी भेजा गया
- कुछ प्रिंसिपल को एपीओ करते हुए माध्यमिक शिक्षा निदेशालय में हाजिरी देने के आदेश दिए

बीकानेर, (निसं)। शिक्षा विभाग में ट्रांसफर का दौर शुरू हो गया है। प्रदेश के 509 प्रिंसिपल के ट्रांसफर कर दिए गए हैं। बड़ी संख्या में प्रिंसिपल को उनके जिले से बाहर अन्य जिलों में भी भेजा गया है, वहीं कुछ प्रिंसिपल को पदस्थापन की प्रतीक्षा (एपीओ) करते हुए माध्यमिक शिक्षा निदेशालय में हाजिरी देने के आदेश दिए गए हैं। लंबे इंतजार के बाद जारी इस लिस्ट से कुछ प्रिंसिपल अपनी होम डिस्ट्रिक्ट पहुंच रहे हैं, वहीं कुछ को घर से दूर जाना पड़ रहा है।

माध्यमिक शिक्षा निदेशक सीताराम जाट की ओर से जारी आदेश में कहा गया है कि सभी प्रिंसिपल तुरंत प्रभाव से अपने कार्य स्थल से रिलीव होंगे और नए स्थान पर ज्वाइन करेंगे। 53 पेज के तबादला आदेश में सभी जिलों के प्रिंसिपल शामिल किए गए हैं। कुछ प्रिंसिपल को स्कूल से हटाकर अब ब्लॉक एलिमेंटरी एज्यूकेशन ऑफिसर (बीईओ) बना दिया गया है। इन पद पर आने वाले प्रिंसिपल को अपना गृह जिला छोड़ना पड़ा है। वहीं बीईओ पद से कुछ को वापस स्कूल में प्रिंसिपल बना दिया गया है।

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय में सहायक निदेशक पद पर कार्यरत कुछ प्रिंसिपल को अब अन्य जिलों में जाना पड़ा है। बीकानेर के अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा ओमप्रकाश गोदारा का ट्रांसफर अब बाड़मेर के राजकीय सीनियर सैकंडरी स्कूल ढाको का ताला धनाऊ किया गया है।

जैसलमेर से गोपी किशन व्यास को बीकानेर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में एडीओ की जिम्मेदारी मिली है। उधर, संयुक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा कार्यालय में रामकिशोर को पदस्थापित किया गया है, जो अब तक देराजसर के सरकारी सीनियर सैकंडरी स्कूल में प्रिंसिपल थे। माध्यमिक शिक्षा निदेशक के स्टाफ ऑफिसर के ऑफिस में मीना खत्री को नई जिम्मेदारी दी गई है। मीना खत्री वर्तमान में राजकीय सीनियर सैकंडरी स्कूल देराजसर में प्रिंसिपल पद पर थी। इला पारीक और गोमाराम जीनगर को भी संयुक्त निदेशक बीकानेर ऑफिस में सहायक निदेशक के रूप में लगाया गया है।

गुरु प्रसाद भार्गव को सियासर पंचकोसा के सरकारी सीनियर सैकंडरी स्कूल से, भरत रामावत को सियाणा भाटियान के सरकारी सीनियर सैकंडरी स्कूल से माध्यमिक शिक्षा निदेशालय लाया गया है। अरविन्द शर्मा को राजकीय सीनियर सैकंडरी स्कूल लालसर से पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षा कार्यालय में लगाया गया है। चूरू से संदीप शर्मा को निदेशालय में ही सहायक निदेशक पद पर लगाया गया है।

अनिल कुमार गोगिया को गोविंदसर के सीनियर सैकंडरी स्कूल से निदेशालय में एडीईओ लगाया गया है। दिनेश कुमार आचार्य को भी पहलवान का बेरा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय से अब शिक्षा विभागीय पंजीयक कार्यालय में लगाया गया है। संज्ञा गुप्ता को जयसिंहदेसर मगरा से प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय में सहायक निदेशक पद पर जिम्मेदारी दी गई है। अरविन्द बिट्ठू, रामनिवास, कृष्ण लाल को माध्यमिक शिक्षा निदेशालय में एडीईओ की जिम्मेदारी दी गई है।

जैसलमेर से गोपी किशन व्यास को भी माध्यमिक शिक्षा निदेशालय में पोस्टिंग मिली है। चंद्रहास मेघवंशी को प्रारम्भिक शिक्षा में सीनियर डिप्टी डीईओ और नीतू वर्मा को माध्यमिक शिक्षा निदेशालय में सहायक निदेशक के पद पर लगाया गया है। अर्चना शर्मा को भी माध्यमिक शिक्षा निदेशालय में लगाया गया है। प्रिंसिपल की बड़ी लिस्ट के बाद अब एक और लिस्ट जारी हो सकती है। जिसमें शेष रहे प्रिंसिपल के भी तबादले हो सकते हैं। उधर, लेक्चरर, हेड मास्टर और सेकेंड ग्रेड टीचर्स भी ट्रांसफर के इंतजार में है।

नीमकाथाना क्षेत्र के अधिकांश गांवों के लोग फ्लोराइड युक्त पानी पीने को मजबूर

ग्रामीणों ने समस्या के बारे में अनेक बार विभागीय अधिकारियों से लेकर स्थानीय प्रशासन को भी अवगत कराया, पर कोई ध्यान नहीं दिया गया

- बहुप्रतीक्षित कुंभाराम लिफ्ट परियोजना यदि शुरू हो जाती, तो हजारों लोगों को स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल मिल सकता था
- ग्रामीणों का कहना है कि फ्लोराइड युक्त पानी पीने से बच्चों और युवाओं में हड्डियों की कमजोरी, दांतों का खराब होना और अन्य शारीरिक विकृतियां तेजी से फैल रही है

पाटन, (निसं)। प्रदेश के कई ग्रामीण अंचलों में लोग वर्षों से फ्लोराइड युक्त पानी पीने को मजबूर हैं। नीमकाथाना क्षेत्र के अधिकांश गांव के लोगों को फ्लोराइड युक्त पानी पीना पड़ रहा है, जिसको लेकर ग्रामीणों ने अनेक बार विभागीय अधिकारियों से लेकर स्थानीय प्रशासन को भी अवगत करवाया, परंतु प्रशासन ने भी इस गंभीर समस्या के समाधान की तरफ ध्यान नहीं दिया। इतनी बड़ी समस्या के बावजूद भी न तो कोई सुनने वाला है और न ही कोई बोलने वाला है। राजस्थान और हरियाणा समेत केंद्र में भी भाजपा की सरकार होने के बावजूद बहुप्रतीक्षित कुंभाराम लिफ्ट परियोजना को अभी तक धरातल पर नहीं लाया गया है। यह परियोजना यदि शुरू की जाती, तो हजारों लोगों को स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल मिल सकता था। परंतु स्थितियां जस की तस बनी हुई हैं। ग्रामीणों का कहना है कि फ्लोराइड युक्त पानी पीने से बच्चों और युवाओं में हड्डियों की कमजोरी, दांतों का खराब होना और अन्य शारीरिक विकृतियां तेजी से फैल रही है। इसके साथ ही इलाके में लगातार उड़ती धूल और मिट्टी ने लोगों की सेहत को और खराब कर दिया है। डोकण निवासी मनिष चतुर्वेदी ने निराशा व्यक्त करते हुए कहा कि सिर्फ योजनाएं बनती हैं, लेकिन जमीन पर कुछ भी नहीं दिखाई देता। कुंभाराम लिफ्ट परियोजना जैसे जल जीवनदायिनी प्रयास को शीघ्र शुरू किया जाना नितांत आवश्यक है, ताकि आमजन को राहत मिल सके और आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित भविष्य दिया जा सके।

डॉ. सतीश पूनियां आज से प्रदेश के सात जिलों के प्रवास पर

- डॉ. पूनियां मारवाड़, मेवाड़-वागड़ में विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होंगे

जयपुर। भाजपा हरियाणा संगठन प्रभारी, भाजपा राजस्थान पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां सोमवार से 7 अगस्त तक राजस्थान के 7 जिलों के प्रवास पर रहेंगे, जहां वह विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होंगे। सतीश पूनियां मारवाड़, मेवाड़-वागड़ के चार दिवसीय प्रवास पर डीडवाना-कुचामन, नागौर, अजमेर राजसमंद, उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़ और भीलवाड़ा इत्यादि जिलों में पार्टी कार्यक्रमों, कार्यकर्ता मिलन, कार्यकर्ताओं को सम्बल और धार्मिक कार्यक्रमों में शामिल होंगे।

सतीश पूनियां सोमवार को सुबह दस बजे जयपुर से सड़क मार्ग द्वारा डीडवाना कुचामन और नागौर जिले के लिए प्रस्थान करेंगे, दोपहर एक बजे कुचामन एवं तीन बजे रोल में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधारोपण करेंगे, शाम 5 बजे मूंडवा में पूर्व जिला अध्यक्ष रमाकांत शर्मा के निवास स्थान पर उनकी माताजी के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे, शाम 6:30 बजे रैण में रामस्नेही आश्रम और रात्रि आठ बजे मेड़ता में मीरा महोत्सव में शामिल होंगे। पांच अगस्त को सतीश पूनियां सुबह 11 बजे नाथद्वारा में श्रीनाथजी भगवान के दर्शन करेंगे, उदयपुर में दोपहर एक बजे स्थानीय कार्यक्रम में शामिल होंगे और दोपहर तीन बजे उदयपुर के शोभागपुरा में कार्यकर्ताओं से मुलाकात करेंगे। छह अगस्त को पूनियां डूंगरपुर में सुबह 11 बजे से दोपहर तीन बजे तक आदिवासी माता-बहनों के साथ रक्षाबंधन कार्यक्रम में शामिल होंगे, शाम छह बजे चित्तौड़गढ़ के मंडफिया में श्री सांवलिया सेठ जी के दर्शन करेंगे, इसके बाद गोकुल विश्रांति गृह में कार्यकर्ताओं से मुलाकात करेंगे। सात अगस्त को सुबह सतीश पूनियां भीलवाड़ा स्थित जैन स्थानक में डॉ. कुमुदलता जी महाविद्वानसति के दर्शन करेंगे, पूर्व सभापति दिनेश शर्मा के निवास स्थान पर उनकी माताजी के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे, 12 बजे से भीलवाड़ा सर्किट हाउस में कार्यकर्ताओं से मुलाकात करेंगे, शाम को चार बजे माधव गौशाला जाएंगे, शाम को पांच बजे जयपुर के लिए सड़क मार्ग द्वारा प्रस्थान करेंगे।

करंट लगने से बुजुर्ग की मौत

टोंक, (निसं)। कोतवाली थाना क्षेत्र के रामापीर कॉलोनी में गुजर रही 11 केवी लाइन के करंट की चपेट में आने से शनिवार को झुलसे बुजुर्ग की जयपुर में एक अस्पताल में मौत हो गई, जिसके बाद रविवार को परिजनों और कॉलोनी के लोग रविवार को धन्ना तलाई क्षेत्र में कृषि मंडी रोड पर जाम लगाकर धरने पर बैठ गए। साथ ही बिजली निगम और प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की। इसकी सूचना मिलने के बाद टोंक एसडीएम व अति. पुलिस अधीक्षक एवं तहसीलदार, थाना कोतवाली प्रभारी टीम के साथ मौके पर पहुंचे और लोगों से समझाइश की, लेकिन परिजन व क्षैत्रवासी नहीं माने तथा उन्होंने मृतक के एक आश्रित को सरकारी नौकरी देने और 50 लाख रुपए देने की मांग की। पांच घंटे बाद सहमति बनी। सहमति के तहत मृतक के एक आश्रित को संविदा पर नौकरी, ज्यादा से ज्यादा सहायता राशि दिलवाने और हाईटेंशन लाइन को हटाने के आश्वासन पर सहमति बनी।

नीट परीक्षा में अच्छे नंबर दिलाने का झांसा देकर छात्र से 8.50 लाख ठगे

कोटा, (निसं)। शहर में मेडिकल एंट्रेंस की कोचिंग करने आए बिहार के छात्र से नीट यूजी परीक्षा पास करवाने की एवज में लाखों रुपए की ठगी का मामला सामने आया है। मामले में सामने आया कि आरोपी भी छात्र के दोस्त हैं, जिन्होंने उससे परीक्षा पास करवाने की एवज में लाखों रुपए ठग लिए। ठगी का मामला सामने आने पर जवाहर नगर थाना पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

मामले मे सामने आया कि ठगी का पीड़ित छात्र बिहार के मुजफ्फरपुर के कुढ़नी थाना इलाके के मादापुर रायती निवासी है। उसकी दोस्ती दो लड़कों से हुई थी। पढ़ाई के दौरान कुछ परेशान रहने लगा तो इस पर दोनों दोस्तों ने नीट में अच्छे से अच्छे नंबर दिलाने का झांसा दिया। जिसके लिये 13 लाख रुपए की मांग की। इसके बाद छात्र ने अपनी बहन की शादी के लिए पिता की ओर से खाते में डाले हुए 8.50 लाख रुपए निकाल कर आरोपी को दे दिए। जवाहर नगर थानाधिकारी रामलक्ष्मण ने बताया कि बिहार निवासी एक छात्र ने नीट की परीक्षा में अच्छे अंक दिलाने के नाम पर उससे साढ़े आठ लाख की ठगी होने की शिकायत दी। थानाधिकारी ने बताया कि मामले में फरियादी छात्र व रूपये की ठगी करने वाला छात्र भी बिहार का निवासी है और दोनों दोस्त हैं। मामले में फरियादी की शिकायत पर मामला दर्ज कर मामले की जांच की जा रही हैं।

बीस लाख की अवैध शराब मय वाहन जब्त

उदयपुर, (निसं)। उदयपुर में पुलिस ने बीस लाख की अवैध शराब मय पिकअप वाहन जब्त किया है।

महानिरीक्षक पुलिस उदयपुर रेंज गौरव श्रीवास्तव के आदेश पर डीएसटी टीम प्रभारी श्यामसिंह रत्नू, डबोक थानाधिकारी हुकमसिंह के नेतृत्व में गठित टीम ने मुखबीर से मिली सूचना पर ओडवाड़ीया से झंझेला मार्ग पर तालाब के पास श्मशान भूमि के तरफ रास्ते पर एकांत में पिकअप वाहन खड़ा था। जिसका त्रिपाल हटा कर तलाशी ली तो उसमें 78 कर्टन अवैध शराब के पाए गए। इसी दौरान भैसड़ा कला में आवलिया का कुआ से भैसड़ा कला गांव रोड़ पर किशन पुत्र गणेश डांगी के मकान के पास बाड़े में होने पर मौके पर दबीश देकर 180 कर्टन अवैध शराब के जब्त कर प्रकरण दर्ज किया। इस दौरान किशन के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की। बरामद शराब की बाजार कीमत बीस लाख रूपये बताई जाती है।

डिप्टी सीएम दीया कुमारी ने मानसून फेस्ट में शिकरत की

अजमेर, (कासं)। डीएवी कॉलेज के खेल मैदान में अजमेर दक्षिण विधानसभा क्षेत्र की मातृ शक्ति की ओर से मानसून फेस्ट का आयोजन किया गया। महिलाओं के लिए, महिलाओं द्वारा आयोजित यह उत्सव सशक्तिकरण, मनोरंजन और जागरूकता का संगम बना। इसमें महिलाओं के मनोरंजन के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं हुई। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। मानसून फेस्ट में महिलाओं के साथ बच्चों के मनोरंजन का भी विशेष ध्यान रखा गया। बच्चों के विभिन्न प्रकार के झूले व 30-40 प्रकार की स्टॉलें लगाई गई।

विधायक अनिता भदेल ने बताया किमहिलाओं को जागरूक तथा उनके अधिकारों की जानकारी के लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा शिविर का आयोजन किया गया। यहां पर महिलाओं को कानूनी अधिकारों की जानकारी दी गई। महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी जानकारी के लिए स्वास्थ्य विभाग ने भी शिविर लगाया। साथ ही अन्य व्यवस्थाएं भी की गई। राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष विजया किशोर राहटकर, उप मुख्यमंत्री दीया कुमारी, राज्य मंत्री मंजू बाघमार, विधायक अनिता भदेल, लाडपुरा विधायक कल्पना देवी, राजसमंद विधायक दीप्ति किरण माहेश्वरी, पूर्व विधायक अनिता सिंह गुर्जर आदि ने भी शिरकत की।

सांसद राजकुमार रोत के आरक्षण पर पूर्व में दिए बयान पर भील समाज ने किया हंगामा

सांसद रोत का विरोध करने पहुंचे भील समाज और पुलिस में लाठी-भाटा जंग हुई

आदिवासी दिवस पर कार्यक्रम में पहुंचे सांसद का विरोध करने पर पुलिस व भील समाज के लोगों के बीच झड़प हुई।

- सांसद राजकुमार रोत ने विरोध करने के मामले में बीजेपी पर निशाना साधा, कहा कि इस हंगामे के पीछे भाजपा संगठन से जुड़े लोग शामिल हैं, जो लोग मेरा विरोध कर रहे हैं

झालावाड़, (निसं)। आदिवासी दिवस के अवसर पर झालावाड़ में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने के लिए पहुंचे भारत आदिवासी पार्टी के सांसद राजकुमार रोत के आरक्षण पर दिए पूर्व के बयान पर भील समाज के ही एक अन्य गुट ने हंगामा कर दिया।

जानकारी के अनुसार राजकुमार रोत का विरोध कर रहे लोग पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष अरविंद भील के नेतृत्व में कार्यक्रम के मंच तक पहुंच गए और राजकुमार रोत के विरुद्ध जमकर नारेबाजी की। राजकुमार रोत का कहना है कि कुछ लोगों ने रोत पर हमला करने का भी प्रयास किया। मौके पर राजकुमार ने विरोध करने वालों से कहा कि वह झंडे नीचे कर ले और मंच पर आकर बैठें, कोई मनमुटाव है तो उसको दूर कर लेंगे, लेकिन विरोध करने वाले लोगों ने एक ना सुनी और लगातार नारेबाजी करते रहे, ऐसे में पुलिस द्वारा राजकुमार रोत का विरोध कर रहे लोगों को कार्यक्रम स्थल से दूर ले जाकर खड़ा कर दिया गया। कुछ देरी के बाद जब पुलिस दूसरे गुट का नेतृत्व कर रहे अरविंद भील को समझाइश करते हुए अपने साथ लेकर जाने लगी तब लोगों ने इसका विरोध करना शुरू कर दिया। कुछ दूरी पर जाकर अरविंद भील ने अपने समर्थकों से हंगामा नहीं करने की अपील भी की, लेकिन इसी बीच कुछ लोगों ने पत्थर फैंक दिए और मौके पर भगदड़ मच गई। ऐसे में पुलिस को हल्का बल प्रयोग करना पड़ा तथा पुलिस ने बल प्रयोग करते हुए पत्थरबाजों एवं हंगामा करने वाले लोगों को खदेड़ दिया। पत्थरबाजी में कुछ पुलिसकर्मियों के चोटिल होने की बात भी सामने आई है। मौके पर कुछ बदमाश पुलिस पर बड़े-बड़े पत्थर उठाकर हमला कर रहे थे, ऐसे में पुलिस द्वारा बल प्रयोग किया जाना जरूरी हो गया था, अन्यथा कोई बड़ी दुर्घटना भी घट सकती थी। हंगामा कार्यक्रम स्थल से लगभग आधा किलोमीटर की दूरी पर हुआ। हंगामे के दौरान कई दो पहिया वाहन टूट गए तथा भगदड़ के दौरान लोग आसपास के घरों में घुस गए, जहां से अराजक तत्वों को पुलिस द्वारा जबरदस्ती बाहर निकाल गया। मामले में पुलिस द्वारा अरविंद भील सहित कुछ लोगों को डिटेन किया गया है।

सांसद राजकुमार रोत ने विरोध करने के मामले में बीजेपी पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि इस हंगामे के पीछे भाजपा संगठन से जुड़े लोग शामिल हैं, जो लोग मेरा विरोध कर रहे हैं। उन्हें बता दूं कि मुझे झालावाड़ से चुनाव नहीं लड़ना। जो लोग मुझसे लड़ने आए, वह समाज के मानसिक विकलांग हैं, जो लड़ाई करने आए थे, उन पर बड़े राजनीतिक घरों के लोगों का श्रेय था। सांसद राजकुमार रोत ने कहा कि 2016 में हमला करने वाले आज हमारे साथ खड़े हैं। मैं अपने दावे के साथ कहता हूं, आज जो भी आए थे, कुछ तो नासमझ थे। उनको दुनियादारी से कोई मतलब नहीं। उनको उकसाया गया, वो भी एक दिन साथ खड़े होंगे, जो हमसे 8 साल पहले लड़ाई करने आए थे, वो भाई आज हमारे साथ खड़े हैं। उनके आज समझ आया, हमें खुशी है। जब 2016 में हम पर हमला हुआ था। हमारे साथी आज आसपुर से विधायक हैं। उनका हाथ फ्रैक्चर हुआ था। हमारे ही कुछ भाई जो मानसिक रूप से दिव्यांग थे, उन्होंने किसी के कहने पर हमला कर दिया था। हालांकि खुशी इस बात की है कि आज वहीं भाई हमारे साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा है। उन्होंने कहा कि कुछ लोग हमें बांट रहे हैं, लेकिन हमें अपने लिए लड़ना पड़ेगा और लड़ेंगे।

स्कूल हादसे पर राजकुमार रोत ने कहा कि झालावाड़ स्कूल हादसे पर सरकार ड्रामा कर रही है। सांसद रोत ने झालावाड़ स्कूल हादसे पर भी प्रदेश सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार की 10-10 लाख रुपए मुआवजे की घोषणा केवल औपचारिकता है। इस घटना के बाद प्रशासन ने अंतिम संस्कार में मां-बाप को भी शामिल नहीं होने दिया गया, जबकि प्लेन हादसे में प्रत्येक व्यक्ति को एक करोड़ का मुआवजा दिया। रोत ने कहा कि समाज के बच्चों को 10 लाख नहीं दिए हैं, यह सहायता तो सरकार की योजना है। सरकार ने अलग से कुछ नहीं दिया। केवल ड्रामा कर रहे हैं।

सैन्य प्रतिष्ठानों के पास अफीम तस्कर गिरफ्तार

बीकानेर, (कासं)। स्वतंत्रता दिवस से ठीक पहले बीकानेर में सेना की इंटेलिजेंस यूनिट और स्थानीय पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में एक बड़ा नशा तस्करी रैकेट सामने आया है। इस कार्रवाई के दौरान बीकानेर के शोभासर सर्कल से 452 ग्राम अफीम के साथ एक युवक को गिरफ्तार किया गया है।

यह इलाका न केवल व्यावसायिक रूप से व्यस्त है बल्कि भारतीय सेना और वायुसेना के महत्वपूर्ण ठिकानों के बेहद करीब भी है। गिरफ्तार युवक की पहचान सुनील उपाध्याय पुत्र सत्यनारायण उपाध्याय निवासी मेघासर के रूप में हुई है। यह युवक पिछले 4 से 5 वर्षों से शोभासर चौराहे पर ब्राह्मण होटल नामक ढाबा चला रहा था, जो नशे के तस्करी का अड्डा बन चुका था। सेना की इंटेलिजेंस टीम को 2 अगस्त की रात यह इनपुट मिला कि शोभासर क्षेत्र में कुछ संदिग्ध व्यक्ति अफीम की बड़ी खेप लेकर पहुंचने वाले हैं। यह सूचना तत्काल डीएसटी के एएसआई रामकरण सिंह और बीछवाल थाना प्रभारी एसआई कमलजीत कौर के साथ साझा की गई। दोनों टीमों ने मौके पर पहुंचकर घेराबंदी की और सुनील को मौके से गिरफ्तार कर लिया। उसके पास से 452 ग्राम अफीम बरामद की गई जो वाणिज्यिक मात्रा में आती है और इसकी बाजार कीमत लाखों में आंकी जा रही है।

मासूम का शव नाडी में मिला

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के उपनगर पुर में रविवार को अचानक उस वक्त मातम पसर गया, जब पता चला कि चार साल के मासूम शिफान पिता मोहम्मद मोहसिन की नाडी में लाश मिली है। हर कोई शोक संतप्त हो गया। जानकारी के अनुसार शिफान घर से शनिवार शाम चार बजे लापता हुआ था। परिजनों ने अपने स्तर पर काफी कोशिश की, लेकिन पता नहीं चला, फिर पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने कई जगह की तलाश की लेकिन सफलता नहीं मिली। रविवार सुबह अचानक तैरता हुआ शव नाडी में नजर आया। स्थानीय लोगों का

आरोप है कि बस्ती में ही पार्षद और प्रशासन की लापरवाही से क्षेत्र में बरसाती गड्ढों में पानी भरा हुआ है जिसके चलते आए दिन हादसे हो रहे हैं। इसे ही एक बरसाती गड्ढे में डूबने से शिफ़ान की मौत हुई है।

संगीत संध्या आयोजित

जयपुर। गुलाबी नगरी की फ़िज़ाओं में 3 अगस्त की शाम भक्ति, संगीत और ऊर्जा की एक अनोखी धुन गूंज रही थी। पहली बार जयपुर में, जाने-माने परफॉर्मर अमेय डबली ने अपने आध्यात्मिक कॉन्सर्ट सीरीज़ कृष्णा - म्यूज़िक, ब्लिस एंड बियॉन्ड की प्रस्तुति दी। महाराणा प्रताप ऑडिटोरियम में आयोजित इस भव्य संगीतमय संध्या ने कृष्ण भजनों को भारतीय लोक संगीत और समकालीन फ्यूज़न के साथ जोड़कर एक ऐसा अनुभव रचा जो दिलों को छू गया और पीढ़ियों को एक साथ जोड़ गया।

कार्यक्रम में दो शो आयोजित किए गए-एक आम जनता के लिए और दूसरा विशेष रूप से भारतीय सशस्त्र बलों के लिए। दोनों ही शो में लोगों की भावनाएँ, आस्था और सांस्कृतिक गौरव साफ़ झलक रहे थे। छोटे बच्चों से लेकर बुज़ुर्गों तक, हर कोई इस संगीत यात्रा का हिस्सा बना, और जयपुर ने वाकई एक साथ मिलकर इसे महसूस किया।

शाम का एक विशेष आकर्षण रहे भक्त भागवत प्रभु, जो भारत के सबसे युवा आध्यात्मिक प्रभावकर्ता हैं। उन्होंने भगवद गीता की अपनी अनोखी रैप प्रस्तुति से सभी को चौंका दिया और खूब सराहना बटोरी-खासकर युवाओं के बीच। इस प्रस्तुति ने यह सिद्ध कर दिया कि परंपरा को नए अंदाज़ में प्रस्तुत किया जाए, तो वह हर दिल से जुड़ सकती है।

पशुपालन मंत्री जोराराम कुमावत ने गौशाला संचालकों एवं अधिकारियों के साथ बैठक की

जयपुर/झालावाड़। राजस्थान सरकार के पशुपालन, डेयरी, गोपालन और देवस्थान मंत्री जोराराम कुमावत ने कहा कि राज्य को दुग्ध उत्पादन में देश में प्रथम स्थान पर लाने के लिए सरकार बहुआयामी रणनीतियों पर कार्य कर रही है। वे रविवार को झालावाड़ जिले में गौशाला संचालकों, पशुपालकों एवं पशुपालन व डेयरी विभाग के अधिकारियों के साथ जिला परिषद के सभागार में आयोजित समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे।

खासकर दुग्ध उत्पादन के लिए गिर गाय में ब्राजील से आयातित सीमन से कृत्रिम गर्भाधान किया जा रहा है। इससे गिर गाय के दूध के उत्पादन में दोगुनी से भी ज्यादा वृद्धि होगी। इसके अलावा प्रदेश में गाय की संख्या में बढोतरी के लिए सैक्स सोर्टेड सीमन योजना को लागू किया गया है। ऐसा होने से प्रदेश में गौवंश की संख्या में वृद्धि के साथ-साथ दुग्ध उत्पादन भी बढ़ेगा।

कुमावत ने इस अवसर पर कहा कि सेक्स सोर्टेड तकनीक किसानों तथा पशुपालकों की आय बढ़ाने के लिए मील का पत्थर साबित होगी। अभी यह तकनीक पशुपालकों के लिए महंगी है

मंत्री जोराराम कुमावत (बीच में) ने अधिकारियों के साथ जिला परिषद के सभागार में आयोजित समीक्षा बैठक को संबोधित किया।

इसीलिए सरकार इस तकनीक को पशुपालकों की पहुंच में लाने के लिए सस्ती दर पर सेक्स सोर्टेड सीमन पशुपालकों को उपलब्ध कराएगी। उन्होंने बताया कि यह तकनीक पशुपालन के क्षेत्र में एक वरदान साबित होगी क्योंकि इस तकनीक से मादा पशुओं की संख्या में बढ़ोतरी होगी और नर पशुओं की संख्या में कमी आएगी।

कुमावत ने निर्देश दिए कि दुग्ध सहकारी समितियों और दुग्ध संघों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित की जाए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक गांव में समितियां किसानों से नियमित संवाद करें और अपने कार्यों को और प्रभावी बनाएँ। उन्होंने यह भी कहा कि जो पशुपालक और डेयरी क्षेत्र में अच्छा कार्य कर रहे हैं, उन्हें सरकार द्वारा प्रोत्साहित किया जाएगा।

बैठक में झालावाड़-बारां सांसद दुष्यंत सिंह, जिला कलेक्टर अजय सिंह राठौड़, मनोहर थाना विधायक गोविन्द रानीपुरिया, डग विधायक कालूराम मेघवाल, पूर्व विधायक नरेंद्र नागर, आरपीएससी के पूर्व चेयरमैन श्याम सुंदर शर्मा, जिलाध्यक्ष हर्षवर्धन शर्मा, सीईओ शम्भूदयाल मीणा, जिला स्तरीय अधिकारी, पशुपालन एवं डेयरी विभाग के प्रतिनिधि तथा जिले के प्रमुख गौशाला संचालक उपस्थित रहे।

■ कुमावत ने इस अवसर पर कहा कि सेक्स सोर्टेड तकनीक किसानों तथा पशुपालकों की आय बढ़ाने के लिए मील का पत्थर साबित होगी

बैठक से पहले कैबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत ने द्वारकाधीश मंदिर में दर्शन किए और झालरापाटन स्थित गौ संसार गौशाला का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने गौशाला में गौवंश के रखरखाव, चारे-पानी एवं साफ-सफाई की व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

निरीक्षण के दौरान गौशाला प्रबंधकों द्वारा मंत्री कुमावत को अवगत कराया गया कि गौशालाओं में पशुओं की चिकित्सा सुविधा एक प्रमुख आवश्यकता है। इस पर जानकारी दी गई कि राज्य सरकार द्वारा संचालित 1962 मोबाइल वेटरनरी यूनिट के माध्यम से निःशुल्क पशु चिकित्सा सेवाएं प्राप्त की जा सकती हैं।

सार-समाचार

विशाल कावड़ कलश यात्रा निकाली

जयपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अभियान बेटी बचाओं - बेटी पढ़ाओं से प्रेरित श्री रंगेश्वर महादेव सेवा समिति के तत्वावधान में रविवार को प्रातः 7:30 बजे विशाल कावड़ - कलश यात्रा निकाली गई जिसमे 500 कन्याओं ने श्री गलताजी तीर्थ से पवित्र कावड़ में जल लाकर दोपहर 1:30 बजे श्री रंगेश्वर महादेव मंदिर, बारह भाइयों का चौराहा, नाहरगढ़ रोड, जयपुर पर बाबा भोलेनाथ का जलाभिषेक किया, कार्यक्रम में जयपुर हेरिटेज महापौर कुसुम यादव, ग्रेटर नगर निगम उपमहापौर पुनीत कर्णावत, विधायक बालमुकुन्दाचार्य, पूर्व विधायक अशोक परनामी, मोहनलाल गुप्ता, किशनपोल विधायक प्रत्याशी चंद्र मनोहर बटवाड़ा, पार्षद अमर गुर्जर, नीरज अग्रवाल सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे कावड़ कलश यात्रा मे 1100 -1200 भक्तगण सपरिवार शामिल हुए।

प्रोफेसर डॉ. राजीव सक्सेना ''मुंशी प्रेमचंद साहित्य रत्न सम्मान - 2025'' से विभूषित

जयपुर। मुंशी प्रेमचंद जी की 145वीं जयंती के उपलक्ष में अभाकाम संस्था की ओर से कृषि विज्ञान केन्द्र, सियाम सभागार दुर्गापुरा, जयपुर में, अखिल भारतीय राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित समारोह में वरिष्ठ कवि व साहित्यकार प्रो.डॉ.राजीव सक्सेना को ''मुन्शी प्रेमचन्द साहित्य रत्न सम्मान - 2025'' से नवाज़ा गया। डॉ. सक्सेना वर्तमान में स्वास्थ कल्याण होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं रिसर्च सेंटर, जयपुर में होम्योपैथिक चिकित्सक व वरिष्ठ आचार्य हैं। उन्हें यै सम्मान कविता लेखन व समीक्षा वर्ग प्रतियोगिता वर्ग में दिया गया।

विगत चार वर्षों से ये पुरूस्कार अनवरत मिल रहा है। पदाधिकारियों ने उन्हें सम्मान स्वरूप शॉल, दुपट्टा उढ़ाकर स्मृति चिन्ह, प्रमाण - पत्र व श्री फल देकर सम्मानित किया, शुभकामनाएं दी व उनके लेखन की प्रशंसा की तथा उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

मुख्यमंत्री आवास घेराव के पोस्टर का किया विमोचन

जयपुर। युवाओं एवं छात्रों की विभिन्न समस्याओं को लेकर रविवार को यहां प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव इमरान कुरैशी की अध्यक्षता में एक बैठक हुई। जिसमें प्रदेशभर से छात्र एवं युवा शामिल हुए। कुरैशी ने विभिन्न समस्याओं को लेकर उपस्थित जनों को संबोधित किया। वहीं उन्होंने छात्र संघ चुनावों को लेकर राज्य सरकार के नकारात्मक रवैये की आलोचना की। इस दौरान इमरान कुरैशी ने एनएसयूआई द्वारा छात्रसंघ चुनाव की बहाली को लेकर 5 अगस्त को आयोजित मुख्यमंत्री आवास घेराव के पोस्टर का विमोचन एनएसयूआई संभाग प्रभारी मोहित यादव की मौजूदगी में किया। इस दौरान एनएसयूआई के अनेक युवा साथी भी मौजूद रहे।

चौगान बाबा मंदिर में 51 पार्थिव शिवलिंग महारुद्राभिषेक का आयोजन

जयपुर। सावन के महीने में चौगान बाबा मंदिर की ओर से दूसरा 51 पार्थिव शिवलिंग महारुद्राभिषेक का आयोजन चौगान बाबा मंदिर परिसर नांगल जैसा बोहरा में आयोजित हुआ। इस महाअनुष्ठान में 51 जोड़े पार्थिव शिवलिंग का विभिन्न द्रव्यों से अभिषेक किए। पडितों के नेतृत्व में विधिपूर्वक रुद्राभिषेक अनुष्ठान किया गया। धार्मिक मान्यता है कि पार्थिव शिवलिंग पूजन सावन माह में विशेष फलदायी माना जाता है जो समस्त दोषों का नाश करता है और मनोकामना पूर्ण करता है। मंदिर के पंडित कमल शर्मा ने बताया कि पार्थिव शिवलिंग नदी की मिट्टी से बनाए गए। वेद मंत्रों के साथ विधिवत रुद्राभिषेक किया गया। सभी शिवलिंगों का समिति द्वारा विधिपूर्वक विसर्जन किया जाएगा। पंडित मुकेश शर्मा ने बताया कि रुद्राभिषेक पूजा में 51 किलो गाय माता का दूध,51 किलो गन्ना रस,21 किलो चावल,1000 बिल पत्र, भांग, धतूरा, रोली, मोली ,सुपारी, इलायची, नागर पान ,काली मिर्च ,सिंदूर, कपूर ,पीली सरसों ,अबीर ,गुलाल ,जनेऊ , पतासा, गुड ,अगरबत्ती, नारियल, इत्र, गंगा जल, दूर्वा, पुष्प,फल, गेहूं, मूंग, मिठाई ,काजू,बादाम , किशमिश , अखरोट के साथ साथ घी, दूध, दही, शहद व बुरा के पंचामृत से अभिषेक भी किया गया।

पीआरएसआई जयपुर चैप्टर की वार्षिकी ''रेनबो'' का विमोचन

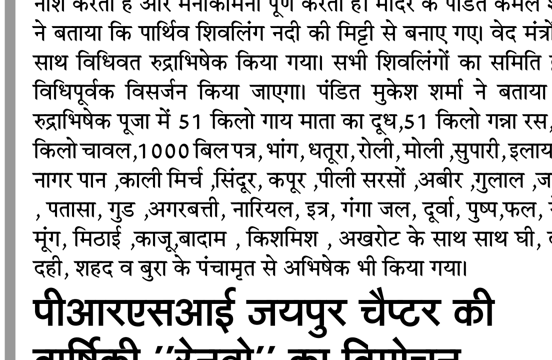

जयपुर। पब्लिक रिलेशन सोसाइटी ऑफ़ इंडिया के जयपुर चैप्टर की ओर से आज अपनी वार्षिकी ''रेनबो'' का विमोचन किया गया। यूथ क्लब में आयोजित जनसंपर्क वर्ष वंदन एवं वार्षिकी विमोचन समारोह में वरिष्ठ सदस्यों का सम्मान एवं नए सदस्यों का स्वागत किया गया। पीआरएसआई जयपुर चैप्टर की वार्षिकी के विमोचन के दौरान संगठन के अध्यक्ष वीरेंद्र पारीक, उपाध्यक्ष कविता जोशी, सचिव मनीष हूजा एवं सह सचिव सोमेंद्र हर्ष के साथ कल्याण सिंह कोठारी, प्रेरणा, अलका सक्सेना, रतन जी, प्यारे मोहन त्रिपाठी, रतन सिंह शेखावत एवं लोकेश शर्मा मौजूद रहे। कार्यक्रम में अमृत वय वंदन के तहत 75 वर्ष की आयु प्राप्त कर चुके सदस्यों का सम्मान किया गया। वहीं, उड़ान के तहत संगठन में शामिल नए सदस्यों का अभिनंदन किया गया। इसी दौरान जीयो हजारों साल के तहत पिछले कुछ समय में अपना जन्मदिन मनाने वाले सदस्यों को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। संवाद के तहत सदस्यों ने अपने मनोभाव कविता, कहानी, चुटकुला, एवं संस्मरण के रूप में अभिव्यक्त किये। वहीं , राग मल्हार के तहत गीतों की महफिल सजाई गई तथा सदस्यों ने सहभोज का आनंद लिया।कार्यक्रम में हरदेव जोशी पत्रकारिता विश्वविद्यालय की प्रोफेसर ऋचा यादव को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। साथ ही, मीडियाकर्मियों का भी विशेष सम्मान किया गया। कार्यक्रम में कन्हैयालाल भ्रमर एवं आत्माराम सिंघल , चंद्रशेखर पारीक वीरेंद्र पारीक एवं कविता जोशी ने रचनाओं का पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन चंद्रशेखर पारीक ने और जयपुर चैप्टर की उपाध्यक्ष कविता जोशी ने जयपुर सरस डेयरी और हाउसिंग बोर्ड और उपस्थित सभी सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

चौपाल का निर्णय संसद मानें तब किसान संघ का लक्ष्य पूरा होगा : गजेंद्र सिंह

जयपुर। भारतीय किसान संघ के जयपुर महानगर का प्रशिक्षण शिविर रविवार को रामजानकी पैलस में आयोजित किया गया। जयपुर प्रांत के सह प्रचार प्रमुख डॉ.लोकेश कुमार चन्देल ने बताया कि

प्रशिक्षण शिविर को संबोधित करते किसान संघ के अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री गजेन्द्र सिंह ने कहा है कि मां बालक को परोपकारी बनाना चाहती हैं वैसा ही बालक बनता है।बालक को मां लोभी बनाना चाहती है वैसा ही बालक बनता है। किसान खुशहाल होगा तो गाँव खुशहाल होगा और गाँव खुशहाल होगा तो देश खुशहाल होगा। गाँव की चौपाल पर जो निर्णय हम कर लें और देश की संसद उसे मानें तब ही किसान संघ का लक्ष्य पूरा होगा।किसान संघ के अखिल भारतीय सदस्य बद्रीनारायण चौधरी ने कहा कि खेत में 6इंच तक ही खोदना चाहिए।यदि इससे ज़्यादा खोदेंगे तो हमारे कृषि मित्र खेंचुए मर जाएँगे। अखिल भारतीय महिला प्रमुख मंजू दीक्षित ने बताया कि किसान संघ ग़ैर राजनीतिक संगठन है क्योंकि हमारे

■ भारतीय किसान संघ के महानगर का प्रशिक्षण शिविर आयोजित

भगवान बलराम ने दोनों राजनीतिक परिवारों की तरफ़ से युद्ध नहीं करके खेती करने पर ध्यान दिया। इसलिए यह संगठन ग़ैर राजनीतिक संगठन है।प्रांत महामंत्री डॉ.सांवरमल सोलेट ने बताया कि किसान संघ का हर कार्यकर्ता नेता है।यह संगठन कार्यकर्ता को अपनी बात रखना रखना सिखाता है। जिस सदस्य को अपनी बात रखनी आ गई , उसके साथ कभी भी शोषण नहीं होगा। इस दौरान प्रदेश प्रचार प्रमुख राजीव दीक्षित, प्रांत अध्यक्ष कालूराम बाँगड़ा, कार्यलय प्रमुख करण सिंह, प्रांत संगठन मंत्री नीरज,जयपुर ज़िला मंत्री लक्ष्मीनारायण यादव, जयपुर महानगर अध्यक्ष प्रह्लाद चौधरी, मंत्री त्रिलोक सिंह करड, जैविक प्रमुख नत्थीलाल चतुर्वेदी, डॉ.रेखा गुर्जर मोहित सैनी, नरेंद्र राठौड़, प्रदीप मालू आदि कार्यकर्ता मौजूद थे।

सिंधी कैंप बस स्टैंड पर लावारिस बैग में मिला 13 किलो 110 किलोग्राम डोडा-चूरा

जयपुर। सिंधी कैंप थाना पुलिस को सिंधी कैंप बस स्टैंड पर लावारिस हालत में एक बैग में 13 किलो 110 किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ डोडा-चूरा भरा मिला है।

पुलिस ने बैग को जब्त कर तस्कर की तलाश शुरू कर दी है। इसके अलावा पुलिस बस स्टेंड पर लगे सीसीटीवी फुटेज भी खंगालने में जुटी है। पुलिस ने बताया कि गश्त कर रही पुलिस टीम को सिंधीकैंप बस स्टेंड के प्लेटफॉर्म नंबर पांच पर पिलर के पास एक लाल रंग का बड़ा बैग रखा हुआ दिखाई दिया। काफी समय से लावारिस हालत में रखे बैग के पास कोई भी यात्री नहीं था।

बैग के बारे में जानकारी करने पर लावारिस होने का पता चला। पुलिस ने बैग को खोलकर चेक किया। बैग में डोडा-चूरा पाउडर भरा मिला। पुलिस ने डोडा-चूरा पाउडर से भरे बैग को जब्त कर लिया।

पुलिस के अनुसार लावारिस मिले बैग में 13 किलो 110 किलोग्राम डोडा-चूरा पाउडर मिला है। पुलिस सीसीटीवी फुटेज खंगाल तस्कर की पहचान करने जुटी है।

हरिओम जन सेवा समिति ने 251 पार्थिव शिवलिंग महारुद्राभिषेक किया

जयपुर। श्रावण मास में हरि ओम जन सेवा समिति, राजस्थान की ओर से 17वां 251 पार्थिव शिवलिंग महारुद्राभिषेक का आयोजन सीकर रोड विजयबाड़ी पथ नंबर सात में भवानी निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय में संपन्न हुआ।

इस महाअनुष्ठान में 251 जोड़े पार्थिव शिवलिंग का विभिन्न द्रव्यों से अभिषेक किए। आचार्य श्याम शरण महाराज के मार्गदर्शन में तथा पडितों के नेतृत्व में विधिपूर्वक रुद्राभिषेक अनुष्ठान किया गया।

धार्मिक मान्यता है कि पार्थिव शिवलिंग पूजन सावन माह में विशेष फलदायी माना जाता है जो समस्त दोषों का नाश करता है और मनोकामना पूर्ण करता है।

समिति के प्रदेश अध्यक्ष पंकज गोयल और महासचिव सरदार रणजीत सिंह ने बताया कि पार्थिव शिवलिंग नदी की मिट्टी से बनाए गए।

वेद मंत्रों के साथ विधिवत रुद्राभिषेक किया गया। सभी शिवलिंगों का समिति द्वारा विधिपूर्वक यमुना नदी, मथुरा में विसर्जन किया जाएगा। समिति के जयपुर शहर अध्यक्ष सुरेश जांगिड़ और प्रवक्ता सुनील शर्मा ने बताया कि सुबह श्याम मंदिर, विजयवाड़ी से भवानी निकेतन स्कूल तक शिव शोभायात्रा भी निकाली गई जिसमें शिवपार्वती माता बग्गी में अघोरी और भूतों के साथ नाचते गाते हुए चले।

पार्थिव शिवलिंग महारुद्राभिषेक सीकर रोड विजयबाड़ी में संपन्न हुआ।

समिति कोषाध्यक्ष महेश शर्मा और सूर्य प्रकाश जोशी ने बताया कि शिव जोड़े पार्थिव शिवलिंगों को कार्यक्रम में शिव पार्वती,राधा कृष्ण एवं सुदामा की झांकियां विशेष आकर्षण का केंद्र रहे।

महारुद्राभिषेक समिति के संरक्षक और संस्थापक राजेन्द्र सदानंद महाराज , विधायक बालमुकुंदाचार्य महाराज के सानिध्य में संपन्न हुआ।

मादक पदार्थ तस्कर और वांछित ईनामी आरोपित चढे सीएसटी के हत्थे

जयपुर। जयपुर कमिश्नरेट की स्पेशल टीम (सीएसटी) ने ऑपरेशन ''क्लीन स्वीप'' के तहत ड्रग्स माफियाओं एवं वांछित ईनामी अपराधियों के खिलाफ भांकरोटा एवं हरमाड़ा में कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ अफीम की तस्करी करने वाले तस्कर राहुल चौधरी को गिरफ्तार किया है और वहीं एक बालअपचारी को निरुद्ध कर उनके कब्जे से अवैध मादक पदार्थ अफीम 210 ग्राम बरामद की है और इसके अलावा 10 हजार का वांछित ईनामी आरोपित वैभव ओझा को दस्तयाब कर हरमाड़ा थाना पुलिस को सुपुर्द किया।

अतिरिक्त पुलिस कमिश्नर (अपराध) मनीष अग्रवाल ने बताया कि सीएसटी ने ऑपरेशन ''क्लीन स्वीप'' के तहत ड्रग्स माफियाओं एवं वांछित ईनामी अपराधियों के खिलाफ भांकरोटा एवं हरमाड़ा में कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ अफीम की

पुलिस ने अवैध मादक पदार्थ अफीम की तस्करी करने वाले तस्कर राहुल चौधरी को गिरफ्तार किया।

तस्करी करने वाले तस्कर राहुल चौधरी निवासी बिन्दायका जयपुर को गिरफ्तार किया है और साथ ही एक बालअपचारी को निरूद्ध किया है। जिनके पास से पुलिस ने 210 ग्राम अवैध मादक पदार्थ अफीम जब्त की है। इसके अलावा 10 हजार का वांछित ईनामी आरोपित वैभव ओझा निवासी करधनी को गिरफ्तार किया है। जिसे हरमाड़ा थाना पुलिस को सुपुर्द किया।

बाइक सांड से टकराई, हादसे में अधीक्षक अभियंता की मौत

जयपुर। दौलतपुरा थाना इलाके के जयपुर-दिल्ली हाईवे पर रविवार की दोपहर को हार्ले डेविडसन बाइक सांड से टकरा गई। इस हादसे में पीडब्ल्यूडी के अधीक्षक अभियंता (एसई) अविनाश शर्मा (57) की मौत हो गई।

सहायक पुलिस आयुक्त चौमूं अशोक चौहान ने बताया कि एसई अविनाश शर्मा बापू नगर गांधीनगर के रहने वाले थे और अधीक्षक अभियंता (सिटी सर्किल) जयपुर के पद पर कार्यरत थे। जो ऊर्जा सचिव (आईएएस) अजिताभ शर्मा के भाई थे। वह रविवार दोपहर दिल्ली की ओर से हार्ले डेविडसन बाइक पर अपने घर लौट रहे थे। इस दौरान उनकी बाइक हाईवे पर आए सांड से टकराई थी। सांड के पिछले पैर से टकराने के बाद अनियंत्रित होकर बाइक हाईवे से नीचे उतरकर गिर गई थी। बाइक सहित जमीन पर गिरने से झटका लगने से हेलमेट भी निकल गया। सिर पर चोट लगने से गंभीर घायल हो गए।

'जयपुर में एक साथ 108 संस्कृत सम्भाषण शिविरों का होगा आयोजन'

जयपुर। संस्कृत को जन जन की भाषा बनाने के उद्देश्य से संस्कृत भारती जयपुर प्रान्त द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला एव संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में संस्कृत भारती राजस्थान के क्षेत्रसंघटनमन्त्री श्री कमलशर्मा उपस्थित थे।

उन्होंने बताया कि संस्कृत हमारी मातृभाषा हैं एवं संस्कृत में ज्ञान विज्ञान का भण्डार छुपा हुआ हैं। नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार भारतीय ज्ञान परम्परा को पढ़ने एवं समझने के लिए संस्कृत का ज्ञान अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। इसी को ध्यान रखते हुवे संस्कृत भारती द्वारा जयपुर शहर के 108 विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों में एक साथ सम्भाषण शिविरों का आगामी 10 सितम्बर से 19 सितम्बर तक आयोजन किया जायेगा। इन सभी शिविरों का समापन एक साथ एक ही स्थान पर होगा। इस समापन कार्यक्रम नाम रखा गया हैं। इसमें राजस्थान भर के शिक्षाविद् उपस्थित होंगे। वर्तमान और भविष्य के लिए संस्कृत इस विषय पर विचार विमर्श करेंगे। कार्यक्रम में प्रो. वाई.एस.रमेश की विशेष उपस्थित रही। उन्होंने कहा कि संस्कृत को लोक भाषा बनाने के लिए संस्कृत सम्भाषण शिविरों का विशेष योगदान होगा। इस कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर प्रान्त मन्त्री चन्द्रशेखर शर्मा बताया कि हमारा लक्ष्य है कि आज का युवा इस देवभाषा को पढ़े एव संस्कृत में निहित भारतीय ज्ञान विज्ञान पर शोध कार्य करके समाज को एक नई दिशा देने का काम करेंगे। इन संगोष्ठी में संस्कृत भारती विभाग संघटनमन्त्री विमल, मनोज शर्मा, डॉ अभिनव उपाध्याय , डा. माधवेश्वर चौधरी, नरेशसिंह, देवकरण शर्मा, नरेन्द्र दौतोलिया , हर्षित सारस्वत , मदनगोपाल , सविन , अनूप , प्रताप , दिव्यांशु , भारती दाधीच , अंजलि , प्रियंका , गार्गी विश्नोई एव 40 से अधिक संस्कृत भारती के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

18वां सामूहिक पार्थिव शिवलिंग पूजन एवं महारुद्राभिषेक संपन्न

जयपुर। शिव महापुराण कथा समिति, जयपुर द्वारा रविवार को 18वां, 251 सामूहिक पार्थिव शिवलिंग पूजन एवं महारुद्राभिषेक का विशाल एवं अनूठा आयोजन राजावास, सीकर रोड स्थित अनंतम गार्डन में संपन्न हुआ।

समिति के महामंत्री अरुण खटोड़ ने बताया कि वर्ष 2008 से समिति प्रत्येक वर्ष सामूहिक पार्थिव शिवलिंग पूजन एवं महारुद्राभिषेक का आयोजन करवाती आ रही है।

पार्थिव शिवलिंग पूजन एवं महारुद्राभिषेक में भाग लेने वाले प्रत्येक यजमान दम्पति द्वारा अलग-अलग पार्थिव शिवलिंग अपने समक्ष रखकर सस्वर, सविधिक, बृहद रुद्र पाठ द्वारा शिव पूजन-अर्चन एवं अभिषेक किया गया। पार्थिव शिवलिंगों का निर्माण प्रसिद्ध युवा मूर्तिकार भुवनेश जैमिनी द्वारा किया गया।

कोषाध्यक्ष चंद्र प्रकाश खंडेलवाल ने बताया कि कार्यक्रम की शुरूआत कलश यात्रा से हुई। यात्रा में यजमान दंपति मस्तक पर शिवलिंग और कलश रख शिव भजन करते हुए नाचते गाते पूजन स्थल पहुंचे।रुद्राभिषेक के लिये लक्ष्मीनारायण चौधरी व प्रकाश सिंह गौरा परिवार के सहयोग से हरिद्वार से विशेष रूप से 20,000 लीटर गंगाजल का टैंकर उपलब्ध करवाया गया व कैलाश मानसरोवर, गलता एवं तीर्थराज पुष्कर का जल भी गंगाजल में सम्मिलित किया गया।

सामूहिक पार्थिव शिवलिंग पूजन एवं महारुद्राभिषेक का आयोजन हुआ।

■ कोषाध्यक्ष चंद्र प्रकाश खंडेलवाल ने बताया कि कार्यक्रम की शुरूआत कलश यात्रा से हुई

वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रकाश माहेश्वरी, त्रिलोक खंडेलवाल ने बताया कि पार्थिव शिवलिंगों का 108 दुर्लभ औषधियों के जल से अभिषेक किया गया। इसके अतिरिक्त दूध, गंगाजल, नारियल जल, गन्ने एवं भांग का रस और विभिन्न द्रव्यों का उपयोग भी हुआ।

समिति अध्यक्ष व महारुद्राभिषेक आचार्य सुरेश जी शास्त्री ने बताया कि पार्थिव शिवलिंग पूजन एवं महारुद्राभिषेक में भाग लेने वाले प्रत्येक यजमान दम्पति द्वारा अलग-अलग पार्थिव शिवलिंग अपने समक्ष रखकर सस्वर, सविधिक, बृहद रुद्र पाठ द्वारा शिव पूजन-अर्चन एवं अभिषेक किया गया। समिति के संयोजक अर्जुन सिंह राठौड़ ने बताया कि कार्यक्रम में अवधेशाचार्य महाराज (गलता पीठ), सुदर्शनाचार्य महाराज (मंदिर घाट के बालाजी), संत राघवाचार्य महाराज, संत अमरनाथ महाराज ने कार्यक्रम में पधारकर अपने आशीर्वाद से कार्यक्रम को और अधिक भक्तिमय बना दिया। कार्यक्रम में गोपाल मोदी, श्याम गुप्ता, सत्यप्रकाश वर्मा, सुमित खटोड़, श्याम गुप्ता, प्रमिल श्रीकांत पुरोहित, दीपक गोयल कुँजबिहारी शर्मा, अनिल खटोड़, कालू प्रजापत, बालकिशन शर्मा, सुनील टांक, ओमप्रकाश, हरीश बागड़ी, नवल सिंह सहित कार्यकर्ता बंधु कार्यक्रम की सफलता के लिए तन-मन से रात-दिन जुटे हुए थे।

शहीद स्मारक पर धरने का 102वां दिन

जयपुर। राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी के अध्यक्ष व नागौर से सांसद हनुमान बेनीवाल ने रविवार शाम शहीद स्मारक, जयपुर पर मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि राजस्थान की युवा पीढ़ी के साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ यह आंदोलन अब 102वें दिन में प्रवेश कर चुका है। उन्होंने कहा,

100 दिन सरकार के खिलाफ लड़ना मामूली बात नहीं है, यह जनविरोध की जड़ से निकली चेतना है। बेनीवाल ने कहा कि भर्ती 2021 को रद्द करने और के पूर्ण पुनर्गठन की मांग को लेकर उन्होंने पहले 70 दिन खुद लगातार धरना दिया और फिर संसद सत्र के चलते दिल्ली जाना पड़ा, लेकिन वहां भी उन्होंने लोकसभा में यह मुद्दा मजबूती से उठाया,उन्होंने कहा सरकार के खिलाफ यह लड़ाई राजस्थान के मेहनतकश युवाओं के हितों के लिए लड़ी जा रही है,उन्होंने कहा राजस्थान का युवा अब सरकार के खिलाफ बड़े स्तर पर मोर्चा खोलेगा।

Celebrating the Spirit of Single Working Women

When did you last celebrate the superwomen juggling work and life solo? Yes, it is all about the single working women out there! Single Working Women's Day falls on August 4th, a day set aside to cheer for these amazing individuals. It's a day packed with gratitude for their hard work, dedication, and the unique challenges they tackle head-on. This day is a big shout-out to the contributions single working women make every day. Their achievements are monumental from empowering through their careers to managing life's curveballs solo. The day highlights the need for gender equality, supports single moms, and focus on the sheer grit and grace of single women everywhere.

#DID YOU KNOW

Manmade Fruits

How humans engineered these amazing fruits!

Fruits often seem like nature's perfect gifts, but many of the ones we eat today are the result of centuries of human ingenuity and selective breeding, and, more recently, genetic engineering. From the vibrant pink pineapple to the juicy tangelo, these fruits have been shaped, enhanced, and sometimes even created by humans to improve flavour, appearance, and resilience. Here's how five popular fruits owe much of their characteristics to human intervention!

1. Pink Pineapples

Pink pineapples are a relatively recent development made possible through genetic modification. Unlike traditional pineapples with yellow flesh, pink pineapples have a naturally pink interior due to higher levels of lycopene, the antioxidant that also gives tomatoes and watermelons their red colour. Scientists genetically engineered pink pineapples by suppressing an enzyme that breaks down lycopene during ripening. The result is a sweeter, juicier pineapple with a unique pink hue.

2. Grapefruits

Grapefruits are believed to have originated in the 18th century as a natural hybrid between sweet orange and pomelo, two other citrus fruits. Humans quickly recognized their potential and began selectively breeding them for larger size, sweeter taste, and less bitterness. Modern grapefruit varieties have been developed to reduce the sharp bitterness and improve juiciness, making them a breakfast staple worldwide.

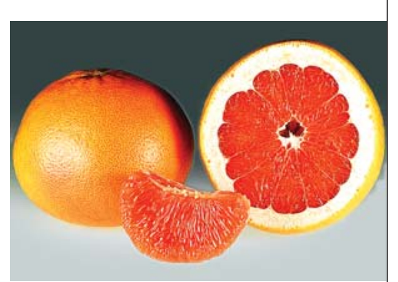

Some modern grapefruit cultivars are also bred to be seedless or have thinner rinds for easier consumption.

3. Lemons

Lemons are thought to be a hybrid between bitter orange and citron, likely originating in Asia. Early growers selectively bred lemons to improve their sourness, juice content, and size. Unlike many wild citrus fruits that are quite bitter or seedy, cultivated lemons have been engineered to provide the perfect balance of tartness and fragrance. In recent decades, breeders have also worked to develop varieties

resistant to diseases and pests, ensuring that lemon crops remain productive.

4. Tangelos

Tangelos are a man-made hybrid fruit created by crossing tangerines and pomelos (or sometimes grapefruits). The goal was to combine the sweetness and thin skin of tangerines with the size and juiciness of pomelos. This hybridization resulted in tangelos, known for their juicy, tangy flavor and easy-to-peel skin. Tangelos are a great example of human-driven

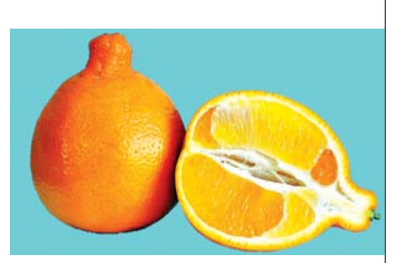

hybrid fruits designed to offer the best of two worlds.

5. Oranges

Oranges, especially the sweet orange varieties, are themselves a product of natural and human-driven hybridization, believed to have originated from crosses between pomelos and mandarins. Over thousands of years, humans have selectively bred oranges to enhance sweetness, juice content, and peel thickness. The vast array of orange varieties, from navel to blood oranges, have been developed through crossbreeding and grafting techniques.

These fruits showcase how human intervention, from ancient hybridization to modern genetic engineering, has transformed nature's wild offerings into the flavourful, beautiful, and convenient fruits on our tables today. Whether through crossbreeding or biotechnological innovations, human ingenuity continues to shape the fruits we love, ensuring that they meet our tastes and agricultural challenges.

Submarines Too Need Looking Up

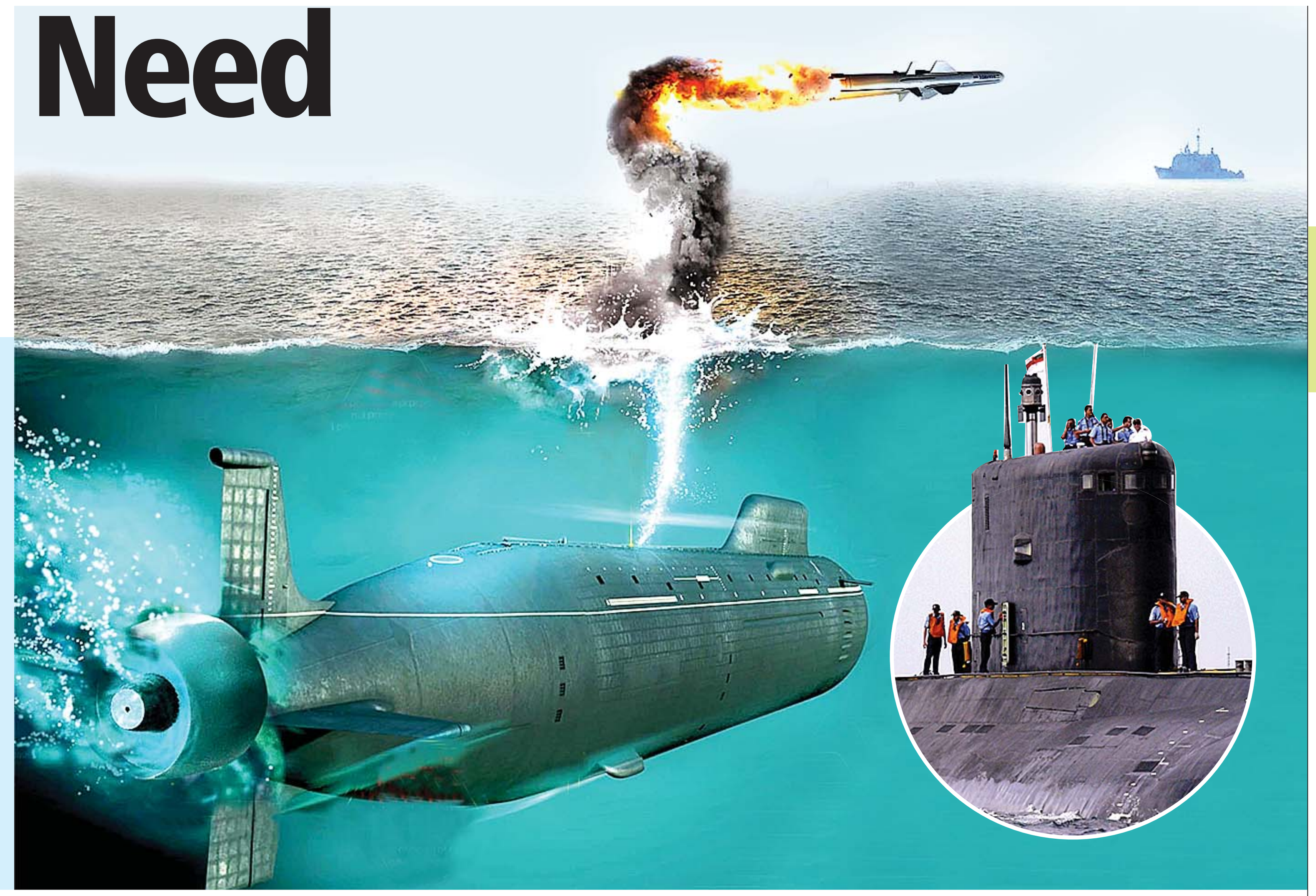

Submarines derive their strength from their ability to stay underwater and surprise the enemy. Both, air independent propulsion and lithium-ion battery technology are set to transform the existing paradigm of SSK operations and offer far greater capability to the Commanding Officer on board to shape the maritime battlespace.

Commodore Anil Jai Singh (Retd)

Submarines constitute the cutting edge of a Navy's offensive capability. They operate below the surface of the sea, stealthy and concealed, and wait for the right moment to spring a devastating attack on the enemy with their lethal weapons. However, that is not all that submarines do. They are ideally suited to cover a wide spectrum of roles from nuclear deterrence at the strategic level in the open ocean to clandestine operations in low intensity scenarios in restricted and shallow waters. Submarines are basically of three types.

Nuclear Powered, Nuclear Armed Ballistic Missile Submarines (SSBN)

SSBNs are large platforms, driven by nuclear propulsion and carrying ballistic missiles, armed with nuclear MIRV warheads. Their principal role is strategic nuclear deterrence and it is their ability to annihilate the world several times over with their nuclear MIRV armed intercontinental ballistic missiles (ICBM), with ranges upto 12000 kms, that has made them the ultimate deterrent against a nuclear strike. They are the most credible platforms to either launch a first strike or retaliate with a debilitating second strike on the enemy. During the four decade long cold war, which 'raged' for over four decades, it was the presence of SSBNs on both sides that ensured it remained 'cold' despite numerous provocations. SSBNs are presently operated by six countries, which include the five permanent members of the UN Security Council (US, UK, Russia, China, France) and India.

Nuclear Powered, Conventionally Armed Attack Submarines (SSN)

SSNs are nuclear powered submarines, but unlike SSBNs, they are armed with conventional land attack capable cruise missiles and heavyweight torpedoes. In the contemporary battlespace, SSNs are perhaps the most lethal weapons in a navy's arsenal, and an essential and integral to any blue water navy. SSNs can do high speeds underwater, are not limited either in endurance or range and can deliver effect at sea or on land from long stand-off ranges. They are perfectly suited for open ocean operations; the presence of even a couple of SSNs can effectively constrain the options available to the enemy's surface forces, including an aircraft carrier battle group. Like SSBNs, SSNs too are the preserve of the five permanent members of the UN Security Council. India, which has periodically operated SSNs taken on lease from Russia, is working on developing an indigenous SSN. (CCS approval has been accorded for two, though a figure of six is part of the long-term plan.) Other medium powers like Australia (AUKUS programme) and Brazil (in collaboration with the French) are also planning to acquire SSNs. Countries like Japan and South Korea, which have the technology, may also venture down this path if their security imperatives so dictate.

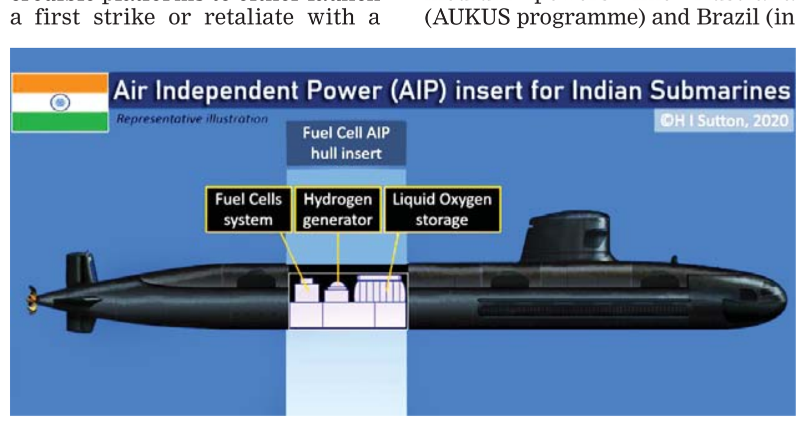

The fuel cell AIP (Air Independent Power) system developed by DRDO and Larsen & Toubro.

#MODERN WARFARE

Conventional Diesel-Electric Attack Submarines (SSK)

Non-nuclear submarines, which form the bulk of the global numbers, are powered by a diesel-electric propulsion system and are therefore commonly referred to as conventional submarines or SSKs. These are operated by more than forty navies worldwide. Submarines are an aspirational capability, and therefore, on the wish list of many small navies. In the Indo-Pacific region itself, sixteen navies operate SSKs. These include India, Pakistan, Bangladesh, Myanmar, Iran, Thailand, Singapore, Malaysia, Indonesia, Australia, South Korea, Japan, Vietnam, China, Taiwan and South Africa. In a littoral battlespace, SSKs are powerful instruments of 'sea denial,' and can also exercise limited sea control. However, their dependence on battery power limits their endurance and range of operations and necessitates their planning from the deep to periscope depth to raise a snorkel mast, for taking in fresh air

to run the diesel generators to charge the batteries, which in turn provide the propulsion power to the electric motor. Hence, this limitation not only makes the submarine vulnerable to detection during its charging cycle, particularly in a dense ASW (Anti-submarine warfare) environment in a littoral area of operations, but also constrains the freedom of movement of the Commanding Officer as his tactical manoeuvring has to constantly factor in his submarine's residual battery capacity.

Over the years, advancements in battery technology have mitigated this vulnerability to some extent, but that has been countered by improvements in anti-submarine warfare technologies like more powerful airborne radars, ship-borne sonars, dipping sonars, sonobuoys and Magnetic Anomaly Detectors (MAD) to name a few. Therefore, the inherent limitations on endurance, speed and concealment continue. This has driven innovation in submarine propulsion technologies, two of which will shape submarine operations in the next decade or so. These are Air Independent Propulsion (AIP) systems and lithium-ion batteries. Both these technologies have reduced a submarine's vulnerability to detection by improving its dived endurance, its range of operation and its ability to sustain high speeds underwater for longer durations than at present.

> AIP systems have more than trebled the average dived endurance of conventional submarines, thus addressing a major operational limitation. While non-AIP submarines are required to charge their batteries by exposing their masts above the surface at least once every two-three days, AIP fitted submarines could continue without a charge for upto 15 days at a stretch. Almost 100 submarines or so worldwide are fitted with AIP systems.

Air Independent Propulsion

AIP systems have been in operation since the late 1980s, but have become far more common on-board submarines. Most of the leading European submarine manufacturers began developing AIP systems using different technologies. These included the Sterling Engine system, the fuel cell systems and the MESMA system. Of these, the Swedish Navy was the first to adopt the Stirling engine system and continues to use it on their current submarines as well. China and Japan have also adopted this technology on their submarines. The MESMA system, developed by Naval Group France, has been less successful and is being used only on the three Agosta 90B submarines of the Pakistan Navy.

By far, the most successful technology has been the fuel cell AIP pioneered by the German submarine manufacturer, Thyssenkrupp Marine Systems (tkMS). The German fuel cell AIP system has been in operation for over 25 years and is presently installed on 52 submarines worldwide. In addition, the South Korea also uses a fuel cell AIP derived from the German one.

Navantia, the Spanish submarine manufacturer, has also developed a fuel cell system using bio-ethanol instead of hydrogen. Called 'BEST' (Bio-Ethanol Stealth Technology), it is yet to be installed on a submarine. The Spanish Navy hopes to operationalise it by 2028-29 on its third and fourth S-80 class submarines.

Russia also claims to have successfully developed a fuel cell AIP system called the Kristall 27-E. This has been fitted on one of its Lada class submarines, but its efficacy still remains in doubt and it has not yet become a standard fitment on its operational submarines.

Whither India

The Indian Navy does not have an AIP fitted submarine in its inventory as yet. The absence of this capability, especially on the six new Kalvari class (Scorpene) submarines, is a major operational constraint which needs to be addressed. These submarines, built indigenously in Mumbai in collaboration with Naval Group of France, are scheduled to be retrofitted with an indigenously designed and built fuel cell AIP system in the future. Hopefully, the installation of this system on board the Kalvari class submarines will begin in a couple of years from now. Its successful operationalisation may take another few years. Fortunately, one of the criterias for the foreign partner in the P75 (I) submarine programme for the indigenous construction of six SSKs is then availability of a proven fuel cell AIP system.

AIP systems have more than trebled the average dived endurance of conventional submarines, thus addressing a major operational limitation. While non-AIP submarines are required to charge their batteries by exposing their masts above the surface at least once every two-three days, AIP fitted submarines could continue without a charge for upto 15 days at a stretch. Almost 100 submarines or so worldwide are fitted with AIP systems.

Our second Ballistic Missile.

Lithium-Ion Batteries

The second major breakthrough has been the successful development of lithium-ion batteries as a replacement for the traditional lead-acid batteries on board SSKs. Connected to AIP systems, these too can be charged while dived. A SSK's dived endura limiting factor. Perhaps, as the development progresses and this technology gains wider acceptance, the costs will reduce.

Conclusion

Submarines derive their strength from their ability to stay underwater and surprise the enemy. Both, air independent propulsion and lithium-ion battery technology are set to transform the existing paradigm of SSK operations and offer far greater capability to the Commanding Officer on board to shape the maritime battlespace.

rajeshsharma1049@gmail.com

#FAIRFIELD BY MARRIOTT

PahadiFare @ Fairfield

The ten day long Pahadi Zaika food festival, currently on at Fairfield by Marriott, serves the best of Garhwal, Uttarakhand and Himachal.

There is a Pahadi saying, "Parmatme jitna swas likhira titna grass likhira." Translated, it means, "God allocated food until your life ends." Yet, it seems that one life is too short to savour the rich variety of Pahadi cuisine, which comes from Himachal, Garhwal or Kumaon.

Designed to give energy during the bone chilling winter, it is not oil or fat drenched nor is it heavy duty stuff like the North Indian food of the plains, specially the winter spread.

Sourced from the local produce which is vegetables, herbs, lentils and micro greens as also the meats. It is flavoursome, fresh, nutritional and the minimal use of spices impart a natural flavour, each dish different from the other.

The ten day long Pahadi Zaika food festival, currently on at Fairfield by Marriott, serves the best of Gharwal, Uttarakhand and Himachal and it is a little like discovering the mountainous region, bite by bite.

The Pahadi Thali had iconic dishes of all three regions.

BHATT KI CHURKANI: *Kale Bhatt* means black soybean dal, which is cultivated only in Uttarakhand. *Kale Bhatt Ki Churkani* is the main dish of the people of Kumaoni region. Made on special occasions, Bhatt ki Churkani is rich in fibre, making it delicious and nutritious.

CHAINSU: *Chainsu* is primarily made with black urad dal. Its tangy flavor, served with badi, a type of steamed rice, is almost like meal in a dish. An energy booster and rich in nutrients too.

GAHAT KI DAL (Kulthi dal) (Horse gram): *Gahat ki dal*, also known as kulthi dal, is a very tasty and nutritious dal from Uttarakhand.

KAFULI: It is a happy mix of spinach and fenugreek leaves cooked in an iron vessel. It derives a unique flavour, and indeed, is finger licking.

ARBI KE GUTKE: *Arbi Ke gutke* is primarily made by pahadi Arbi. Eating Taro root can cure many diseases, especially problems related to digestion and heart. It is rich in fiber, which helps relieve constipation and improve digestion. Additionally, the fiber present in Taro is also helpful in reducing cholesterol levels and reducing the risk of heart diseases, somewhat similar to *Aloo ke Gutke,* both were pan stirred, soft from inside and crispy from outside, also left a farm fresh effect which comes only from a rainfed vegetation from a mountainous region.

PAHADI SALAD: *Pahadi salad* normally uses pahadi cucumber carrot tomato cut in finger shape, and topped with pahadi salt and is consumed regularly.

KAUDO KI ROTI: Farmed in mountain areas and is known by different names MANDUA, RAGI, KAUDO ROTI. A must have for all weight watchers and was a great shift from the usual gluten-loaded wheat roti.

PAHADI RAITA: The use of grated cucumber with Pahadi masalas and the generous use of mint and coriander was a real treat.

JHANGORA FIRNI: A variety of millet. In English, 'jhangora' is known as Barnyard Millet. It's a type of millet grain that's cultivated in the Himalayan region of Uttarakhand. It's also referred to as 'Samak' in some regions. Its low glycemic index makes it a go-to dessert. It also enjoys the status of one of the most popular Garhwali dishes.

SINGORA: Made from khoya wrapped in a Maalu leaf, it is served in a conical shape as a delight. It is famous as an Almora speciality from the Kumaoni region.

Rishikesh and Haridwar may not permit non-vegetarian, but slow cooked mutton with local spices, as included in the Thali, is a very popular dish in Pahadi cuisine. The Pahadi chicken finger food, stir fried in a paste of mint and coriander, needs special mention.

The Chamba style freshwater fish done in a mix of ginger, garlic, coriander leaves, turmeric and red chillies was relished as much as the Kullu Trout. What tops everyone's list of must haves is a wonderful non-veg treat, a Himachali style starter, *jakhiya kukkad*, and was 'too good' as most opined.

THE WALL

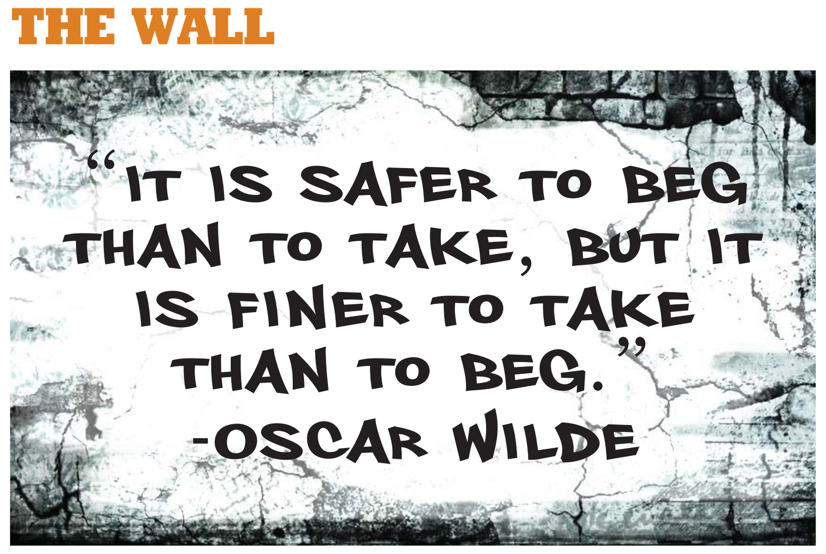

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

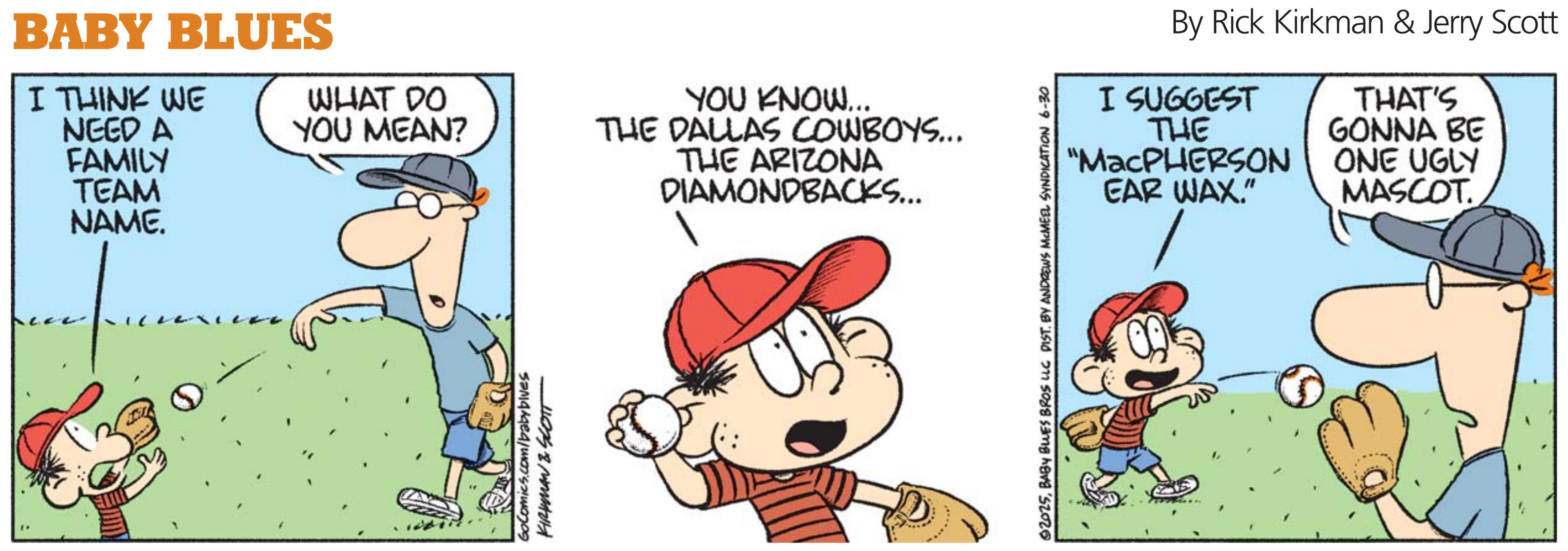

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

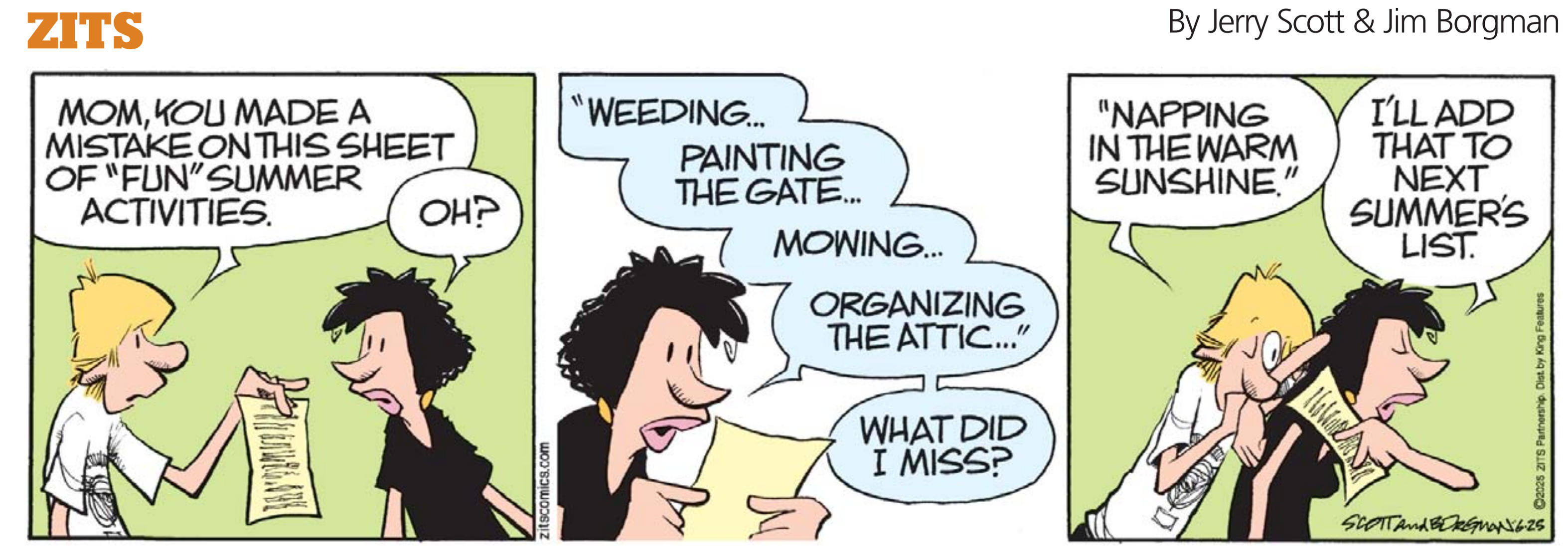

कार चोर गिरोह का पर्दाफाश, तीन आरोपी गिरफ्तार, 12 कारें व इंजन जब्त

पकड़े गये बदमाशों ने अलग-अलग क्षेत्रों से ईको कारों का अपना निशाना बनाया

कोटा, (निसं)। रेलवे कॉलोनी पुलिस टीम ने कार चोरी की दर्ज रिपोर्ट पर कार्रवाई करते हुए कार चोर गिरोह का पर्दाफाश किया है और मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे चोरी की गई 12 कारों सहित एक कार का इंजन बरामद किया है। पकड़े गये बदमाशों ने अलग-अलग क्षेत्रों से ईको कारों का अपना निशाना बनाया। पकड़े गये गिरोह के सदस्य पिछले लम्बे समय से कारें चोरी करते हुए आ रहे थे।

शहर पुलिस अधीक्षक तेजस्वनी गौतम ने बताया कि 30 जुलाई को परिवादी मोहम्मद आशिक ने रेलवे कॉलोनी थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई। परिवादी ने रिपोर्ट में बताया कि 27 जुलाई को एक सिल्वर रंग की उसकी ईको कार जिसको घर के सामने लॉक लगाकर खड़ी की थी, अगले दिन 28 जुलाई की सुबह जब घर के बाहर निकला और कार मौके पर नहीं थी, जिसको कोई अज्ञात चोरी करके ले गया। शहर एसपी ने बताया कि फरियादी की रिपोर्ट पर मामला दर्ज किया गया। शहर एसपी ने कहा कि मामले को गंभीरता से लेते हुए शहर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दिलीप सैनी के निर्देशन में पुलिस उपअधीक्षक गंगासहाय शर्मा के सुपरविजन में रेलवे कॉलोनी थानाधिकारी रामस्वरूप मीणा के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया। शहर एसपी ने बताया कि रेलवे कॉलोनी थानाधिकारी के नेतृत्व में गठित टीम ने 100 से अधिक सीसीटीवी फुटेज खंगाले, टीम ने तकनीकी सहायता व मुखबीर की सूचना पर कार चोर गिरोह का पर्दाफाश करते हुए सूर्य नगर निवासी सैययद औसाफ अली उर्फ शानू (34) को रेलवे कॉलोनी इलाके से गिरफ्तार किया, जिससे पूछताछ पर वक्फ नगर दादाबाड़ी निवासी आदिल (29) और छत्रपुरा तालाब विज्ञान नगर निवासी मोहम्मद हुसैन उर्फ बबलू (34) को गिरफ्तार किया गया।

शहर एसपी ने बताया कि पकड़े गये बदमाशों ने पूछताछ के दौरान थाना रेलवे कॉलोनी के साथ-साथ दादाबाड़ी, विज्ञान नगर बोरखेड़ा, कैथूनीपोल और कोटा ग्रामीण के सुल्तानपुर से चोरी करने की वारदात को कबूला है। बदमाश कार चोरी करके उनको मॉडिफाई करके तीन से पांच लाख तक कार को बेच देते थे। शहर एसपी ने बताया कि पकड़े गये बदमाशों से पूछताछ के आधार पर चोरी की गई सात वाहनो एवं एक ईको कार के इंजन की बरामदगी की है। आरोपी इतने शातिर थे कि आरोपियों ने चोरी की गई पांच कारों के इंजन नम्बर, चैचिस नम्बर और बॉडी मोर्डिफाई कर दी। उन पांच सदिग्ध कारों को भी डिटेन किया गया। पकड़े गये आरोपियों से अनुसंधान जारी है।

शहर पुलिस अधीक्षक ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी सैययद औसाफ अली उर्फ शानु सूर्य नगर का निवासी है। शहर एसपी ने बताया कि मामले में सामने आया कि सैययद औसाफ अली जो सुलतानपुर में अपनी मौसी के पास रहने के दौरान उस पर कर्जा हो गया और उसके बाद वह कोटा मे रहने लगा और कर्जा अधिक होने और कोई काम नही मिलने पर आरोपी ने 2023 में विज्ञान नगर इलाके से एक कार चुराई और विज्ञान नगर निवासी मोहम्मद हुसैन उर्फ बल्लु को बेच दी, पकड़ा गये आरोपी बल्लू का विज्ञान नगर में ही कार वाशिंग व कार रिपेयरिंग का काम है। मामले में सामने आया कि आरोपी सैयद औसाफ अली उर्फ शानु, मोहम्मद हुसैन उर्फ बल्लू और आदिल ने तीनों ने मिलकर जल्दी अमीर बनने व शौक को पूरा करने के लिये कारें चोरी की योजनाएं बनाई और ईको कार की डिमांड ज्यादा होने से रात्रि के समय सुनसान स्थानों पर खड़ी ईको कारों को निशाना बनाते थे और देशी तकनीकी से शानू कारों के लॉक तोड़कर कारों को चुराता था और आदिल, बल्लू को संभला देता था।

कोटा रेलवे कॉलोनी पुलिस टीम ने चोरी की गई कारों सहित तीन जनों को गिरफ्तार किया।

■ पकड़े गये गिरोह के सदस्य पिछले लम्बे समय से कारें चोरी करते हुए आ रहे थे

ट्रक यूनियन ने मांगों को लेकर प्रदर्शन किया

मांगों को लेकर ट्रक यूनियन ने टायर जलाकर प्रदर्शन किया।

■ प्रदर्शनकारी वाहन चालकों की रद्द की गई आरसी को फिर से बहाल करने और ई-रवन्ना चालान को रद्द करने की मांग कर रहे हैं

रतनगढ़, (निसं)। रतनगढ़ ट्रक यूनियन ने अपनी मांगों को लेकर संगम चौराहा मेगा हाइवे पर विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान यूनियन के सदस्यों ने टायर जलाकर और सरकार के खिलाफ़ नारे लगाकर अपना गुस्सा ज़ाहिर किया। यह प्रदर्शन युवा कांग्रेस नेता रामवीर सिंह राईका, रतनगढ़ ट्रक यूनियन के अध्यक्ष भेरू सिंह भोजासर और उप सरपंच गोपाल ख्यालिया के नेतृत्व में हुआ।

प्रदर्शनकारी वाहन चालकों की रद्द की गई आरसी को फिर से बहाल करने और ई-रवन्ना चालान को रद्द करने की मांग कर रहे हैं। युवा कांग्रेस नेता रामवीर सिंह राईका ने कहा कि ट्रक यूनियन की अनिश्चितकालीन हड़ताल को चार दिन हो चुके हैं, लेकिन राजस्थान सरकार ने अभी तक इस पर कोई ध्यान नहीं दिया है। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर जल्द ही उनकी मांगों को नहीं माना गया तो वे और भी बड़ा और उग्र आंदोलन करने के लिए मजबूर होंगे, जिसकी पूरी ज़िम्मेदारी प्रशासन की होगी।

इस विरोध प्रदर्शन में छात्र नेता संदीप सिंह भोजासर, खजान सिंह खोतड़ी, विक्रम सिंह बछरारा, ज्ञान सिंह राईका, राजकुमार पारीक, छात्र नेता देवकीनंदन मांहिच, महावीर स्वामी, राजकुमार प्रजापत, रंजीत पूनिया, नेमीचंद प्रजापत, हनुमान प्रजापत, सांवरमल प्रजापत, नानूराम स्वामी, रामनिवास बाबू सर, मुकेश हुडेरा, दीपचंद स्वामी सहित कई गणमान्य लोग मौजूद थे।

205 आरोपी पकड़े

रावतभाटा, (निसं)। महानिरीक्षक पुलिस रेंज उदयपुर गौरव श्रीवास्तव के निर्देश पर जिला पुलिस ने अपराधियों की धरपकड़, गिरफ्तारी व एरिया डोमिनेंश के लिए जिले के समस्त पुलिस अधिकारी व कर्मचारियों की 69 विशेष टीमों द्वारा विभिन्न संदिग्ध स्थानों पर दबिश देकर कार्रवाई करते हुए कुल 205 अपराधियों को गिरफ्तार किया है। कार्यवाही के दौरान दो प्रकरण एनडीपीएस एक्ट, 6 प्रकरण आबकारी अधिनियम, एक प्रकरण आर्म्स एक्ट व एक प्रकरण आरएनसी एक्ट में दर्ज किया गया।

निजी अस्पताल में गर्भवती महिला को एक्सपायरी इंजेक्शन लगाए

■ गुस्साए परिजनों ने अस्पताल के मुख्य गेट के बाहर धरना शुरू कर दिया

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले के श्रीकरणपुर कस्बे में एक निजी अस्पताल पर गर्भवती महिला को एक्सपायरी इंजेक्शन लगाने का मामला सामने आया है।

परिजनों का आरोप है कि निजी हॉस्पिटल में वार्ड दो निवासी सीमा पत्नी चेनाराम को सर्जरी के दौरान पांच और सर्जरी के बाद तीन एक्सपायरी इंजेक्शन लगाए गए। जैसे ही परिजनों को इस बात की जानकारी मिली, वे आक्रोशित हो गए। माकपा के तहसील सचिव मुकेश मोहनपुरिया, पीड़ित महिला के परिजन और कस्बे के अन्य लोग अस्पताल पहुंचे। गुस्साए परिजनों ने अस्पताल के मुख्य गेट के बाहर धरना शुरू कर दिया। धरने की सूचना पर श्रीकरणपुर पुलिस मौके पर पहुंची। हालात को देखते हुए अस्पताल परिसर में एहतियातन पुलिस बल तैनात किया गया। परिजनों ने अपने आरोपों के समर्थन में एक्सपायरी इंजेक्शन के रैपर भी दिखाए हैं। अस्पताल प्रबंधन की ओर से अभी तक इस मामले में कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया है। वर्तमान में अस्पताल प्रबंधन और पीड़ित पक्ष के बीच बातचीत की कोशिश की जा रही है। मामला अभी तक सुलझ नहीं पाया है। स्थानीय लोग स्वास्थ्य विभाग से जांच की मांग कर रहे हैं। घटना के बाद लोगों में आक्रोश है।

हनीट्रैप के जरिये ब्लैकमेल करने का आरोप

मदनगंज-किशनगढ़, (निसं)। अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट जितेन्द्र रैया ने इंस्टाग्राम व फेसबुक पर अश्लील वीडियो व फोटो पोस्ट करने की धमकी देकर रूपये ऐंठने के आरोप में महिला के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने का आदेश दिया है। परिवादी राजू सैनी ने वकील प्रमोद शर्मा व गिरिराज शर्मा के जरिए परिवाद दायर कर बताया कि उसकी सोशल मीडिया पर एक महिला गोल्डी शर्मा निवासी बिलासपुर से मित्रता हो गई और दोनों के मध्य वीडियोकाल से बाते होने लगी। इसी दौरान महिला ने परिवादी का वीडियो बनाकर एडिटिंग कर वायरल करने की धमकी दी। साथ ही रूपये की मांग किये जाने पर पीड़ित लोकलाज के भय से रूपये देने लग गया। इस बीच महिला ने सोने की चेन की मांग की। मना करने पर अश्लील वीडिओ फेसबुक व अन्य शोसल मीडिया पर शेयर कर दिये। साथ ही परिवादी की पत्नी के नाम फर्जी आईडी बनाकर वीडियो वायरल कर दिए। समझाइश नाकाम होने पर पीड़ित ने एडवोकेट प्रमोद शर्मा व गिरिराज शर्मा के जरिये अदालत में परिवाद प्रस्तुत कर न्याय की गुहार लगाई। अदालत ने मदनगंज थाना पुलिस को आरोपी महिला के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने का आदेश दिया है।

चेक बाउंस मामले में पूर्व पार्षद को जेल

कोटा, (निसं)। बोरखेड़ा पुलिस टीम ने चेक बाउंस के पुराने मामले में फरार चल रहे कांग्रेस के पूर्व पार्षद आनंद पाटनी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया, जहां से पूर्व पार्षद को न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया गया। बोरखेड़ा थानाधिकारी देवेश भारद्वाज ने बताया कि पूर्व पार्षद आनंद पाटनी के खिलाफ साल 2015 में एक चेक बाउंस का मामला था। आरोपी के खिलाफ न्यायालय से स्टैंडिंग वारंट प्राप्त हुआ था। पूर्व पार्षद आनंद पाटनी मामले में लम्बे समय से फरार चल रहा था, फरारी काट रहे आरोपी आनंद पाटनी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया।

स्कूटी सवार से लूट मामले में एक गिरफ्तार

भीम, (निसं)। भीम थाना अंतर्गत आवलसारा घाटा के पास नेशनल हाइवे पर स्कूटी सवार से लूट के मामले में भीम पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।

सीआई भंवरलाल कुमावत ने बताया कि किशोर पिता रतनलाल रैगर निवासी गोविन्दगढ़ थाना पीसागंन जिला अजमेर ने दर्ज रिपोर्ट में बताया कि वह अपनी स्कूटी पर सवार होकर आणद गुजरात से अपने गांव जा रहा था। हाइवे पर भीम से आगे नंदावट समय रात्रि को पहुंचा जहां पर दो बाईकों पर सवार चार व्यक्ति मेरे पिछे आये। जिन्होंने मुझे आवलसारा घाटा के पास रोककर मारपीट की तथा उसकी स्कूटी एंव बैग में रखा अन्य सामान लूटकर ले गये तारागढ़ ब्रीज के उपर सुनसान जगह छोड़कर भाग गये। भीम पुलिस ने मामला दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुये जिला पुलिस अधीक्षक ममता गुप्ता पुलिस निर्देशानुसार व महेन्द्र पारीक अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, पारस चौधरी वृताधिकारी वृत भीम के निर्देशन में थानाधिकारी भंवरलाल कुमावत पुलिस निरीक्षक, पुलिस कांस्टेबल लखन, पुलिस कांस्टेबल दिनेश कुमार आदि की टीम द्वारा अज्ञात मुल्जिमान द्वारा की गई घटना पर त्वरित कार्रवाई करते हुये घटनास्थल के आसपास स्थित सीसीटीवी फुटेज चैक किये गये। सीसीटीवी फुटेज, कॉल डिटेल विशलेषण व बीटीएस के आधार पर अज्ञात मुल्जिमान की तलाश की गई। तलाशी दौरान तीन अगस्त को अभियुक्त अनिलसिह पिता लक्ष्मणसिंह रावत निवासी कुकरखेडा पुलिस थाना भीम जिला राजसंमद के खिलाफ अपराध प्रमाणित होने से मुल्जिम को गिरफ्तार किया गया। पूर्व में इसी प्रकरण में एक अन्य मुल्जिम मनदीपसिंह पिता भूरसिंह रावत निवासी नया गांव पुलिस थाना जवाजा जिला ब्यावर को गिरफ्तार किया जाकर प्रकरण में लूट की गई स्कूटी को बरामद किया जा चुका है।

रीट-2022 के चयनित अभ्यर्थियों ने मांगों को लेकर धरना दिया

झुंझुनूं, (निसं)। रीट-2022 के चयनितों को आज भी नियुक्त का इंतजार है। जिले से दीपक सरावग ने बताया कि रीट लेवल-2 अभ्यर्थियों के साथ लगातार अन्याय हो रहा है। एक बार पेपर आउट होने की वजह से लेवल-2 रद्द कर दी गई। रीट-2022 भर्ती के चयनित अभ्यर्थियों को आज तक नियुक्ति नहीं मिली है। प्रोविजनल के नाम पर कर्मचारी चयन बोर्ड द्वारा परिणाम जारी नहीं किया गया। उसके बाद भर्ती पर विवादित प्रश्नों पर कोर्ट से स्टे आ गया। उसके बाद कोर्ट का आदेश संशोधित परिणाम जारी करने का आया। अभ्यर्थी लगातार बोर्ड का चक्कर काटते रहे। सरकार और बोर्ड पर दवाब बनाया धरना प्रदर्शन आंदोलन किया, जिसके बाद परिणाम जारी हुआ। अब परिणाम जारी हुए भी एक महीना बीत गया, लेकिन अभी तक जिला आवंटन नहीं हुआ। अभ्यर्थी लगातार नेताओं के चक्कर काट रहे हैं, ताकि उनकी सरकार सुने और उनके साथ इंसाफ हो। थक-हार कर चयनित बीकानेर निदेशालय के बाहर धरने पर बैठे। सरकार से उम्मीद है कि जल्द से जल्द नियुक्ति प्रदान करें। अगर जल्दी ही जिला आवंटित नहीं होता है तो अनिश्चितकालीन धरना बीकानेर निदेशालय के बाहर दिया जाएगा, जिसमें हजारों की संख्या में रीट चयनित शामिल होंगे। दीपक सरावग लगातार बेरोजगारों की आवाज उठाते रहे हैं। इस मौके पर जिला झुंझुनूं से दीपक चौधरी, पंकज शर्मा, सबचैन खान, अनिल बम्बोली, फिरोज अहमद, संदीप गुर्जर, आशीष, रोबिन, रहीश, निखिल, कृष्णकांत व प्रदेशभर से तमाम चयनित उपस्थित रहे।

रीट-2022 में चयनित अभ्यर्थी धरने पर बैठे।

कोटकासिम प्रधान को राहत, हाईकोर्ट को निलंबन वापस लेने की दी जानकारी

जयपुर। खैरथल-तिजारा जिले की कोटकासिम पंचायत समिति प्रधान विनोद कुमारी सांगवान को राहत मिली है। राज्य सरकार ने उनका निलंबन आदेश वापस ले लिया। इसकी जानकारी सरकार की ओर से हाईकोर्ट में दी गई। जिसके बाद जस्टिस अवनीश झिंगन की अदालत ने प्रधान की याचिका को निस्तारित कर दिया। याचिकाकर्ता प्रधान को ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग ने 28 अप्रेल को बीडीओ से मारपीट के आरोप में दोषी मानते हुए निलंबित कर दिया था, जिसे उन्होंने हाईकोर्ट में चुनौती दी थी।

याचिका में अधिवक्ता प्रदीप कलवानिया ने बताया कि प्रधान के खिलाफ बीडीओ संजय यादव ने 21 अप्रेल को मारपीट और अभद्रता करने का मामला दर्ज कराया था, जिसकी जांच कलक्टर की ओर से करवाई गई और 7 दिन में जांच पूरी कर प्रधान को दोषी मानते हुए विभाग ने निलंबित कर दिया। इसे अदालत में चुनौती देते हुए कहा कि चुने हुए जनप्रतिनिधि को केवल मामला दर्ज होने के आधार पर निलंबित नहीं किया जा सकता। नियमों के तहत मामले में ट्रायल शुरू होने के बाद ही निलंबन की कार्रवाई हो सकती है। कार्रवाई से पहले याचिकाकर्ता को किसी तरह की सुनवाई का मौका भी नहीं दिया गया। इसके साथ ही फरवरी में बीडीओ के द्वारा अभद्रता करने पर प्रधान के भी उसके खिलाफ परिवाद दिया था, लेकिन उस तथ्य को भी ध्यान में नहीं रखा गया। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने सरकारी अधिवक्ता से पूछा कि आप चुने हुए जनप्रतिनिधि के साथ इस तरह का व्यवहार कैसे कर सकते हैं। इस पर सरकारी अधिवक्ता ने मामले में सरकार से बात करने की बात कही और लंच बाद कोर्ट को निलंबन वापस लेने की जानकारी दी।

दौराई-गोड्डा-दौराई नई रेल सेवा का शुभारंभ, आमजन ने खुशी जताई

अजमेर, (कासं)। रेल यात्रियों को सौगात के इसी क्रम में दौराई-गोड्डा-दौराई नई रेल सेवा का शुभारंभ तीन अगस्त को केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी एवं उपमहापौर नगर निगम नीरज जैन की मौजूदगी में दौराई स्टेशन पर किया गया।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक बीसीएस चौधरी के अनुसार दौराई स्टेशन पर आयोजित इस कार्यक्रम के अंतर्गत गाड़ी संख्या 19603 दौराई-गोड्डा को अतिथियों ने मंडल रेल प्रबंधक राजू भूतड़ा सहित अन्य रेल अधिकारियों, कर्मचारियों व आमजन की उपस्थिति में 03.30 बजे हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस मौके पर केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने अपने उद्बोधन में अजमेर संसदीय क्षेत्र को नई ट्रेन की यह सौगात देने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव का आभार जताया।

उल्लेखनीय है कि रेलवे प्रशासन द्वारा अतिरिक्त यात्री यातायात को देखते हुए यात्रियों की सुविधा हेतु गाड़ी संख्या 19603, दौराई (अजमेर)-गोड्डा साप्ताहिक रेलसेवा 03 अगस्त 2025 से दौराई से प्रत्येक रविवार को 15.30 बजे रवाना होकर सोमवार को 22.20 बजे गोड्डा पहुंचेगी। इसी प्रकार गाड़ी संख्या 19604, गोड्डा-दौराई (अजमेर) साप्ताहिक रेल सेवा 5 अगस्त 2025 से गोड्डा से प्रत्येक मंगलवार को 5 बजे रवाना होकर बुधवार को 17.20 बजे दौराई पहुंचेगी। यह रेलसेवा मार्ग में अजमेर, किशनगढ़, फुलेरा, रींगस, नीमकाथाना, नारनौल, अटेली, रेवाडी, गुडगांव, दिल्ली, गाजियाबाद, अलीगढ़, टूण्डला, इटावा, गोविन्दपुरी, फतेहपुर, सुबेदारगंज, मिर्जापुर, चुनार, पं. दीनदयाल उपाध्याय, भभुआ रोड, सासाराम, डेहरी ऑन सोन, गया, तिलैया, नवादा, शेखपुरा, किऊल, झाझा, जसीडीह, देवघर, मोहनपुर, हँसडीहा व पोडैयाहाट स्टेशनों पर ठहराव करेगी।

■ केंद्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी ने अजमेर संसदीय क्षेत्र को नई ट्रेन की यह सौगात देने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव का आभार जताया

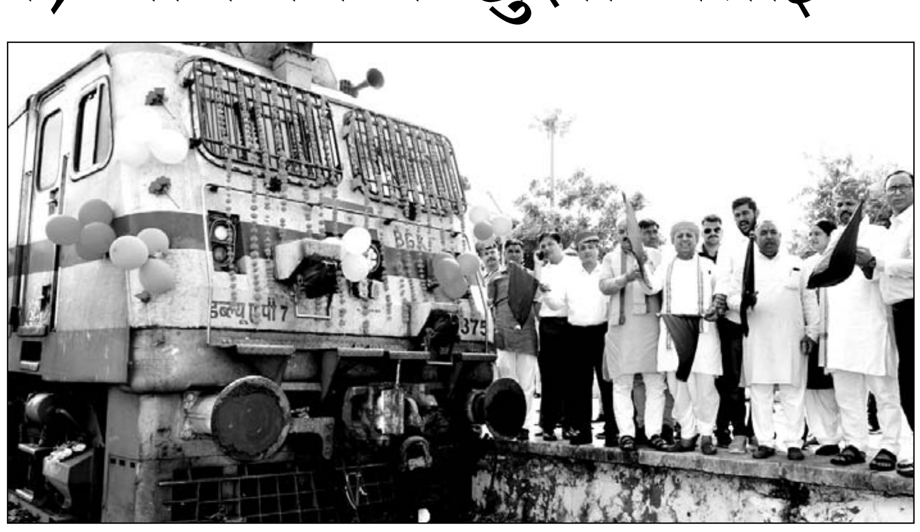
दौराई स्टेशन पर गाड़ी संख्या 19603 दौराई-गोड्डा को अतिथियों ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

मंदिर के छोटे से परिसर में चल रहा है बड़बर गांव का कन्या विद्यालय

बुहाना, (निसं)। बड़बर गांव के ग्रामीणों ने एसडीएम को ज्ञापन देकर अवगत कराया कि राजकीय उच्च माध्यमिक कन्या विद्यालय एक मंदिर के छोटे से परिसर में चल रहा है। 35 वर्ष पूर्व भवन के अभाव में मंदिर परिसर में बने एक कमरे में प्राथमिक कन्या विद्यालय खोला गया था, जो एक छोटे से परिसर में है। यह विद्यालय समय-समय पर क्रमोन्नत होता रहा, जो अब कक्षा 12वीं तक हो गया है। इस छोटे से परिसर में बने कमरों में प्राथमिक विद्यालय चलाना भी असंभव है। दस वर्ष से जर्जर चले आ रहे कमरों की मरम्मत व विद्यालय संचालन के लिए पर्याप्त भूमि के लिए ग्रामीण व स्टाफ ने प्रयास किए, लेकिन सफलता नहीं मिल पाई। इसी गांव में छात्र संख्या कम होने के कारण मर्ज होने के कारण संस्कृत उच्च माध्यमिक विद्यालय के पास एक विद्यालय का भवन कई वर्ष से खाली पड़ा हुआ है, जिसमें इस विद्यालय को उस खाली पड़े भवन में ले जाने के लिए तत्कालीन प्रधानाध्यापिका तीन वर्ष से प्रयासरत है, लेकिन शिक्षा विभाग एक ही नहीं सुन रहा है, जिसके लिए ग्रामीणों ने एसडीएम को ज्ञापन के माध्यम से स्थिति से अवगत कराया है। ग्रामीणों की मांग है कि इस कन्या विद्यालय के लिए भूमि आवंटन की जाए या पूर्व प्राथमिक विद्यालय के भवन में स्थानांतरित किया जाये। इस अवसर पर सचिन कुमार मिश्रा, राजेश कुमार कुमावत, सरपंच विनोद मिश्रा, सियाराम यादव, भारत शर्मा, आदेश गोस्वामी, हेमंत, नद्दू शर्मा, बबलू गुर्जर, विकाससिंह, रामचंद्र, अभय, सुभाष, भादर आदि मौजूद थे।

■ 35 वर्ष पूर्व भवन के अभाव में मंदिर परिसर में बने एक कमरे में प्राथमिक कन्या विद्यालय खोला गया था, जो एक छोटे से परिसर में है

■ यह विद्यालय समय-समय पर क्रमोन्नत होता रहा, जो अब कक्षा 12वीं तक हो गया है

बड़बर गांव के ग्रामीणों ने एसडीएम को ज्ञापन देकर भूमि आवंटन की मांग की।

2369 ने मतदान का प्रयोग किया

गंगापुर सिटी। अग्रवाल शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष एवं कार्यकारिणी सदस्य के लिए द्विवार्षिक वर्ष 2025-27 के चुनाव रविवार को अग्रवाल कन्या महाविद्यालय परिसर में शांति पूर्वक संपन्न हुए। रविवार को सुबह 8 बजे से मतदान प्रक्रिया प्रारंभ हुई जिसमें समाज के लोगों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। इस दौरान समाज के महिला पुरूष मतदान के लिए अग्रवाल कन्या महाविद्यालय पहुंचे जहां पर उम्मीदवार मतदाताओ की मनुहार करते दिखे। मतदान के दौरान एक मतदाता को एक वोट अध्यक्ष के लिए एवं 14 मत कार्यकारिणी सदस्यो के लिए देने थे।चुनाव अधिकारी हरिचरण गुप्ता (रिटायर्ड प्रिंसिपल) ने बताया कि शाम 6 बजे तक 4329 मतदाताओ में से 2369 मतदाताओ ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। इस दौरान चुनाव कार्य में लगे समाज के प्रतिनिधियो ने सभी आवश्यक दस्तावेजो की जांच कर संवैधानिक तरीके से मतदान कार्य को संपन्न कराया। मतदाताओं को महाविद्यालय परिसर तक पहुंचने के लिए शिक्षण संस्थान द्वारा वाहन प्रातः 8 बजे से सैनिक नगर, नई अनाज मंडी, नहर रोड, सालौदा, हॉस्पिटल, मालगोदाम रोड, पुरानी अनाज मंडी, फब्बारा चौक, कैलाश टॉकीज पर उपलब्ध कराए गए। वहीं अधिकतर मतदाता अपने अपने निजी वाहनो से मतदान के लिए पहुंचे। चुनाव में सभी प्रत्याशी आगंतुक मतदाताओं से अपने पक्ष में मतदान करने की अपील करते हुए नजर आए। अग्रवाल शिक्षण संस्थान अध्यक्ष हेतु 2 उम्मीदवार एवं कार्यकारिणी सदस्य हेतु 28 उम्मीदवार चुनाव मैदान में थे, जिसमें से अध्यक्ष हेतु एक एवं कार्यकारिणी सदस्यों हेतु 14 उम्मीदवारों का चयन होना है।

डिग्गी कल्याण की पैदल यात्रा रवाना

दूदू । दूंदू से श्री डिग्गी कल्याण यात्रा संघ तत्वाधान में डिग्गी कल्याण की 50वी पैदल परिक्रमा यात्रा रविवार की सुबह ध्वज पूजन के साथ रवाना की गई । 2 अगस्त की रात को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में अन्य स्थानों से आए पैदल यात्रियों का स्वागत किया जाकर भजन संध्या का आयोजन किया गया सोमवार को रवाना हुए पैदल यात्री 4 अगस्त को डिगी धाम पहुंच कर ध्वज चढ़ाएंगे

बांध पर चादर देखने लोग उमड़े

दूदू । क्षेत्र के अधीन सिंचाई विभाग के छापरवाड़ा बांध के भर जाने के बाद गत एक सप्ताह से चल रही चादर के दृष्य को देखने के लिए आसपास से गांव के लोग आने लगे हैं । दिनभर लोगों का तांता लगा रहता है । भर जाने के बाद क्षेत्र के किसानों के चेहरे भी खिल उठे।

संगठन की जिला बैठक सम्पन्न

राजसमंद । जिले के निजी विद्यालय संगठन की बैठक रविवार को धोईंदा स्थित गायत्री पब्लिक स्कूल में आयोजित की गई। बैठक में विद्यालय संचालकों को आ रही विभिन्न समस्याओं पर गहन चर्चा की गई और महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गए। बैठक में मुख्य रूप से मान्यता से अधिक कक्षाओं के संचालन, एक से अधिक स्थानों पर विद्यालय का बिना मान्यता संचालन, आरटीई क्लेम बिल, खेलकूद प्रतियोगिताएं और भौतिक सत्यापन से संबंधित समस्याओं पर विस्तार से चर्चा हुई।

28 ठिकानों पर दबिश देकर फायरिंग के 4 सरगना गिरफ्तार

पुलिस ने जबरदस्ती, वसूली, फायरिंग, संपति अपराध के आरोपियों को गिरफ्तार किया।

■ **महानिरीक्षक पुलिस जयपुर रेंज जयपुर राहुल प्रकाश की देखरेख में हुई कार्रवाई**

पावटा। महानिदेशक पुलिस जयपुर शहर महानिरीक्षक पुलिस जयपुर रेंज जयपुर राहुल प्रकाश द्वारा चिन्हित गैंग जिसमें जबरदस्ती, वसूली, फायरिंग, संपति अपराध, साइबर क्राइम, आर्म्स आदि अपराधों से जुड़े सरगनाओं के ठिकानों पर दबिश देकर कार्यवाही अभियान के तहत जिला पुलिस अधीक्षक कोटपूतली बहरोड देवेंद्र विश्नोई द्वारा अधिक से अधिक प्रभावी कार्यवाही करने के दिए गए निर्देशों की पालना में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कोटपूतली वैभव शर्मा के निर्देशन व वृत्ताधिकारी वृत्त विराटनगर शिप्रा राजावत के सुपरविजन एवं विराटनगर थाना प्रभारी सोहनलाल के नेतृत्व में गठित पुलिस टीमों द्वारा कड़ी मेहनत व लगन से कार्य करते हुए विराट नगर थाना क्षेत्र के 28 ठिकानों पर दबिश देते हुए फायरिंग, आर्म्स एक्ट एवं संपत्ति संबंधी अपराधों के प्रकरण में जमानतशुदा 4 सरगनाओ राजेंद्र पुत्र शिंभुदयाल उम्र 19 साल निवासी इस्माइलपुर थाना विराटनगर, सोहनलाल उर्फ सोनू पुत्र मुक्तिलाल उम्र 27 साल निवासी झाड़ोदिया की ढाणी तन मैड थाना विराटनगर, गोविंद उर्फ़ कब्बू पुत्र अर्जुन लाल उम्र 20 साल निवासी ज्ञानपुरा थाना विराटनगर, राम सिंह पुत्र शंकर लाल उम्र 21 साल निवासी जोधूला उपला थाना विराटनगर को अंतर्गत धारा 170 भारतीय न्याय संहिता 2023 में गिरफ्तार किया गया।

रामकृष्ण शर्मा को पीएचडी की उपाधि

रुदावल भरतपुर (निस)। सफलता का उन लोगों को ही अच्छा परिणाम मिलता है जो कठिन परिश्रम, समर्पण और आत्मविश्वास के मार्ग पर डटे रहते हैं। इसी बात को सच कर दिखाया है ठाम मोरौली डांग रुदावल किसान पुत्र हरिश्चंद्र शर्मा के पुत्र रामकृष्ण शर्मा ने विषय शिक्षा डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएचडी) की उपाधि प्राप्त करना केवल अपने माता-पिता का सपना साकार नहीं किया, बल्कि पूरे क्षेत्र को गौरवान्वित किया यह शोध वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में स्वामी विवेकानंद की शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता पर एक अध्ययन शोध निदेशक डॉ अंजू कंसल (सहायक प्रोफेसर) के निर्देशन में पूर्ण किया। डॉक्टर रामकृष्ण शर्मा का यह शोध सफर संघर्षों, अनगिनत रात्रियों की पढ़ाई, शोध कार्यों और आत्ममंथन से भरा रहा है। फिर उन्होंने अपने लक्ष्य से कभी भी विचलित न ही होकर यह सिद्ध कर दिया है कि किसान का पुत्र किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। उनके माता-पिता ने भावुक होकर कहा कि पल हमारे लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है।

विहिप व बजरंग दल के कार्यकर्ताओं की बैठक

करौली (निंस.)। विहिप के, प्रचार प्रसार प्रमुख नरेंद्र सिंह टटवाई ने बताया कि बैठक में विश्व हिंदू परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष प्यारेलाल मीणा उनके साथ मंच पर प्रांतीय सह सत्संग प्रमुख अमृत बाबा, सवाई माधोपुर विभाग के संगठन मंत्री विष्णु तथा बजरंग दल के विभाग संयोजक नरेश के द्वारा मां सरस्वती के चित्रपट पर माला एवं दीप प्रज्वलन कर पंडित राजेंद्र प्रसाद शर्मा के द्वारा मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

बैठक में राष्ट्रधर्म के विविध पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। प्रमुख बिंदुओं में धर्म आधारित संस्कार एवं राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने हेतु संस्कारशालाओं का संचालन,लव जिहाद, हिंदू धर्म के अनुसार विभिन्न त्यौहारों को मनाए जाने की योजना के साथ हिंदू समाज के विरुद्ध फैलाए जा रहे नकारात्मकता को रोके जाने की कार्य योजना,स्वजागरण, कर्तव्य निष्ठा,पर्यावरण संतुलन के लिए कार्य करना आदि विषयों पर विचार विमर्श किया गया।प्रांतीय अध्यक्ष मीणा ने कहा कि हमें अपनी आने वाली पीढ़ी को सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक रूप से जागरूक बनाना होगा। संस्कार शालाएं इस दिशा में एक सशक्त माध्यम बन सकती हैं।संगठन मंत्री विष्णु एवं बजरंग दल के विभाग प्रमुख नरेश ने कहा कि विघटनकारी ताकतें देश में जाति, धर्म,भाषा और क्षेत्रवाद के आधार पर फूट डालने का षड्यंत्र कर रही हैं। ऐसे समय में हिंदू समाज को संगठित करना समय की आवश्यकता है। विश्व हिंदू परिषद के जिला अध्यक्ष चौरजी सिंह ने बताया कि विहिप के द्वारा धर्म का प्रचार प्रसार करने वाले साधु संत एवं कथावाचकों को सम्मानित करने तथा समाज को संगठित किये जाने हेतु जिला,खंड, एवं प्रखंड स्तर पर सद्भावना एवं जागरूकता अभियान संचालित किए जा रहे है।विहिप एवं बजरंग दल के प्रांत, जिला, खंड, प्रखंड एवं नगर की कार्यकारिणी के पदाधिकारी रमेश चंद्र बंसल, नरेंद्र सिंह झारीला, सत्तीराम मीणा, पप्पू वाल्मीकि, एडवोकेट हरकेश मीणा, प्रहलाद सिंह, अनिल, सीताराम एवं अन्य काफी तादात में कार्यकर्ता बैठक में उपस्थित रहे ।

भरतपुर में जान जोखिम में डालकर बांध में नहा रहे है बच्चे

भरतपुर (निस)। भरतपुर बारिश के दौरान क्षेत्र के नदी, नाले बांध उफान पर है. इन्हीं नदी, नाले और बांधों के पानी में डूबने से कई लोगों मौत हो चुकी है। इसके बाद भी लापरवाही नहीं रुक रही। अजान बांध और कोदनी बांध स्थित रामनगर दो मोरा के गहरे पानी में छोटे-छोटे बच्चे और युवक जान जोखिम में डालकर नहाने के दौरान अठखेलियां करते हुए नजर आ रहे हैं। इसके बावजूद मामले में सिंचाई विभाग और प्रशासन बेखबर बना हुआ है. हालांकि बांध में नहा रहे युवकों से बात की तो उन्हें भी गलती का एहसास हुआ और कहा कि इस तरह जान जोखिम में डालकर नहाना गलत है । बारिश के चलते पाँचना बांध से छोड़ा गया पानी गंभीर नदी होते हुए अजान बांध और कोदनी बांध पहुंचा है.साथ ही जलस्तर भी बढ़ा हुआ है.इसकी गहराई की बात करे तो 25 से 30 फीट है.इसके बावजूद कुछ बच्चे और युवक इस बांध में छलांग लगाते दिख रहे हैं. ऐसे में किसी हादसे से इंकार नहीं किया जा सकता है. इसके बाद भी प्रशासन आंखें मूंदे हुए है और किसी बड़े हादसे का इंतजार कर रहा है । बांध में नहा रहे जब युवकों से बात चीत तो उन्होंने कहा कि बारिश का मौसम है उनके गांव के चारों ओर पानी ही पानी है. लेकिन बाद में उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ तो कहा इस तरह जान जोखिम में डालकर नहाना गलत है। जिला प्रशासन भी लोगों से पानी से दूरी बनाने की अपील कर रहा है।

14 साल से फरार धोखाधडी का आरोपी उदयपुर से गिरफ्तार

गंगापुर सिटी में आरोपी पुलिस गिरफ्त में फरार आरोपी ।

■ **एक ही खसरा नंबर की जमीन को दो लोगों के नाम रजिस्ट्री करवाई**

गंगापुर सिटी । पुलिस अधीक्षक सवाई माधोपुर अनिल कुमार आईपीएस के निर्देश पर जिला स्तरीय टॉप 1० वांछित अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए विशेष अभियान चलाया गया। इसी ऋम में 1० हजार रुपए के इनामी अपराधी जगदीश माली को उदयपुर से गिरफ्तार किया गया है। पुलिस को आसूचना मिली थी कि जगदीश माली उदयपुर में रहकर फरारी काट रहा है और मार्बल व ग्रेनाइट का काम करता है। इस सूचना पर डीएसटी गंगापुर सिटी की टीम को साइबर सेल द्वारा उदयपुर भेजा गया। आरोपी ने अपना फर्जी आधार कार्ड बनवा लिया था और लक्ष्मण निवासी उदयपुर के नाम से रह रहा था। डीएसटी टीम ने हुलिया बदलकर उदयपुर के विभिन्न क्षेत्रों में जहां मार्बल का काम चल रहा था, वहां तलाश की। अंततः आरोपी को जैन समाज के सामाजिक भवन में मार्बल का काम करते हुए पकड़ लिया गया। प्रकरण संख्या 685/2०11 के अनुसार, आरोपी जगदीश माली ने एक ही खसरा नंबर की जमीन को दो व्यक्तियों के नाम रजिस्ट्री करवाकर धोखाधडी की थी। गिरफ्तार आरोपी जगदीश माली पुत्र भौरया निवासी जलोखरा गंगापुर सिटी है। जांच में जुर्म प्रमाणित होने पर 299 सीआरपीसी के तहत चालान न्यायालय में पेश किया गया था। आरोपी वर्ष 2०11 से फरार था और पिछले 14 वर्षों से अपनी पहचान छिपाकर रह रहा था। गिरफ्तारी में थानाधिकारी गंगापुर सिटी करण सिंह, साइबर सेल से महेंद्र कुमार और राजकुमार सिंह और घनश्याम की टीम शामिल थी।

वरिष्ठ साहित्यकार सम्मान 2025 से साहित्यकार सम्मानित

■ **'परदेशी' की 102वीं जयंती अवसर पर भव्य काव्यगोष्ठी**

प्रतापगढ़, राजस्थान साहित्य अकादमी एवं परदेशी साहित्य संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को सूचना केंद्र प्रतापगढ़ में साहित्यकार मन्नालाल 'परदेशी' की 102वीं जयंती अवसर पर भव्य काव्यगोष्ठी एवं परिचर्चा का आयोजन 'लोकसंवेदना एवं यथार्थबोध के साहित्यकार' विषय पर किया गया।

कार्यक्रम में कवियों और साहित्यकारों ने 'परदेशी' की साहित्यिक धरोहर, उनकी रचनाधर्मिता एवं लोकसंवेदना को नमन करते हुए उन्हें काव्यांजलि अर्पित की। कार्यक्रम सभापति रामकन्या गुर्जर के मुख्य आतिथ्य और सीडीईओ कमलेश तेतरवाल, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के सहायक निदेशक डॉ. टी. आर. आमेटा तथा सीओ स्काउट गाइड रेखा शर्मा के विशिष्ट आतिथ्य में संपन्न हुआ।

काव्य गोष्ठी में प्रदेश और बाहर से आए कवियों ने अपनी भावपूर्ण कविताओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कविताओं में समसामयिक चिंतन, सामाजिक सरोकार और परदेशी की रचनाओं की झलक स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुई। कार्यक्रम में 80 से ज्यादा कवि एवं साहित्यकार उपस्थित रहे । संस्थान अध्यक्ष सुरेन्द्र सुमन ने बताया कि इस अवसर पर साहित्य जगत में विशिष्ट योगदान देने वाले वरिष्ठ साहित्यकारों को वरिष्ठ साहित्यकार सम्मान 2025 दिया गया। सम्मानित होने वालों में मदन वैष्णव, हरीश व्यास, जगदीश शर्मा, मनोहर भागघोटा, श्याम सोनी, कैलाश राव रसिक, अरुण वोरा फौजी, मनोज जैन, चन्द्रशेखर मेहता, चन्द्र प्रकाश द्विवेदी, सुरेश सुरज, अजगर अली, प्रकाश शर्मा, रमेश बागडी, दादू प्रजापति मनासा, भैरू सुनार बागरेड, जगदीश बैरागी नीमच एवं नारायण निडर खाचरौद, दशरथ बैरागी आदि रहे। कार्यक्रम में कवियों ने अपनी रचनाओं से वातावरण को साहित्यिक माधुर्य से भर दिया। सुरेन्द्र सुमन, भोपराज महावीर,ओमप्रकाश देव (हिण्डौन सिटी), भंवर भंवर, मनोहर मन्नु, हरिओम हरपल, धनपाल धमाका, राजेन्द्र जोशी, लोकेश भट्ट, ईश्वर दीवाना, आनंद मयूर, लोकेन्द्र सिंह, मोहन सिंधी, अमृत भटेवरा, राजेश रणबांकुरा, पार्थ नवीन, दशरथ बैरागी, विशाल, अनिता गुप्ता, हेमलता मेघवाल, जितेन्द्र टेलर, अल्का सोलंकी, आशा टांक, फातेमा बरकरार, हिमांशी मालवीय, जुल्फीकार आलम, सुमन सोनी, प्राची राठौड, कमलेश कमल ने काव्यपाठ से माहौल मंत्रमुग्ध कर दिया। मध्यप्रदेश से विशेष रूप से पधारे कवि बलवंत सिंह हाडा, योगेश शर्मा, झमक सोनी एवं सतीश चाहत ने भी अपनी प्रभावी प्रस्तुतियों से श्रोताओं को भावविभोर किया। इस अवसर पर विरेन्द्र पुरोहित (मेवाड़ एज्यूकेशन, आबकारी रोड) ने सभी कवियों एवं साहित्यकारों को डायरी, पेन और फोल्डर भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन सुरेन्द्र सुमन द्वारा किया गया। काव्यगोष्ठी ने न केवल परदेशी की स्मृति को जीवंत किया बल्कि नवोदित और वरिष्ठ दोनों ही साहित्यकारों के लिए एक साझा मंच उपलब्ध करवाया।

वैदिक गणित में मनीष तिवारी सम्मानित

भरतपुर (निस)। जयपुर स्थित राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित गणित गुरु रत्न सम्मान समारोह में भरतपुर निवासी मनीष तिवारी को वैदिक गणित के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

भारत के गणित गुरु बी.एन. राव और भारत के अठाणी एनएलपी विशेषज्ञ और हैप्पीनेस कोच श्री कपिल शर्मा मुख्य अतिथि रहे।यह सम्मान स्किल शिक्षा संस्था द्वारा उन शिक्षकों को प्रदान किया गया, जो आधुनिक युग में भी वैदिक गणित और अबेकस की शिक्षा को समर्पित भाव से बच्चों तक पहुँचा रहे हैं। मनीष तिवारी विगत 8 वर्षों से वैदिक गणित की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं और इस क्षेत्र में निरंतर उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं। देशभर से चयनित केवल 50 शिक्षकों को यह गौरवपूर्ण सम्मान प्रदान किया गया, जिनमें मनीष तिवारी का नाम भी शामिल है।

मूक बधिर बच्चों का राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन

करौली (निंस.) । निशब्द मूक बधिर विद्यालय के बच्चों ने राष्ट्रीय स्तर पर शानदार प्रदर्शन किया।

संस्था के कार्यक्रम प्रभारी मनोज शर्मा ने बताया की ऑल इंडिया स्पोर्ट्स काउंसिल फॉर द डेफ के बैनर तले 26 वीं डेफ ओलंपिक एवं 9जी राष्ट्रीय डेफ जूनियर एंड सब जूनियर स्पोर्ट्स राष्ट्रीय प्रतियोगिता केरल राज्य के त्रिवेंद्रम में आयोजित हुई इसमें 21 राज्यो के प्रथम द्वितीय स्थान प्राप्त लगभग 1100 बच्चों ने भाग लिया जिसमे नि:शब्द विद्यालय करौली के पांच बच्चो ने शारीरिक शिक्षक गोपाल चतुर्वेदी, कोमल चारण के साथ भाग लिया नि:शब्द विद्यालय की बालिकाओं ने शानदार प्रदर्शन करते हुए पूनम माली ने 800 मीटर दौड़ में द्वितीय स्थान लाकर सिल्वर मेडल ,रवीना ने लंबी कूद में द्वितीय स्थान लाकर सिल्वर मैडल एवं 100 मीटर दौड़ में तृतीय स्थान लाकर ब्रोंज मेडल प्राप्त किया बालिकाओं के अच्छे प्रदर्शन पर करौली राज परिवार प्रमुख कृष्ण चन्द्र पाल एवं पूर्व विद्यायक रोहिणी कुमारी ने विद्यालय में पधारकर बालिकाओं को प्रमाण पत्र देते हुए बधाई देकर मनोबल बढ़ाया इस दौरान संस्था के समन्वयक सदस्य सचिव सत्येन चतुर्वेदी ने आभार जताते हुए कहा की आगे भी अधिक से अधिक बच्चो को जोड कर सहभागिता करवाने हेतु तैयारियां शुरु करवा दी हैं पाल ने परिसर में चल रहे भवन विस्तार सहित व्यवस्थाओं को देखा इस दौरान संस्था के प्रधानाचार्य अमरेश सिंह, सहित स्टाफ और बच्चे मौजूद रहे।

पालीवाल बने अध्यक्ष

राजसमंद। जिला मुख्यालय के उपनगर धोइंदा स्थित कुलदेवी स्थल पर 24 श्रेणी पालीवाल समाज के सम्पन्न हुए चुनाव में समस्त डेली धारकों और नवयुवक मंडल के सदस्यों की उपस्थिति में सर्वसम्मति से नए पदाधिकारियों का चुनाव किया गया। समाज के हित में कार्य करने के लिए निम्नलिखित पदाधिकारियों का चुनाव किया गया जिसमें पद पर हरिवल्लभ पालीवाल, सचिव भेरूलाल पालीवाल, उपाध्यक्षरू हरीश पालीवाल पिता चुन्नीलाल पालीवाल, कोषाध्यक्ष लक्ष्मीनारायण पालीवाल को नियुक्त किया।

खोया पाया

मेरा मकान संख्या 114/191 सेक्टर 11, प्रताप नगर, सांगानेर, जयपुर का ओरिजन डिमाण्ड नं. 7623 दिनांक 08.11.2017 एवं राजस्थान आवासन मण्डल, रसीद नियमितिकरण आवेदन पत्र क्रमांक 2017/1031 मुझसे कहीं गुम हो गई है मिलने पर सूचित करें नाई जगमोहन मूलाराम 7375966454

नाम परिवर्तन

I, Mahendra Singh, father of Yuvraj, hereby declare that I have changed the name of my son from Yuvraj to Yuvraj Singh for all future purposes. Address: 94/51, Mansarovar, Jaipur-302020

मैं (NIRANJAN CHOUDHARY) पुत्र श्री भंवर लाल निवासी वार्ड नं. 04 सरदार शहर चूरू राज. मेरा नाम मेरे पासपोर्ट नं. L-9644361 व अंकतालिका में भूलवश (NIRANJAN CHAUDHARY) दर्ज हो गया है कि गलत है। मेरा नाम मेरे अन्य दस्तावेजों में (NIRANJAN CHOUDHARY) है जो सही है।

कार्यालय उपायुक्त सिविल लाईन जोन, नगर निगम जयपुर हैरिटेज
क्रमांक- एफ18()सि.ला.जो./उपा/ननिजहै/2025/1206 दिनांक: 01.08.2025
अनापत्ति आमंत्रण सूचना:
भूखण्ड संख्या 09, श्री राम कॉलोनी, सोडाला, जयपुर का पट्टा क्षेत्रफल: 125.00 व.ग. का जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा दिनांक 06.01.2004 को श्री लड्डू गोपाल उदयवाल पुत्र श्री गोपी राम मिस्त्री को जारी किया गया है। श्री लड्डू गोपाल उदयवाल पुत्र श्री गोपी राम मिस्त्री द्वारा श्रीमती भंवरी देवी को पंजीकृत वसीयत की गई है। मृत्यु प्रमाणपत्र, निर्धारित अण्डरटेकिंग, शपथपत्र के आधार पर उक्त भूखण्ड का क्षेत्रफल 125.00 व.ग. का नाम हस्तानान्तरण श्रीमती भंवरी देवी के नाम से जारी किया जाना है। किसी संस्था, फर्म, कम्पनी व किसी भी व्यक्ति को इस नाम हस्तानान्तरण बाबत में आपत्ति हो तो प्रकाशन तिथी से 07 दिवस के भीतर किसी भी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अद्योहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष दस्तावेजों के साथ अपने आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा। नियत समय के भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा की किसी व्यक्ति, संस्था, फर्म को कोई आक्षेप नहीं है। और मामले का तदनुसार निपटारा किया जाएगा।
हस्ताक्षर: उपायुक्त, सिविल लाईन जोन, नगर निगम जयपुर हैरिटेज।

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (द्वितीय) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर 50/2025
(नाम वर्णन तथा निवास स्थान)
चूंकि श्री चम्मन लाल पुत्र श्री चुन्नी लाल निवासी वार्ड नम्बर 02, ढाणी दीपावली, आदर्श नगर, न्यू सैनी सभा, कोटपूतली, जिला कोटपूतली-बहरोड-303108 ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17(1) के अन्तर्गत अखिल भारतीय आदिवासी धाणका महापंचायत (गुडदी) ट्रस्ट, वार्ड नम्बर 02 ढाणी दीपावली, आदर्श नगर, न्यू सैनी सभा, कोटपूतली, जिला कोटपूतली-बहरोड-303108 के सम्बन्ध में जांच किये जाने के लिए आवेदन पत्र दिया है।
अतएवं धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करें।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 29.07.2025 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइदा तारीख पेशी 20.08.2025
मोहर अदालत
सहायक आयुक्त (द्वितीय)
देवस्थान विभाग जयपुर

हैतुक दर्शित करने के लिए सूचना
(साधारण प्रारूप)
(व्यवहार प्रक्रिया संहिता पहली अनुसूची संख्यांक 4)
न्यायालय अपर जिला एवं सेंशन न्यायाधीश महोदय स्थान सरदारशहर
शिवशकर बनाम सर्वसाधारण वगैरह
प्रार्थना पत्र-बाबत प्राप्त करने उत्तराधिकार प्रमाण पत्र
दावा संख्या-03 सन् 2025
बनाम
सर्वसाधारण।
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि प्रार्थी शिवशंकर अग्रवाल पुत्र श्री ओमप्रकाश अग्रवाल निवासी वर्तमान वार्ड नं. 40 जैसनसरिया बास, सरदारशहर ने यह आवेदन उत्तराधिकार प्रमाण पत्र प्राप्त करने हेतु इस न्यायालय में पेश किया है और अपने पिता स्व. ओमप्रकाश रातुसरिया के नाम से भारतीय स्टेट बैंक शाखा सरदारशहर में खाता सं. 51093889830 CIF सं. 71131315673 में जमा 6,27,907/- रूपये राशि मय देय ब्याज व लाभ प्राप्त करने हेतु व खाता संचालन हेतु उत्तराधिकार प्रमाण पत्र जारी करने का निवेदन किया है।
अतः सर्वसाधारण को सूचना दी जाती है कि आप इस आवेदन के विरूद्ध हैतुक दर्शित करने के लिए दिनांक 10 माह 08 सन् 2025 को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या अपने प्लीडर द्वारा जिसे सम्यक रूप से अनुदेश किया गया हो, उपसंजात हो। यदि आप ऐसा करने में असफल रहेंगे जो उक्त आदेश को सुनवाई और उसका निपटारा एक पक्षीय रूप से किया जाएगा।
यह आज दिनांक 31 माह 07 सन् 2025 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दी गई।
आज्ञा से-रीडर
मोहर अदालत
अपर जिला एवं सेंशन न्यायाधीश
सरदारशहर (चूरू)

एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम के तहत वृक्षारोपण किया

गंगापुर सिटी में वृक्षारोपण करते माय भारत युवा के सदस्य ।

गंगापुर सिटी। मेरा युवा भारत केंद्र युवा कार्यक्रम एवं खेल मन्त्रालय भारत सरकार एवं स्वामी विवेकानंद युवा मंडल के तत्वाधान में एक पेड माँ के नाम वृक्षारोपण महाअभियान के तहत गंगापुर सिटी के बीना सॉफ्ट एजुकेशनल एंड वेलफेयर सोसाइटी मे चित्रकला प्रतियोगिता व वाय पास स्थित देवनारायण मन्दिर परिसर में वृक्षा रोपण किया गया जिसके तहत नीम, वेल्पत्र, गुलमोहर, अशोक, शीशम, फूल अन्य छाया दार के वृक्ष लगाए गए। रिजुल गर्ग ने बताया की सभी युवाओ ने बढचढ कर हिस्सा लिया। अथिती संस्था से आसिफ, इमरान सर ने कार्यक्रम मे कहा एक पेड हमारे जीवन को साकार करता है और प्रकृति को हरियाली देता है। इन्ही से हमें हवा वायु जैसी शक्ति प्रदान होती हैं। इस दौरान आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में युवाओ ने बढ चढ कर हिस्सा लिया। चित्रकला प्रतियोगिता मे प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी को मेडल व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। माय भारत के द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रम एक पेड माँ के नाम का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण है जिसमें युवाओं द्वारा स्थानीय लोगों को नए पेड लगाने एवं पुराने पौधों को बचाने का संदेश दिया जा रहा है। हर व्यक्ति को एक पेड अपनी माता के नाम लगाने एवं उसे संरक्षित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस दौरान कार्यक्रम मे रिजुल गर्ग, खेमराज गुप्ता, मंडल सदस्य राहुल जागा, देव गुर्जर, बलवीर गुर्जर, शिवम, नेत्रपाल, विमल सहित कई युवा शामिल हुए।

नम्बर मिलाइए
9587884433
सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

बाबा की गौशाला पर पौधारोपण

गंगापुर सिटी। बाबा गोशाला में गौ सेवकों ने एक पेड गौ माता के नाम अभियान का शुभारंभ किया। कार्यक्रम की शुरुआत गौ माता के पूजन से हुई। विश्व हिंदू परिषद के प्रांत सह सत्संग प्रमुख अमृत महाराज ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। गोशाला में नीम, पीपल, करज, शीशम जैसे छायादार और फल फूलदार पौधे लगाए गए। गौ सेवा समिति के जिलाध्यक्ष और पौधारोपण कार्यक्रम के संयोजक गोविंद नारायण शर्मा ने कार्यक्रम की जानकारी दी। गोशाला अध्यक्ष गंगाप्रसाद एडवोकेट और अन्य गौ भक्त भी मौजूद रहे। सत्संग प्रमुख महाराज ने कार्यकर्ताओं के साथ सत्संग पर चर्चा की। उन्होंने गोशाला में साप्ताहिक सत्संग चलाने के लिए गौ सेवकों को प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि पौधे धरती का श्रृंगार हैं। पौधों से धरती पर बारिश होती है और प्राण वायु मिलने के साथ पर्यावरण का संतुलन बना रहता है। वक्ताओं ने पौधों की अंधाधुंध कटाई से पर्यावरण संतुलन बिगड़ने की चिंता जताई। उन्होंने ग्लोबल वार्मिंग की समस्या पर भी चिंता जताई। उन्होंने कहा कि पर्यावरण को बचाने के लिए सभी को अधिक से अधिक पौधे लगाने होंगे। कार्यक्रम में शिवनारायण गुप्ता, हरफूल बेरवा, भगवान सिंधी, भारत भूषण, रमेश सेन, मोहित वैष्णव, सारांश जैन, जगदीश प्रसाद खंडेलवाल, श्यामलाल गुप्ता, मनु शर्मा, सोनू बेरवा सहित दर्जनों गौ भक्त उपस्थित थे।

वन क्षेत्र की सुरक्षा में कोई कोताही बर्दास्त नहीं : वन मंत्री

■ **चौकी-नाकों का सर्वे करें, जरूरत के मुताबिक नवीन भवनों के प्रस्ताव भेजें**

■ **जर्जर भवन में संचालित न हों : वन मंत्री संजय शर्मा**

राजसमन्द। वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा ने रविवार को कलेक्ट्रेट सभागार में वन एवं पर्यावरण संबंधी बजट घोषणाओं और गतिविधियों की विस्तार से समीक्षा की। इस दौरान कुंभलगढ़ विधायक सुरेन्द्र सिंह राठौड़, नाथद्वारा विधायक विश्वराज सिंह, जिला प्रमुख रतनी देवी जाट, सीसीएफ सेडुराम यादव, जिला कलक्टर अरुण कुमार हसीजा, उप वन संरक्षक कस्तूरी प्रशांत सुले, जिलाध्यक्ष जगदीश पालीवाल, समाजसेवी माधव जाट आदि उपस्थित रहे। बैठक में वन मंत्री संजय शर्मा ने कहा कि आज भी हमारे वन रक्षक भाई-बहन कठिन परिस्थितियों में कार्य करते हुए वनों का संरक्षण करते हैं। उन्होंने वन विभाग को निर्देश दिए कि जिलेभर में वन कर्मियों की चौकियों और नाकों का निरीक्षण करें। जहां भी चौकी और नाका भवन के निर्माण भी जरूरत हो उसके प्रस्ताव भेजें। कहीं भी जर्जर भवन में चौकी या नाके संचालित न हो। सरकार इसे लेकर पूरी तरह गंभीर है। वन मंत्री संजय शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार वन क्षेत्र की सुरक्षा को लेकर प्रतिबद्ध है, जहां भी सख्ती करने की जरूरत हो वहाँ सख्ती करें। कहा कि वे भविष्य में स्वयं औचक निरीक्षण करने भी आ सकते हैं, ऐसे में सभी अधिकारी तत्परता से कार्य करें, पूर्ण निष्ठा के साथ वन संरक्षण का कार्य करें। उन्होंने कहा कि वन विभाग के तंत्र को निरंतर राज्य सरकार द्वारा सुदृढ़ किया जा रहा है, साथ ही हर शिकायत को भी गंभीरता से लिया जा रहा है । बैठक में डीसीएफ कस्तूरी प्रशांत सुले ने वन मण्डल का विस्तार से परिचय दिया। इसके पश्चात टोड़गढ़-रावली के इको सेंसेटिव जॉन के लिए मास्टर प्लान, प्रे बेस में वृद्धि, लवकुश वाटिका झीलवाड़ा एवं नाथद्वारा, ठीन लंग डेवेलपमेंट, पक्षी घर, लेपर्ड कंजर्वेशन, गत वर्षों में किए गए पौधारोपण की स्थिति सहित कुंभलगढ़ में प्रस्तावित टाइगर रिजर्व आदि की विस्तार से समीक्षा की। डीसीएफ सुले ने वंदे गंगा अभियान की प्रगति, हरियालो राजस्थान के तहत पौधारोपण के लिए मिले लक्ष्य और अब तक हुए पौधारोपण एवं पौध वितरण, हरियालो राजस्थान के जिला स्तरीय कार्यक्रम आदि की जानकारी दी।

संक्षिप्त

अलग अलग मामलों में 26 जने गिरफ्तार

रूपवास। थाना पुलिस व गहनोली मोड पुलिस ने अभियान चलाकर वारंटी, अवैध रूप से जुआ, सट्टे, शराब के कारोबार में लिप्त 26 जनो को गिरफ्तार कर लिया। गहनोली मोड थानाधिकारी विजयसिंह छोंकर ने बताया कि खानुआ निवासी रघुवीर सिंह पुत्र अर्जुन सिंह को 56 देशी शराब के पब्बो के साथ गिरफ्तार किया। वही सैदपुरा निवासी सत्तो पुत्र किशनसिंह, खानुआ निवासी रामलखन पुत्र बनयसिंह, अनूप पुत्र पवन कुमार को सट्टे के आरोप में गिरफ्तार 3110 रुपये की राशि व सट्टा उपकरण बरामद किए। घाटोली चौकी इंचार्ज विनोद शर्मा ने बताया कि वारंटी, एचएस व पुराने दर्ज मुकदमों के आरोपी सुरेश, रामेश्वर, पीओम, कप्तान सिंह, मान सिंह, गम्मन, वीरपाल, दीपक कुमार, संजू को शांति भंग के आरोप में गिरफ्तार किया। इस टीम में एएसआई राकेश कुमार, हरदम सिंह, कुंजबिहारी शर्मा, विनोद शर्मा, राजवीर सिंह, सतवीर, सुनील कुमार, दीपक, जसवंत, श्रीनिवास, अमित कुमार, राजकुमार शामिल थे।

जाप करने से मोक्ष की प्राप्ति संभव

राजगढ़। कथा वाचक अमन भारती महाराज ने श्रीमद् भागवत कथा प्रवचन के दौरान भगवान की भक्ति और भगवान के नाम की महत्ता पर प्रवचन दिए।

भगवान के नाम जाप करने से मोक्ष की प्राप्ति संभव है। श्रोता गणो की उपस्थिति व खचाखच भरे पंडाल में भजन एवं सत्संग का भावपूर्ण वर्णन से सभी को भक्ति रस में डुबकी लगवाई। । उन्होंने अजामिल की कथा में अजामिल के पापी जीवन कथा सुनाते हुए कहां की अजामिल को भगवान विष्णु की कृपा से नारायण नाम पुकारने से ही मोक्ष की प्राप्ति हुई। इस दौरान अनेक प्रसंग एवं दृष्टांतों का वर्णन करते हुए अमन भारती महाराज ने उपस्थित महिला पुरुषों को भागवत कथा के बारे में जानकारी दी। अजामिल ब्राह्मण था जो एक वैश्या के साथ रहने लगा।

अपनी मां के नाम एक वृक्ष लगाना : धनकड़

पावटा। पीएम श्री जवाहर नवोदय विद्यालय पावटा में पर्यावरण संरक्षण और मातृत्व को समर्पित वृक्षारोपण कार्यक्रम एक पेड़ मां के नाम का आयोजन जेएनवी एलुमिनी संगठन के तत्वाधान में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विराटनगर विधानसभा क्षेत्रीय विधायक कुलदीप धनकड़ ने की। इस दौरान विधायक धनकड ने कहा अपनी माँ के नाम एक वृक्ष लगाना, प्रेम और कृतज्ञता की सबसे सुंदर अभिव्यक्ति है। यह अभियान हमें हमारी पर्यावरणीय और पारिवारिक जड़ों से जोड़ता है। विधायक धनकड ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पर्यावरण एवं विकास योजनाओं की सराहना करते हुए कहा कि एक पेड़ मां के नाम योजना न सिर्फ एक पर्यावरणीय अभियान है, बल्कि यह संस्कार, भावनात्मक जुड़ाव और सामाजिक जिम्मेदारी का प्रतीक भी है। उन्होंने छात्र-छात्राओं को इस मुहिम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने की अपील की। उन्होंने कहा कि हर बच्चे को अपनी मां के नाम एक पौधा लगाना चाहिए और उसकी देखभाल भी करनी चाहिए। यही असली श्रद्धांजलि होगी। वही प्रधानाचार्य संजू जोशी ने बताया कि कार्यक्रम में विभिन्न पर्यावरण संरक्षण के प्रयास और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में पूर्व विद्यार्थी, विद्यार्थी, शिक्षक एवं जनप्रतिनिधियों ने एक पेड़ मां के नाम अभियान में पेड़ लगाकर अपना सहयोग दिया। कार्यक्रम के अंतर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए उसके पश्चात पूर्व छात्रों ने विद्यालय के गौरवशाली इतिहास के बारे में बताते हुए कहा कि आज पीएम श्री जवाहर नवोदय विद्यालय पावटा के विभिन्न वर्षों में पास आउट छात्र देश की विभिन्न पदों पर रहकर सेवा कर रहे हैं। पूर्व छात्रों में इस से लेकर पुलिस अधिकारी एवं विभिन्न सरकारी विभागों में कार्यकाल देश की सेवा में अपना योगदान दे रहे हैं। पूर्व छात्रों ने सभी पढ़ रहे छात्रों को कड़ी मेहनत और लगन से पढ़ाई करके देश सेवा करने का संदेश दिया।

पीएम श्री जवाहर नवोदय विद्यालय पावटा में पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधारोपण कर देखभाल का संकल्प लिया।

■ 'प्रेम और कृतज्ञता की सबसे सुंदर अभिव्यक्ति है पेड़ लगाना'

बच्चों को बचाते हुए वृद्ध बहा पानी में

टोंक। बनेठा थाना क्षेत्र के मंडावर गांव के पास से बह रही बनास नदी में रविवार को दो बच्चों को बचाने के चक्कर में एक बुजुर्ग पानी में बह गया, जिसकी मौके पर पंहुची एसडीआरएफ टीम ने तलाश शुरू की। जिसका शाम तक कोई पता नहीं लगा है। पटवारी भगवान सहाय गुर्जर ने बताया कि बरोनी थाना क्षेत्र से बह रही बनास नदी किनारे रविवार सुबह करीब 9 बजे वहां पास के मुख्त्यार नगर (कीरों की ढाणी) निवासी सुनीता व विक्रम दो बच्चे हवा से भरे हुए ट्यूब की मदद से बनास नदी में किनारे पर नहा रहे थे, तभी वह नदी में बहने लगे फिर दोनों बच्चे बचाने के लिए चिल्लाए, जिसकी आवाज सुनकर वही से नहाकर घर लौट रहे वृद्ध बालूराम कीर पुत्र कस्तूरा कीर उम्र 65 साल ने दौड़कर नदी में छलांग लगाई और दोनों बच्चों को बचाकर किनारे की ओर कर दिया, लेकिन खुद पानी में बह गया। बाद में दोनों बच्चों ने भागकर वृद्ध के डूबने की बात परिजनों को बताई, फिर ग्रामीणो ने पुलिस को सूचना दी, जिसके बाद पुलिस प्रशासन व एसडीआरएफ टीम मौके पर पंहुचकर बुजुर्ग की तलाश शुरू की।

24 घंटे में वारदात का पर्दाफाश, शिकंजे में आया शातिर बाइक चोर

हिंडौन सिटी (का स)। हिंडौन सिटी की सदर थाना पुलिस ने सक्रियता और सतर्कता का परिचय देते हुए महज 24 घंटे के भीतर एक शातिर बाइक चोर को धर दबोचा। आरोपी के कब्जे से चोरी की गई बाइक को भी बरामद कर लिया गया है। पुलिस की इस त्वरित कार्रवाई से क्षेत्र में सराहना का माहौल है।

■ त्वरित कार्रवाई से क्षेत्र में सराहना का माहौल है।

थाना प्रभारीदेवेंद्र शर्माने बताया कि बरगमा निवासीधीरेंद्र सिंहने 31 जुलाई को थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि उनकी बाइक घर से चोरी हो गई है। मामले की गंभीरता को देखते हुए एएसआईसुरेश सिंहके नेतृत्व में विशेष टीम का गठन कर त्वरित जांच शुरू की गई।

जांच के दौरान पुलिस को सूचना मिली कि चोरी की गई बाइक के साथ एक युवक बाइपास तिराहे पर घूम रहा है।

पुलिस ने तत्काल मौके पर पहुंचकर दबिश दी और आरोपी को चोरी की बाइक के साथ पकड़ लिया। पूछताछ में आरोपी की पहचानबरगमा निवासी पंकज सिंहके रूप में हुई है। फिलहाल आरोपी से बाइक चोरी की अन्य वारदातों के बारे में पूछताछ की जा रही है। इस कार्रवाई मेंहैड कांस्टेबल शिवलाल, हेमेन्द्र, शिवसिंह, सतवीरसहित अन्य पुलिसकर्मी शामिल रहे।

हिंडौन सिटी की सदर थाना पुलिस ने बाइक चोर को शीघ्र गिरफ्तार किया।

सार-समाचार

अतिरुद्र महायज्ञ के लिए सेवा कार्य जारी

डूंगरपुर। अघोर पशुपतिनाथ धौला गढ धाम पर महंत प्रकाश नाथ जी द्वारा रुद्र वाहिनी संघ के माध्यम से आयोजित हो रहे पैंतालीस दिवसीय अति रुद्र महायज्ञ कार्यक्रम के लिए डूंगरपुर से रुद्र वाहिनी टीम द्वारा संरक्षक दिलीप अठावाल और अध्यक्ष मुकेश भोई के साथ भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष प्रभु जी पंड्या के नेतृत्व में श्री राघव शरणम् संस्थान के प्रवीण श्रीमाल, राजस्थान गौ सेवा समिति के विनोद पंचाल, सनातन धर्म समिति के संरक्षक प्रभु कंसारा,एवम जीवनधर जैन द्वारा शहर के विभिन्न सामाजिक संगठनों, धार्मिक और आस्थावान लोगो से धौला गढ़ धाम पर प्रतिदिन चल रहे विशाल भंडारे में सहयोग के लिए महंत प्रकाश नाथ जी द्वारा आदेशित खाद्य तेल के डिब्बों के डूंगरपुर के जगदीश मंदिर राजाजी जी की छतरी में महंत लवकुश शरण जी के सानिध्य में एकत्रीकरण का कार्य निरंतर चल रहा है। महाराज जी की प्रेरणा से इसी क्रम में डूंगरपुर से रुद्र वाहिनी टीम द्वारा एक खेप पहले ही भेजी जा चुकी थी और आज रविवार तीन अगस्त को दूसरी खेप पिक अप में भरवाकर रवाना की गई। रुद्र वाहिनी के प्रदेश संरक्षक दिलीप अठावाल ने बताया कि अति रुद्र महायज्ञ कार्यक्रम में चार मुख्य कथाएं हो रही है। जिसमे दो हो चुकी है तीसरी अभी उत्तम स्वामी जी द्वारा श्रीमद भागवत कथा हो रही है इसके बाद श्री गोपाला नंद सरस्वती जी महाराज द्वारा गौ कथा की जाएगी। श्री राघव शरणम् संस्थान के प्रवीण श्रीमाल ने बताया कि डूंगरपुर से गौ भक्तो से विशेष अनुरोध है कि इस गौ कथा में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित रहकर कथा श्रवण का लाभ प्राप्त करे तथा श्री गोपाला नंद सरस्वती जी महाराज की प्रेरणा से श्री राघव शरणम् संस्थान द्वारा डूंगरपुर में बनने वाली सनातनी गौ शाला के निर्माण में सहयोग करे और श्री राघव गौ सेवा समिति के अजीवन स्थाई सदस्य बने। हमारा ये विशेष प्रयास रहेगा कि इसी कार्यक्रम के मध्य डूंगरपुर में इस हेतु परम गौ भक्त श्री गोपाला नंद सरस्वती जी महाराज का आगमन हो और उनके श्री मुख से शहर के लोगो को भी गौ माता के लिए उनके वचनों का लाभ सभी को मिल सके। इस अवसर पर महंत लवकुश शरण जी के साथ रुद्र वाहिनी संघ की पूरी टीम उपस्थित रही।

कलश यात्रा में उमड़े श्रद्धाल

टोंक। कश्यप कीर युवा विकास समिति टोंक के तत्वावधान में रविवार को कांवड़ व कलश यात्रा निकाली गई, यह कलश यात्रा बनास नदी से जल भर कर जुलूस के रूप में निकाली गई, जो कीर समाज छावनी टोंक के राधाकृष्ण मंदिर में पहुंचकर शिव पंचायत में जलाभिषेक किया गया। इस दौरान कीर समाज के 250 युवाओं ने कांवड़ यात्रा निकाली तथा इसमें इतनी ही महिलाओं ने भी कलश लिए। इस कलश और कांवड यात्रा का जगह जगह शहरवासियों ने पुष्प वर्षा करके स्वागत किया।

राजस्थान ग्रामीण बैंक ने पौधे रोपे

अजमेर (कासं)। राजस्थान ग्रामीण बैंक आदर्श नगर शाखा ने रविवार हरित राजस्थान अभियान के तहत अर्जुन लाल सेठी नगर स्थित अभिमन्यु पार्क में वृक्षारोपण किया। आदर्श नगर शाखा की प्रबंधक भारती अग्रवाल ने बताया कि सामाजिक सरोकार के क्षेत्र में अग्रणीय भूमिका निभाते हुए राजस्थान ग्रामीण बैंक ने अभिमन्यु पार्क में फलदार एवं छायादार बडे वृक्षो का वृक्षारोपण किया एवं क्षेत्रीय निवासियों को देखभाल की जिम्मेदारी दी । इस मौके पर बैक कर्मचारी समय पर मौजूद रह कर पौधे लगाए। पौधारोपण के समय उत्साह का वातावरण हो रहा था। सदस्य कएक दूसरे की मदद कर रहे थे पौधे लगवाने में । इस अवसर पर अखिलेश गर्ग राजेंद्र चौधरी रोहन राडिया उत्तम शर्मा ज्ञानचंद मालू दीपक खरे एवं क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

डॉ.गर्ग ने अधिकारियों से की वार्ता

भरतपुर (निस)। पूर्व मंत्री, भरतपुर विधायक व राष्ट्रीय लोकदल के महासचिव डॉ. सुभाष गर्ग ने जिला कलक्टर, बीडीए आयुक्त एवं सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिकारियों से भरतपुर विधानसभा क्षेत्र के टोंटपुर-तुहिया मार्ग पर हुये हादसे से सबक लेते हुये ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों की क्षितठास्त हो रही सड़कों की मरम्मत कराकर आमजन को राहत देने की मांग की है । डॉ. गर्ग ने प्रशासनिक अधिकारियों को अवगत कराया कि टोंटपुर-तुहिया मार्ग पर सडक पर काफी समय से गड्ढे होने की कई बार सम्बन्धित अधिकारियों को बताया गया, अगर समय रहते ध्यान दिया जाता तो टैक्टर-टॉली के पलट जाने पर चपेट में आये मां-बेटे की मृत्यु नहीं होती।

कंटेनर से टक्कर के बाद कैम्पर की चपेट में आये बाइक सवार की मौत

पावटा। कस्बा पावटा पेट्रोल पंप के सामने फ्लाईओवर पर एक दर्दनाक सड़क हादसा हुआ है। यह घटना रविवार सुबह की है। जहां फ्लाईओवर के पास एक कंटेनर ने एक कैम्पर को टक्कर मार दी। जिस पर कैम्पर टक्कर लगने के बाद अनियंत्रित हो गया व एक बाइक सवार को चपेट में ले लिया। यह घटना इतनी जबरदस्त थी कि बाइक सवार की घटनास्थल पर ही तडप तडप कर मौत हो गई। मृतक का नाम प्रकाश पुत्र रामलाल उम्र 62 साल निवासी किडारोद है। हालांकि इस घटना में कैम्पर गाड़ी में सवार लोग भी बुरी तरह घायल हुआ है। उन्हें भी काफी गंभीर चोट आई है। जिन्हें पावटा उपजिला अस्पताल में भर्ती करवाया गया। घायलों जतिन उम्र 4 साल, गीता उम्र 30 साल संतोष उम्र 35 साल, सरोज उम्र 32 साल की हालत को देखते हुए घायलों को कोटपुतली जिला अस्पताल बीडीएम अस्पताल के लिए रेफर किया गया।प्रागपुरा थाना पुलिस एएसआई कंवरपाल सिंह ने बताया कि इस सड़क दुर्घटना में प्रकाश पुत्र रामलाल उम्र 62 साल निवासी किडारोद की मौत हो गई व घायलो जतिन उम्र 4 साल, गीता उम्र 30 साल, संतोष उम्र 35 साल, सरोज उम्र 32 साल को पावटा उपजिला अस्पताल लाया गया था। जहां से उसका प्राथमिक इलाज करने के बाद कोटपुतली जिला अस्पताल रेफर किया।

■ फ्लाईओवर के पास एक कंटेनर ने एक कैम्पर को टक्कर मार दी। जिस पर कैम्पर टक्कर लगने के बाद अनियंत्रित हो गया व एक बाइक सवार को चपेट में ले लिया। यह घटना इतनी जबरदस्त थी कि बाइक सवार की घटनास्थल पर ही तडप तडप कर मौत हो गई।

सामूहिक विवाह सम्मेलन पर चर्चा

भरतपुर (निस)। जिला बघेल महासभा कार्यालय सूरजपोल पर आमसभा की बैठक में सर्वसम्मति से आगामी फुलेरा दौज को होने वाले सामूहिक विवाह सम्मेलन को लेकर चर्चा हुई जिसमें सर्व सम्मति से कमल सिंह सूरजपोल को समिति का अध्यक्ष व रमेश चंद प्रधानाचार्य को संयोजक नियुक्त किया गया तथा 21 सदस्यीय कार्यकारिणी गठित की गई। बघेल महासभा के चुनाव संरक्षक मण्डल ने नवम्बर 2025 में जिला बघेल महासभा के अध्यक्ष का चुनाव कराने की घोषणा की है। इस मौके पर डोरीलाल एडवोकेट, एन.डी. शास्त्री, मूलचंद आर्य, दिनेश मुरवारा, बंटी गांमडी, सत्येन्द्र झीलरा, विष्णु ब्रजवासी, गोपाल पीटीआई, गोपाल सिंह सूरजपोल, ० राम प्रसाद आदि मौजूद थे।

गोवर्धन में हिण्डौन भक्त मंडल का भव्य भंडारा

हिंडौन सिटी। श्रावण मास की पावन बेला में गोवर्धन धाम में भक्ति और सेवा का संगम देखने को मिला, जबहिण्डौन भक्त मंडलकी ओर से मासिक भंडारे का आयोजन किया गया। इस दौरान सैकड़ों श्रद्धालुओं एवं पदयात्रियों को प्रसाद वितरण कर सेवाभाव का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया गया।

भक्त मंडल के प्रमुखशिवदत्त पाराशरऔरमुकेश खंडेलवालने बताया कि हर महीने आयोजित होने वाले इस भंडारे में इस बार विशेष संख्या में श्रद्धालु गोवर्धन पहुंचे।सोंख रोड स्थित हिण्डौन वालों की धर्मशालामें आयोजित इस आयोजन में सुबह से ही चाय, नाश्ता और भंडारे की व्यवस्था चालू कर दी गई थी।

श्रद्धालुओं ने पंक्तिबद्ध होकर प्रसाद ठाहण किया और आयोजकों को शुभकामनाएं दीं। श्रावण मास में होने वाली गोवर्धन परिक्रमा में श्रद्धालुओं की संख्या में खासा इज़ाफा देखने को मिला है, जिससे इस बार का भंडारा विशेष रूप से प्रभावशाली रहा भक्त मंडल के सदस्यों सहित कई स्वयंसेवकों ने आयोजन में तन-मन-धन से सहयोग किया। श्रद्धालुजन सेवा कार्य से अभिभूत नजर आए और आयोजन को धर्मनगरी के लिए प्रेरणादायक बताया।

■ श्रावण मास की पावन बेला में गोवर्धन धाम में भक्ति और सेवा का संगम देखने को मिला, जबहिण्डौन भक्त मंडलकी ओर से मासिक भंडारे का आयोजन किया गया। इस दौरान सैकड़ों श्रद्धालुओं एवं पदयात्रियों को प्रसाद वितरण कर सेवाभाव का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया गया।

एक पेड़ मां के नाम अभियान में विधायक ने रौपे पेड़

भीण्डर। प्राकृतिक संतुलन, हरियाली और स्वच्छ पर्यावरण के उद्देश्य से भीण्डर क्लब के नेतृत्व में रविवार सुबह एक पेड़ भीण्डर के नाम अभियान के तहत भव्य सामूहिक पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन भैरव राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के खेल मैदान में किया गया। कार्यक्रम में 201 पौधे रोपे गए और लोगों ने पर्यावरण संरक्षण का सामूहिक संकल्प लिया। इस कार्यक्रम में आनंद मार्ग नव्य मानवतावाद संगठन एवं सगन वृक्षारोपण महाअभियान के कार्यकर्ताओं की भागीदारी रही। विभिन्न सामाजिक संगठनों, विद्यालय प्रशासन, स्थानीय जनप्रतिनिधियों और युवा वर्ग ने मिलकर इस आयोजन को सफल बनाया।

भीण्डर क्लब के तत्वावधान में आयोजित एक पेड़ भीण्डर के नाम पौधरोपण कार्यक्रम में वल्लभनगर विधायक उदयलाल डांगी, पूर्व विधायक रणधीर सिंह भीण्डर, पूर्व विधायक प्रीति गजेन्द्र सिंह शक्तावत ने पौधारोपण कार्यक्रम में पहुंच करके पौधारोपण किया और सभी साथियों का अभियान के लिए हौंसला बढ़ाया। इसके अलावा भीण्डर पंचायत समिति प्रधान हरिसिंह सोनिगरा, युवा किसान नेता कुबेरसिंह चावडा, भीण्डर मित्र मण्डल अध्यक्ष लोकेन्द्र सिंह चावडा, शिक्षाविद् प्रकाश वया, भारत विकास परिषद अध्यक्ष सुशील जैन, आंनद मार्ग से इन्द्रसिंह राठौड़ और टीम, भैरव स्कूल प्रधानाचार्य हीरालाल कुमावत आदि ने कार्यक्रम में भाग लेकर पौधारोपण किया। वल्लभनगर विधायक उदयलाल डांगी ने कहा पौधारोपण कार्यक्रम से प्रतिदिन जुड़ता हूं, अब तक करीब एक लाख पौधे लगा चुका हूं। पौधारोपण के लिए किसी भी प्रकार के सहायता के लिए हर समय तैयार हूं। पूर्व विधायक रणधीर सिंह भीण्डर ने अभियान की सराहना करते हुए कहा भीण्डर क्लब ऐसे कार्य करती रहे। भीण्डर क्षेत्र में पिछले तीन वर्षों से बारिश कम हो चुकी हैं, इसलिए ज्यादा से ज्यादा पौधारोपण किया जाएं ताकि हरियाली और बारिश दोनों बढ़ें। पूर्व विधायक प्रीति गजेन्द्र सिंह शक्तावत ने कहा कि हरियाली, स्वच्छता और पर्यावरण के प्रति सब की जिम्मेदारी हैं, ये अभियान केवल पौधारोपण तक सीमित नहीं रहकर इनको पेड़ बनने तक जिम्मेदारी निभाना प्रमुख है। इस अभियान में भीण्डर क्लब और प्रकृति प्रेमियों की सक्रिय सहभागिता देखने को मिली। भीण्डर क्लब के सदस्य, विद्यालय के छात्र, शिक्षक, ठाामवासी और स्वयंसेवकों ने मिलकर एक सशक्त और संगठित आयोजन किया। कार्यक्रम में पौधों की सुरक्षा, सिंचाई और देखभाल के लिए स्थानीय स्तर पर समिति का गठन भी किया गया। इस अवसर पर भीण्डर क्लब अध्यक्ष रत्नेश कोठारी, सचिव विकास चव्हाण, कोषाध्यक्ष शरद अठावाल, संरक्षक मुकेश गांगावत, सुभाष सोनी, हितेश व्यास, पंकज वया, कैलाश जांगिड़, आशिष डवारा, पूर्व अध्यक्ष महेन्द्र सिंह राठौड़, पवन मंदावत, विरेन्द्र दक, प्रेमसिंह चौहान, ओमप्रकाश भोई, ललित वया, निलेश उदेयपुरिया, भूपेन्द्र आमेटा, , हातिमअली बोहरा, ललित प्रजापत, मनीष जोशी, मुकेश सुथार, शोयब बोहरा आदि उपस्थित रहें।

जनसुनवाई में क्षेत्रवासियों की समस्या के तत्काल निराकरण के लिए निर्देश

विराटनगर विधानसभा क्षेत्रीय विधायक कुलदीप धनकड ने ग्राम भांकरी निवास पर जनसुनवाई की।

पावटा। विधानसभा के विकास और जनता की समस्याओं के लिए निरंतर कार्य करते हुए विराटनगर विधानसभा क्षेत्रीय विधायक कुलदीप धनकड ने ग्राम भांकरी निवास पर जनसुनवाई के तहत जनता से रूबरू हुए।

जनसुनवाई के माध्यम से क्षेत्रवासियों की समस्याओं को सुना और वहां उपस्थित समस्त शासकीय विभागों के अधिकारियों को उनके तत्काल निराकरण के लिए निर्देश दिए। विधायक कुलदीप धनकड ने कहा कि क्षेत्र में जनता की समस्याओं से अवगत होने व उसके निराकरण के लिए जनसुनवाई मे बहुत से क्षेत्रवासी अपनी समस्या, क्षेत्र में व्यापत विभिन्न आवश्यकताओं को लेकर पहुंचे। इसमें कुछ ऐसी समस्याएं जिनका यथास्थल पर तत्काल निराकरण किया गया है और बाकि मांगों, सुझावों व समस्याओं के लिए यहां उपस्थित अधिकारियों को तत्काल निराकरण के लिए निर्देश भी दिए हैं। इस दौरान बड़ी संख्या में क्षेत्र से आए हुए ग्रामीण, जनप्रतिनिधि, भाजपा पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

■ उपस्थित समस्त शासकीय विभागों के अधिकारियों को उनके तत्काल निराकरण के लिए निर्देश दिए।

'राष्ट्र भावना व समाज सेवा के लिए स्काउट है जरूरी'

डूंगरपुर। राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड जिला मुख्यालय डूंगरपुर में आयोजित राज्य पुरस्कार गाइड प्रशिक्षण शिविर समापन समारोह में आज जिले के सभापति महोदय श्री अमृतलाल कलासुआ के आथित्य मे संपन्न हुआ अतिथि महोदय का स्काउट परंपरा से स्वागत किया गया एवं स्काउट गाइड गतिविधियों की जानकारी दी सभापति महोदय ने स्काउट गाइड से बातचीत की एवं इस मानसून विकट परिस्थिति में शिविर में किस प्रकार से जीवन यापन किया उसकी जानकारी ली। सभापति ने अपने उद्बोधन में कहां कि आज आधुनिकता के साथ स्काउट संगठन एक ऐसा संगठन है जिसमें एक बालक को प्रकृति, समाज एवं जमीन से जोड़ना सिखाती है एक बालक जो घर पर पूर्ण सुख सुविधायो आराम में रहता है वह बालक स्काउट में आकर टेंट में दरी के ऊपर अपना जीवन यापन करता है खुद का कार्य स्वयं करता है एवं जीवन जीने की कल को सीखना है साथ ही आभाव मे कैसे जिना है । सी ओ भाविक सुथार ने बताया कि शिविर मे डूंगरपुर जिले की 125 बालिकाओं ने भाग लिया यह उनका राज्य पुरस्कार प्रशिक्षण शिविर है इसके पश्चात इनका जांच शिविर होगा जिसमें जो बालिकाएं उत्तीर्ण होगी उन्हें राज्य पुरस्कार गाइड अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा। समारोह में सुशीला डामोर, भारती कोटेड, कमला खाट, मंजुला मीणा, भाविका सोनी, हेमलता, रंजा पाटीदार अनीता रोत,ललित बरांडा, पुरुषोत्तम सोनी, मकसीराम कलेजा गणेश डामोर अल्पेश लोहार आमीन, आशीष,रेंजर मेघिला उपस्थित रहे।

विभिन्न मामलों में 18 आरोपी गिरफ्तार

बौंली थाना पुलिस ने विभिन्न मामलों में 18 आरोपी गिरफ्तार किए।

बौंली- बामनवास,। सवाई माधोपुर जिला पुलिस अधीक्षक अनिल कुमार बेनीवाल के निर्देशन में चलाए जा रहे एरिया डोमिनेशन अभियान के तहत बौंली थाना पुलिस ने विभिन्न मामलों में 18 आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। बौंली पुलिस थाने के हैड कांस्टेबल धर्मेंद्र चौधरी ने बताया कि थाना प्रभारी राधा रमन गुप्ता के नेतृत्व में गठित अलग-अलग पांच टीमों ने एरिया डोमिनेशन अभियान के तहत कार्रवाई करते हुए एनडीपीएस एक्ट, आबकारी एक्ट, आर्म्स एक्ट, ध्वनि प्रदूषण, हिस्ट्रीशीटर, आदतन अपराधियों सहित विभिन्न प्रकरण में वांछित 18 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों में हिमांशु उर्फ कबड्डी जैन उम्र 29 वर्ष निवासी बौंली, दिलीप् रैगर उम्र 34 वर्ष निवासी पीपलदा को आबकारी एक्ट में, लल्लू लाल मीणा निवासी खिरनी को आबकारी एक्ट में, सुरेश बागड़िया उम्र 33 वर्ष निवासी जोलंदा को आर्मी एक्ट में, महेंद्र बंजारा उम्र 37 वर्ष निवासी भजनेर की झोपड़ी थाना देई को आरएनसी एक्ट में, युगल पाराशर उम्र 39 वर्ष निवासी बौंली को स्थाई वारंट में, पप्पू उर्फ रतनलाल कीर उम्र 55 वर्ष निवासी संवासा नदी को गिरफ्तारी वारंट में, फेरूलाल मीणा उम्र 35 वर्ष निवासी बहनोली को बीएनएसएस में, हेमराज मीणा उम्र 45 वर्ष निवासी बहनोली को बीएनएसएस में, लोकेश मीणा 30 वर्ष निवासी बहनौली को बीएनएसएस में, बालकिशन गुर्जर उम्र 32 वर्ष निवासी थड़ी को बीएनएसएस में, कन्हैयालाल महावर उम्र 40 वर्ष निवासी बहड को बीएनएएस में, मोहनलाल मीणा उम्र 25 वर्ष निवासी ईदावा थाना लालसोट को भी बीएनएसएस में, हरगोविंद गुर्जर निवासी रवासा को, खेम सिंह गुर्जर निवासी रवासा को, रामस्वरूप मीणा उम्र 47 वर्ष निवासी हिंदूपुरा को, विकास उर्फ धौलू मीणा उम्र 30 वर्ष को गिरफ्तार किया।

2008 में सीएसके के साथ अपना सफर शुरू किया और उन्हें पांच आईपीएल खिताब दिलाए। फ्रेंचाइजी और शहर के साथ मेरे सफर ने व्यक्तिगत विकास में अहम भूमिका निभाई है।
– महेन्द्र सिंह धोनी

पूर्व सीएसके कप्तान, आईपीएल 2026 में खेलने की इच्छा जाहिर करते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी — यशस्वी जायसवाल

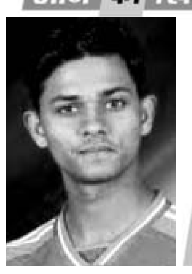

इंग्लैंड के खिलाफ ओवल टेस्ट की दूसरी पारी में 118 रनों की पारी खेलकर भारत को एक मजबूत स्थिति में पहुंचाने वाले युवा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल ने कहा कि वह अपनी पारी को और बड़ा करना चाहते थे लेकिन अंत में वह अपने प्रदर्शन से संतुष्ट हैं। मैं और बेहतर करना चाहता था, मैं इससे बड़ी पारी खेलना चाहता था। अगर ऐसा होता तो मैं कुछ और भी हासिल कर सकता था। लेकिन ठीक है, मैंने इसके लिए काफी मेहनत की थी और मैं इसका लुत्फ उठा रहा हूं। जब मैं बल्लेबाजी करने जाता हूं तो मेरी कोशिश यही रहती है कि जितना संभव हो सके उतनी देर बल्लेबाजी कर सकूं।

क्या आप जानते हैं ?... भारत और इंग्लैंड बीच जारी टेस्ट सीरीज में अभी तक कुल 18 बार शतकीय साझेदारी हो चुकी है। जो 21वीं सदी में सबसे ज्यादा है।

'घर का पूत कुंवारा डोले, पाड़ोसी का फेरा'

एसएमएस हॉकी ग्राउंड में लगा असुविधाओं का अंबार, खेल विभाग द्वारा अनदेखी का आरोप

जयपुर, 3 अगस्त। एक मारवाड़ी कहावत बहुत प्रचलित है कि " घर का पूत कुंवारा डोले, पाड़ोसी का फेरा"। यह कहावत खेल विभाग के उस फैसले पर खरी उतरती है कि आरसीए अकादमी का नाम बदलकर मेजर ध्यानचंद भवन रखा जा रहा है जोकि राजस्थान क्रिकेट और हॉकी जगत में चर्चा का विषय बना हुआ है। जबकि दूसरी ओर सवाई मानसिंह स्टेडियम में स्थित हॉकी ग्राउंड का हाल बद से बदतर हो रहा है। उस ओर खेल विभाग का ध्यान बिल्कुल भी नहीं जा रहा है।

अगर खेल विभाग चाहता तो जब से हॉकी ग्राउंड पर एस्ट्रोट्फ लगा है तब से आज तक हॉकी ग्राउंड का नाम हॉकी लेजेंड मेजर ध्यानचंद हॉकी ग्राउंड रखा जा सकता था, इसके साथ ही खेल विभाग की ओर से मेजर ध्यानचंद को सच्ची श्रद्धांजलि होती। मगर "वाह री हॉकी तेरी किस्मत" हॉकी ग्राउंड की अनदेखी कर क्रिकेट अकादमी का नाम बदलकर मेजर ध्यानचंद भवन रखा जा रहा है। राजस्थान क्रिकेट संघ एक करोड़ रूपये की राशि सवाई मान सिंह स्टेडियम स्थित हॉकी मैदान में हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की प्रतिमा (स्टेच्यू) व भवन निर्माण हेतु तत्पर है व कमेटी का मानना है कि हॉकी भवन व मेजर ध्यानचंद की प्रतिमा का निर्माण मेजर ध्यानचंद को सच्ची श्रद्धांजलि होगी, साथ ही राज्य हॉकी के युवा खिलाडियों को प्रेरणा भी देगा।

होना तो यह चाहिए कि खेल विभाग खिलाड़ियों को हॉकी के विभिन्न पहलुओं, जैसे शारीरिक, मानसिक और सामरिक, में सुधार करने पर ध्यान केंद्रित करें और छात्रों को समय प्रबंधन, स्वतंत्रता और संगठनात्मक कौशल विकसित करने में मदद करें लेकिन इसका उल्टा ही हो रहा है। सवाई मानसिंह स्टेडियम, जयपुर में एक अंतरराष्ट्रीय टर्फ हॉकी स्टेडियम है। यह स्टेडियम कई अन्य खेल गतिविधियों के साथ-साथ हॉकी के लिए भी एक प्रमुख स्थान है। यहां विश्व स्तरीय अंतरराष्ट्रीय हॉकी ग्राउंड है।

जयपुर में आज से दो दशक पहले एस्ट्रोट्फ हॉकी ग्राउंड पर लगाया गया था ताकि राजस्थान के हॉकी ग्राउंड पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल खेला जा सके और राजस्थान के खिलाड़ियों को एस्ट्रोट्रफ में खेलने की प्रेक्टिस हो सके साथ ही अपने खेल प्रतिभा को निखारने का अवसर मिल सके। इसका कितना फायदा खिलाड़ियों को मिला है ये सभी जानते हैं। फिर दुबारा इसका रेनोवेशन ऑफ सिंथेटिक हॉकी एस्ट्रोट्रफ मैदान का लोकार्पण रविवार, दिनांक 29.5.2022 को किया गया जिसका लोकार्पण का पत्थर लगा हुआ है हॉकी ग्राउंड के गेट के पास। कुल मिलाकर खेल विभाग को हॉकी ग्राउंड और हॉकी खिलाड़ियों की सुविधाओं की ओर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है अन्यथा हॉकी ग्राउंड एवं हॉकी खिलाड़ियों का भविष्य संवर नहीं सकता है।

राज्य सरकार द्वारा खिलाड़ियों को विश्व स्तर पर पहुंचाने का सपना अधूरा ही रह जाएगा

हॉकी ग्राउंड में आने वाले खिलाड़ियों को असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। एक तरफ मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और खेलमंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़ खेल ओर खिलाड़ियों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाना चाहते हैं वहीं खेल विभाग हॉकी ग्राउंड पर आने वाले खिलाड़ियों की जान का दुश्मन बना हुआ है। ग्राउंड में खिलाड़ियों के लिए लगे हुए टीन शेड्स के अंदर बिजली के तार और बोर्ड जमीन पर टूटे पड़े हुए हैं जिससे किसी भी खिलाड़ी को करंट लग सकता है। खिलाड़ियों की जान की कोई सिक्योरिटी नहीं है। अगर खिलाड़ियों के साथ कोई दुर्घटना होती है तो कौन जिम्मेदार होगा? इसका कोई जवाबदेही नहीं है। खिलाड़ियों के बैठने की कुर्सियां भी गायब है। हॉकी ग्राउंड पर रखे हुए डस्टबिन में कचरे की जगह बरसात का पानी भरा हुआ है और लोहे की जालियों के पास कचरे का अंबार लगा हुआ है। ताज्जुब कि बात तो यह है कि कीमती पुराने एस्ट्रोट्रफ को काटकर कचरे को ढकने के काम में लिया जा रहा है। एस्ट्रोट्रफ इस हॉकी ग्राउंड के लिए पुराना हो गया होगा लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उस एस्ट्रोट्रफ को खुले आसमान के नीचे सर्दी, गर्मी ओर बरसात की मार झेलने के लिए खुले में पटक दिया जाए। लोहे की जालियों को भी खुले में रखा गया है जिसमें आधे से ज्यादा लोहे को जंग लग गई है। पुराने गोल पोस्टों की भी हालत भी ऐसी ही है। ऐसा लगता है कि नए नए खेल सामान ग्राउंड पर लगाए जाए और पुराने फेंक दिए जाए। ये सभी पुराने सामान और जगह इस्तेमाल किए जा सकते हैं। लेकिन कोई जिम्मेदार नहीं है। हॉकी ग्राउंड के बाहर कचरे का ढेर लगा हुआ है। उस ओर किसी भी अधिकारी, कर्मचारी, ओर कोच का ध्यान ही नहीं जाता है।

राजस्थान शतरंज संघ में विवाद

19 वर्षों से खिलाड़ियों को टीए/डीए नहीं

जयपुर, 3 अगस्त। राजस्थान शतरंज संघ में लंबे समय से चल रहा प्रशासनिक विवाद अब गहराता जा रहा है। संघ के अध्यक्ष और उनके समर्थक कुछ जिला पदाधिकारी न सिर्फ राज्य संघ संविधान का उल्लंघन कर रहे हैं, बल्कि रजिस्ट्रार सहकारिता विभाग राजस्थान द्वारा दिए गए स्पष्ट आदेशों की अवहेलना करते हुए अवैध चुनाव की घोषणा भी कर चुके हैं।

इस पूरी स्थिति का सबसे दुखद पहलू यह है कि पिछले 19 वर्षों से राज्य के शतरंज खिलाड़ियों को टीए/डीए तक नहीं मिल रहा है। आरसीए बीते 15 वर्षों से "डिफंक्ट" (अकार्यरत) स्थिति में है। इतना ही नहीं, वर्ष 2005 से लेकर 2021 तक आरसीए में ना तो कोई वैध चुनाव कराए गए और ना ही किसी प्रकार की ऑडिट रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। इन्हीं आधारों पर राजस्थान राज्य खेल परिषद ने आरसीए को विवादित खेलों की सूची में डाल रखा है, और अब तक उसे मान्यता नहीं दी है।

आरसीए का वर्तमान विवाद कैसे शुरू हुआ?

यह विवाद उस समय सामने आया जब जयपुर जिला शतरंज संघ ने जयपुर में फरवरी 2024 में नेशनल एमेच्योर प्रतियोगिता का आयोजन किया। उसी दौरान कुछ ज़िलों–जिन पर पहले से ही ज़िला रजिस्ट्रार और खेल कार्यालयों में जांच लंबित थी–ने मिलकर आरसीए के सचिव को निलंबित करने की साज़िश रची। यह निलंबन पत्र अध्यक्ष द्वारा जारी किया गया, जबकि आरसीए के संविधान के अनुसार अध्यक्ष को ऐसा कोई अधिकार नहीं है।

गंभीर वित्तीय और प्रशासनिक आरोप लंबित हैं।

इसके बावजूद पूर्व अध्यक्ष के गुट ने अवैध चुनाव की घोषणा कर दी है, और ज़िला संघों पर इस गैरकानूनी प्रक्रिया में भाग लेने का दबाव बनाया जा रहा है। अध्यक्ष द्वारा अखिल भारतीय शतरंज संघ में अपने पद का दुरुपयोग करते हुए, आरसीए सचिव द्वारा भेजे गए राज्य स्तरीय कार्यक्रमों को भी रोका गया है।

खिलाड़ियों की मांग और भविष्य

राज्यभर के खिलाड़ी और कोच इस स्थिति से अत्यधिक परेशान हैं। टीए/डीए की अनुपलब्धता, टूर्नामेंटों की अनिश्चितता, और चयन प्रक्रिया में पारदर्शिता की कमी ने खेल गतिविधियों को प्रभावित किया है। खिलाड़ियों का कहना है कि जब तक आरसीए में वैध एडहॉक समिति नहीं बनती या सरकार स्वयं हस्तक्षेप नहीं करती, तब तक उनका भविष्य अधर में ही रहेगा। वे राज्य सरकार से यह अपील कर रहे हैं कि आरसीए में तत्काल स्वतंत्र, निष्पक्ष और वैध चुनाव की प्रक्रिया शुरू की जाए, ताकि संघ को दोबारा कार्यरत बनाकर खिलाड़ियों को उनका उचित लाभ दिलाया जा सके।

आयु धोखाधड़ी रोकने के लिए करने जा रहा है स्क्रीनिंग एजेंसी नियुक्त : बीसीसीआई

मुम्बई, 3 अगस्त। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) आयु-धोखाधड़ी रोकने और खिलाड़ियों की योग्यताओं के सत्यापन के लिए एक बाहरी एजेंसी को नियुक्त करने जा रहा है। बीसीसीआई के अनुसार आयु-धोखाधड़ी और खिलाड़ियों की योग्यताओं के सत्यापन के लिए एक बाहरी एजेंसी की नियुक्ति की प्रक्रिया में है। हाल ही में एक आरएफपी जारी किया गया है, जिसमें सत्यापन सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रतिष्ठित संस्थाओं से बोलियां आमंत्रित की गई हैं। इस आउटसोर्स एजेंसी के अगस्त के अंत तक स्थापित होने की उम्मीद है।

ऐसा माना जा रहा है कि यह मामला खिलाड़ियों द्वारा प्रस्तुत किए गए दस्तावेज या प्रमाण पत्र संदिग्ध पाए से संबंधित है। बीसीसीआई का उद्देश्य इस प्रक्रिया को पेशेवर बनाना और अधिक आयु के खिलाड़ियों के इस प्रणाली में प्रवेश करने की किसी भी संभावना को समाप्त करना है। बीसीसीआई दो-स्तरीय आयु-सत्यापन प्रणाली अपनाता है – पहले में दस्तावेज़ों और जन्म प्रमाण पत्रों की जाँच शामिल है, जबकि दूसरा अस्थि परीक्षण है, जिसे आमतौर पर टीडब्ल्यू3 (टैनर-व्हाइटहाउस 3) पद्धित के रूप में जाना जाता है। ये सत्यापन आमतौर पर लड़कों के लिए अंडर-16 स्तर पर और लड़कियों के लिए अंडर-15 स्तर पर किए जाते हैं।

बीसीसीआई ने बोली लगाने वाली संस्थाओं से अपेक्षित आवश्यकताओं की रूपरेखा तैयार की है। एक हालिया अधिसूचना के अनुसार, बोली लगाने वाली कंपनियों/एजेंसियों के पास प्रतिष्ठित फर्मों को पृष्ठभूमि सत्यापन सेवाएं प्रदान करने का कम से कम तीन वर्ष का अनुभव होना चाहिए। इनमें कॉर्पोरेट कंपनियां शैक्षिणक बोर्ड/संस्थान और भर्ती निकाय शामिल हैं, लेकिन यह इन्हीं तक सीमित नहीं हैं।

इसके अलावा, इच्छुक पक्षों के पास एक राष्ट्रव्यापी नेटवर्क या सभी भारतीय राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में भौतिक और डिजिटल दोनों तरह से सत्यापन करने की क्षमता होनी चाहिए। उल्लेखनीय है कि बीसीसीआई वर्ष में इसी समय जुलाई और अगस्त के आसपास आयु सत्यापन करता है। इस वर्ष यह प्रक्रिया सितंबर तक भी बढ़ सकती है क्योंकि एजेंसी के इस महीने के अंत तक काम शुरू करने की उम्मीद है। सत्यापन राज्यवार किया जाता है और प्रत्येक राज्य से, प्रत्येक बालक और बालिका वर्ग में, 40-50 खिलाड़ियों को परीक्षण प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है।

ओवल टेस्ट-खराब लाइट से चौथे दिन का खेल जल्दी खत्म

ब्रूक-रूट के शतक, इंग्लैंड जीत से 35 रन दूर

लंदन, 3 अगस्त। हैरी ब्रूक (111) और जो रूट (105) की शानदार शतकीय पारियों के बाद बारिश के खलल के कारण दिन का खेल समाप्त किये जाने के समय इंग्लैंड ने भारत के खिलाफ पांचवें और अंतिम टेस्ट के चौथे दिन रविवार को दूसरी पारी में छह विकेट पर 339 रन बना लिए हैं और वह जीत से अब 35 रन दूर है।

चायकाल के बाद चार विकेट पर 317 रनों से आगे इंग्लैंड ने खेलना शुरु किया। इसी दौरान जो रूट ने अपना शतक पूरा किया। रूट ने 152 गेंदों में 12 चौकों की मदद से 105 रनों की पारी खेली। उन्हें प्रसिद्ध कृष्णा ने विकेटकीपर ध्रुव जुरेल के हाथों कैच आउट कराया। इसके बाद प्रसिद्ध कृष्णा ने जेकब बेथेल (पांच) को बोल्ड कर मैच को एक बार फिर भारत की ओर मोड दिया। 77वें ओवर में खराब रोशनी के कारण खेल रोका गया। उसके बाद बारिश होने लगी। मैदानी अम्पयरों ने मैदान का निरीक्षण करने के बाद दिन का खेल समाप्त किये जाने की घोषणा की। इंग्लैंड ने स्टंप के समय छह विकेट पर 339 रन बना लिये है और जेमी स्मिथ नाबाद (दो) और जेमी ओवर्टन बिना खाता खोले क्रीज पर मौजूद है। इंग्लैंड को जहां जीत के लिए 35 रनों की जरूरत है वहीं भारत को चार विकेट की दरकार है। भारत की ओर प्रसिद्ध कृष्णा ने तीन और मोहम्मद सिराज ने दो विकेट लिये। आकाश दीप ने एक बल्लेबाज को आउट किया।

इससे पहले ब्रूक ने 98 गेंदों पर 111 रन की तेज-तर्रार पारी में 12 चौके और दो छक्के लगाए। आकाशदीप ने चायकाल से पहले ब्रूक को आउट किया लेकिन तब तक वह इंग्लैंड को जीत की राह पर अग्रसर कर चुके थे। इस सेशन में कुल 153 रन बने और सिर्फ एक विकेट गिरा है। इसी से पता चलता है कि यह मैच अब किस स्थिति में है। हल्की बूंदा-बांदी हो रही है। अगर यह जारी रहा तो भारत के तेज गेंदबाजों को आराम करने का और कुछ मैजिक करने के लिए रिफ्रेश होने का समय मिल जाएगा। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि यह मैच अब भारत की पहुंच से बाहर जा चुका है।

इससे पहले इंग्लैंड ने कल के एक विकेट पर 50 रन से आगे खेलना शुरु किया। आज सुबह के सत्र में बेन डकेट ने तेजी के साथ बल्लेबाजी करते हुए अपना अर्धशतक पूरा किया। इसके बाद प्रसिद्ध कृष्णा ने बेन डकेट को केएल राहुल के हाथों स्लिप में कैच आउट करा दिया। बेन डकेट ने 83 गेंदों में छह चौकों की मदद से 54 रन बनाये। इसके बाद 28वें ओवर में मोहम्मद सिराज ने कप्तान ऑली पोप (27) को पगबाधा आउटकर भारत को तीसरी सफलता दिलाई।

इंग्लैंड ने लंच तक तीन विकेट पर 164 रन बना लिये थे और हैरी ब्रूक (नाबाद 38) और जो रूट (नाबाद 23) क्रीज पर मौजूद थे। पहले सत्र में भारतीय टीम को दो सफलताएं मिली, वहीं इंग्लैंड ने 114 रन भी बनाए हैं। हैरी ब्रूक का कैच अगर ले लिया जाता तो भारत हावी रहता लेकिन सिराज से गलती हो गई है।

कोको गॉफ पर सनसनीखेज जीत से विक्टोरिया म्बोको क्वार्टर फाइनल में

मॉन्ट्रियल (कनाडा), 3 अगस्त। कनाडा की किशोरी विक्टोरिया म्बोको ने नेशनल बैंक ओपन में बड़ा उलटफेर करते हुए शीर्ष वरीयता प्राप्त अमेरिका की कोको गॉफ को हराकर टूर्नामेंट के क्वार्टरफाइनल में जगह बना ली है।

शनिवार रात खेले गये मुकाबले में कनाडाई किशोरी म्बोको ने शीर्ष वरीयता प्राप्त कोको गॉफ को सीधे सेटों में 6-1, 6-4 से हराया। विश्व में 85वें स्थान पर काबिज म्बोको ने गॉफ को एक घंटे दो मिनट चले मुकाबले में हराया।

कपिल, भूटिया, बिंद्रा, गोपीचंद और नारंग भारत के ओलंपिक भविष्य को आकार देने के लिए एकजुट हुए

हैदराबाद, 3 अगस्त। दिग्गज कपिल देव, बाइचुंग भूटिया, अभिनव बिंद्रा, पुलेला गोपीचंद और गगन नारंग भारतीय खेलों के लिए अपनी तरह की पहली प्रशासनिक पहल में एक साथ आए हैं। इस एकीकृत दृष्टिकोण का उद्देश्य जमीनी स्तर की प्रतिभाओं को मज़बूत करना, बुनियादी ढांचे का अनुकूलन करना और मज़बूत, समग्र खेल विकास के लिए उत्कृष्टता को बढ़ावा देना है। एथलीटों के लिए स्पष्ट मार्ग बनाकर और राज्य की प्रगतिशील खेल नीति के साथ तालमेल बिठाकर, यह पहल तेलंगाना को भारत की खेल महत्वाकांक्षाओं में सबसे आगे रखती है और एक राष्ट्रव्यापी खेल क्रांति की अगुवाई करती है।

ये खेल जगत के दिग्गज, प्रमुख प्रशासकों और उद्योग जगत की शीर्ष हस्तियों के साथ मिलकर तेलंगाना खेल विकास कोष (टीएसडीएफ) के नवगठित बोर्ड ऑफ गवर्नर्स का गठन करते हैं। यह अग्रणी सार्वजनिक-निजी मॉडल जमीनी स्तर की प्रणालियों को मजबूत करने, विभिन्न विषयों में उत्कृष्टता को बढ़ावा देने और भारत के अगली पीढ़ी के चैंपियनों को तैयार करने के लिए एक राष्ट्रीय खाका तैयार करने के लिए डिजाइन किया गया है।

यह बोर्ड जमीनी स्तर के खेल ज्ञान को संस्थागत और कॉर्पोरेट विशेषज्ञता के साथ जोड़ता है, जिसमें आरपी-संजीव गोयनका समूह के अध्यक्ष डॉ. संजीव गोयनका जैसे प्रभावशाली नेता शामिल हैं, जिनके रणनीतिक निवेश क्रिकेट सहित भारतीय खेलों में फैले हुए हैं, और श्रीमती वीता दानी, जिनकी महत्वपूर्ण भूमिका ने भारतीय टेबल टेनिस को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। इसमें सनराइजर्स हैदराबाद की सीईओ काव्या मारन और अपोलो हॉस्पिटल्स फाउंडेशन की उपाध्यक्ष उपासना कामिनेनी रेड्डी जैसी खेल जगत की दूरदर्शी महिलाएं भी शामिल हैं, जो समावेशी खेल विकास के लिए नए दृष्टिकोण और दृढ़ प्रतिबद्धता लेकर आती हैं।

तेलंगाना के मुख्यमंत्री श्री ए. रेवंत रेड्डी , जिन्होंने शनिवार को राज्य की नई, व्यापक खेल नीति के तहत इस पहल का शुभारंभ किया, ने कहा, मेरा मानना है कि यह खेल नीति न केवल हमारे राज्य के लिए, बल्कि पूरे देश के लिए खेलों के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। तेलंगाना के पास खेल उपलब्धियों की एक गौरवशाली विरासत है, और मुझे विश्वास है कि अगर भारत को एक सच्ची खेल महाशक्ति बनना है, तो हमें खेलों को समग्र विकास के एक स्तंभ के रूप में देखना होगा और इस शासी निकाय के गठन से खेलों के विकास को वास्तविक रूप देने में मदद मिलेगी।

क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन, निशानेबाजी और वॉलीबॉल के विश्वसनीय प्रतिनिधियों के साथ, तेलंगाना खेल विकास कोष (टीएसडीएफ) भारत के शीर्ष एथलेटिक, कॉर्पोरेट और प्रशासनिक दिग्गजों के अपनी तरह के पहले एकीकरण का प्रतीक है। स्वतंत्र निर्णय लेने और सहयोगात्मक इरादे से संचालित, यह एक भविष्य-तैयार पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है जो पारदर्शिता, उत्कृष्टता और निरंतर विकास को प्राथमिकता देता है।

अश्विनी विश्नोई ने बढ़ाया राजस्थान का मान : सीएम

जयपुर, 3 अगस्त। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से रविवार को मुख्यमंत्री निवास पर विश्व कुश्ती चैम्पियनशिप में गोल्ड मेडल विजेता भीलवाड़ा निवासी अश्विनी विश्नोई ने मुलाकात की। शर्मा ने दुपट्टा ओढ़ाकर अश्विनी का सम्मान किया तथा उनको इस उपलब्धि के लिए बधाई दी।शर्मा ने इस अवसर पर कहा कि राज्य सरकार खेल प्रतिभाओं को तलाशने और तराशने के लिए हरसंभव प्रयास कर रही है। भीलवाड़ा की बेटी अश्विनी ने कुश्ती में गोल्ड मेडल जीतकर पूरे विश्व में राजस्थान का मान बढ़ाया है। मुख्यमंत्री ने अश्विनी विश्नोई की इस सफलता में मार्गदर्शन एवं सहयोग के लिए उनके पिता मुकेश विश्नोई को भी बधाई दी। उल्लेखनीय है कि अश्विनी विश्नोई ने एथेंस में अंडर 17 वर्ल्ड कुश्ती चैम्पियनशिप के 65 किलो भार वर्ग में गोल्ड मेडल जीता है। इस जीत के साथ ही अश्विनी वर्ल्ड कुश्ती चैम्पियनशिप में गोल्ड मेडल जीतने वाली प्रदेश की प्रथम महिला पहलवान बनी है।

एचसीएल इंडिया स्क्वैश टूर का पहला चरण आज से

मिस्र के यासिन शोहदी और नूर खफागी को मिली शीर्ष वरीयता

जयपुर, 3 अगस्त। स्क्वैश रैकेट फेडरेशन ऑफ इंडिया और एचसीएल के संयुक्त तत्वावधान में सोमवार से यहां शुरू हो रहे एचसीएल इंडिया स्क्वैश टूर 2025 के पहले चरण में मिस्त्र के याासिन शोहदी और नूर खफागी को क्रमशः पुरुष और महिला वर्ग में शीर्ष वरीयता दी गई है। भारत की स्टार स्क्वैश प्लेयर जोशना चिनप्पा और निरुपमा दुबे के टूर्नामेंट की शुरुआत से ठीक एक दिन पहले अपना नाम वापस लेने से राजस्थान की छवि सारण को मेन ड्रॉ में जगह मिल गई। स्क्वैश रैकेट फेडरेशन ऑफ इंडिया की उपाध्यक्ष सुरभि मिश्रा ने रविवार को यहां बताया कि सोमवार से शुरू हो रहे मुकाबलों में मिस्त्र के यासिन शोहदी को शीर्ष वरीयता दी गई है। वहीं जापान के टोमो एंडो को दूसरी, श्रीलंका के रविन्दु लक्सिरी को तीसरी और मलेशिया के डेरिन प्रगासस को चौथी वरीयता मिली है। उन्होंने बताया कि पुरुष वर्ग में टॉप-8 में सूरज कुमार चन्द एकमात्र भारतीय हैं, जिन्हें छठी वरीयता दी गई है। भारत के राहुल बैथा, आर्यवीर दीवान, अयान वजीर अली और दिवाकर सिंह भी चुनौती पेश करेंगे। सुरभि ने बताया कि महिला वर्ग में भी मिस्त्र की नूर खफागी टॉप सीड हैं। वहीं मिस्त्र की ही मेन्ना वलीद को दूसरी, जापान की अकारी मिडोरिकावा को तीसरी और मलेशिया की गो झी शुआन को चौथी वरीयता है। उन्होंने बताया कि टॉप-8 में शामिल चार भारतीय खिलाड़ियों तन्वी खन्ना को पांचवीं, अंजली सेमवाल को छठी, शमीना रियाज को सातवीं और जेनिट विधि को 8वीं वरीयता दी गई है। महिला वर्ग के मेन ड्रॉ में भारत की कुल 17 खिलाड़ी हैं, जिनमें सान्वी बतर, पूजा आरती, अराधना कस्तूरी राज, अनिका दुबे, तनिष्का जैन, आराधना पोड़वाल, सान्या बत्स और उन्नित त्रिपाठी आदि शामिल हैं।

सुरभि मिश्रा ने कहा कि 2028 में होने वाले लास एंजिलिस ओलंपिक में स्क्वैश को भी शामिल किया गया है। इसे देखते हुए ही फेडरेशन और एचसीएल इंडिया ने इंडिया स्क्वैश टूर की शुरुआत की है। जयपुर के बाद इंडिया टूर के आगामी चरण मुम्बई, चेन्नई, बेंगलुरु, अहमदाबाद और दिल्ली में खेले जाएंगे। इससे भारतीय खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय कॉम्पिटिशन मिलेगा और ओलंपिक खेलों की तैयारी में मदद मिलेगी।

ज्यादा खेलना बोरियत और ठहराव का कारण बनेगा, आईसीसी को ध्यान देने की जरूरत : गूच

लंदन, 3 अगस्त। भारत और इंग्लैंड के बीच वर्तमान में पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेली जा रही है। जिसे लेकर फैंस में अलग ही दीवानगी दिख रही है। हालांकि, महान बल्लेबाज ग्राहम गूच ने टेस्ट क्रिकेट को लेकर आईसीसी को सजग किया है। वहीं ग्राहम गूच का कहना है कि भारत और इंग्लैंड के बीच चल रही पांच मैच की कड़ी सीरीज दबाव झेल रहे टेस्ट फॉर्मेट के लिए बिल्कुल सही प्रेरणा है लेकिन उन्हें डर भी है कि सिर्फ बिग थ्री(भारत, इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया) देशों के एक-दूसरे के साथ ज्यादा खेलने का मौजूदा चल अंततः बोरियत और ठहराव का कारण बनेगा। अधिकतर टेस्ट क्रिकेट भारत, इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच खेला जा रहा है जो पांच मैच की सीरीज में एक-दूसरे के साथ खेलते हैं। वेस्टइंडीज, साउथअफ्रीका और न्यूजीलैंड जैसे आर्थिक रूप से कमजोर देश केवल दो या तीन मैच की सीरीज ही खेलते हैं। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान गूच ने कहा कि टेस्ट क्रिकेट को बिग थ्री देशों से आगे बढ़कर फलने-फूलने की जरुरत है। गूच ने आगे कहा कि, मुझे लगता है कि आईसीसी का टेस्ट क्रिकेट पर ध्यान देने की जरूरत है और ये देखने की जरूरत है कि वे आर्थिक रूप से कमजोर देशों की कैसे मदद कर सकते हैं।

डब्ल्यूसीएल का भारत को समर्थन देना पीसीबी को नागवार गुजरा

नई दिल्ली, 3 अगस्त। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने विश्व चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स (डब्ल्यूसीएल) के आयोजकों पर पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाने का आरोप लगाते हुए रविवार को भविष्य में इस टूर्नामेंट में अपने खिलाड़ियों की भागीदारी पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की घोषणा की। भारतीय टीम ने पहलगाम आतंकवादी हमले के बाद पाकिस्तान के साथ द्विपक्षीय खेल संबंधों को लेकर देश के रुख का हवाला देते हुए इस पड़ोसी देश के खिलाफ डब्ल्यूसीएल के ग्रुप चरण के मुकाबले और सेमीफाइनल दोनों में खेलने से इनकार कर दिया था जिसके बाद पीसीबी ने यह फैसला किया।

एसीसी ने दुबई और अबु धाबी की एशिया कप के आयोजन स्थल के रूप में पुष्टि की

दुबई, 3 अगस्त। एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) ने सितंबर में होने वाले एशिया कप के आयोजन स्थलों के रूप में दुबई और अबु धाबी की पुष्टि की है। इसने मैचों के समय की भी घोषणा की है, जो यूएई समयानुसार शाम 6 बजे शुरू होंगे, यानी भारत में शाम 7:30 बजे – भारतीय दर्शकों के लिए प्राइम-टाइम देखने का समय। यह टूर्नामेंट 9 से 28 सितंबर तक चलेगा।

19 दिनों तक चलने वाले इस टूर्नामेंट में, जिसमें 19 मैच शामिल हैं, शेड्यूल में एक-दूसरे से बहुत कम समानताएं होंगी। 15 सितंबर को दो मैच निर्धारित हैं – यूएई बनाम ओमान और उसके बाद श्रीलंका बनाम हांगकांग। पहला मैच स्थानीय समयानुसार शाम 4:30 बजे (भारतीय समयानुसार शाम 6 बजे) शुरू होगा, जबकि दूसरा मैच सामान्य समयानुसार शाम 7:30 बजे शुरू होगा। परिणामस्वरूप, दोनों मैचों के कुछ हिस्से अनिवार्य रूप से एक-दूसरे से टकराएंगे।

भारत के लीग मैच 10 सितंबर (यूएई के विरुद्ध), 14 सितंबर (पाकिस्तान के विरुद्ध) और 19 सितंबर (ओमान के विरुद्ध) निर्धारित हैं। यह मानते हुए कि भारत और पाकिस्तान अपने ग्रुप में शीर्ष दो टीमें रहेंगी, वे 21 सितंबर को सुपर 4 चरण में फिर से आमने-सामने होंगी। भारत के शेष सुपर 4 मैचों की तारीखें लीग तालिका में उनकी स्थिति पर निर्भर करेंगी। स्थानों और समय की घोषणा करते हुए, एसीसी अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने कहा, एसीसी टी20 एशिया कप के स्थान और मैचों का समय घोषित कर दिया गया है ! खचाखच भरे स्टेडियमों और कुछ रोमांचक मुकाबलों का बेसब्री से इंतजार है। एसीसी ने एक बयान में कहा, साल के सबसे बहुप्रतीक्षित टूर्नामेंटों में से एक में शीर्ष एशियाई क्रिकेट देशों के बीच मुकाबला होने के साथ, यह घोषणा टूर्नामेंट की तैयारियों में एक बड़ा कदम है। प्रतिष्ठित स्टेडियमों से लेकर उत्साही प्रशंसकों तक, पूरे महाद्वीप में रोमांचक मुकाबले के लिए मंच तैयार है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने रविवार को नई दिल्ली के जोधपुर हाउस में ''एक पेड़ मां के नाम'' अभियान के तहत बिल्व का पौधा लगाया। इस अवसर पर उन्होंने कहा जैव विविधता को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाने चाहिए।

श्रीनगर हवाई अड्डे पर सेना के अधिकारी व एयरलाइन कर्मचारियों में मारपीट

स्पाइसजेट के प्रवक्ता ने आरोप लगाया कि एक कर्मचारी की रीढ़ की हड्डी टूट गई

- **एयर लाइन्स के अनुसार, सेना अधिकारी के सामान का वजन अधिक था तथा उनसे बोर्डिंग गेट पर अतिरिक्त भार के भुगतान के लिए कहा गया था।**
- **सेना ने कहा कि वह जाँच में पूरा सहयोग करेगी।**

श्रीनगर, 3 अगस्त। श्रीनगर में हवाई अड्डे पर सेना के एक वरिष्ठ अधिकारी द्वारा एक निजी एयरलाइंस के चार कर्मचारियों को कथित तौर पर बुरी तरह पीटने की घटना के प्रकाश में आने के बाद एयरलाइंस ने नागरिक उड्डयन मंत्रालय को पत्र लिखकर मामले में उचित कार्रवाई करने का अनुरोध किया है।

एयरलाइंस स्पाइसजेट के प्रवक्ता ने बताया कि कश्मीर में तैनात एक वरिष्ठ सेना अधिकारी ने 26 जुलाई को श्रीनगर हवाई अड्डे पर उसके चार कर्मचारियों पर कथित तौर पर तब हमला बोल दिया जब उन्होंने सामान के किराए के भुगतान का अनुरोध किया। इस मामले की प्राथमिकी थाने में दर्ज कराई है और नागरिक उड्डयन नियमों के अनुसार यात्री का नाम काली सूची (नो-फ्लाई) में डालने की प्रक्रिया शुरू हो गई है।

एयरलाइंस ने कहा कि उसने घटना का सीसीटीवी फुटेज हासिल करके पुलिस को सौंप दिया है और वह इस मामले की पूरी कानूनी और नियामकीय जाँच पर जोर देगी।

प्रवक्ता ने बताया कि उक्त अधिकारी ने श्रीनगर से दिल्ली जाने वाली उड़ान संख्या एसजी-386 के बोर्डिंग गेट पर तैनात एयरलाइंस के चार कर्मचारियों को इतना पीटा कि एक कर्मचारी की रीढ़ की हड्डी टूट गई और उसके जबड़े में गंभीर चोटें आईं। जब दूसरे कर्मचारी उसे बचाने आए तो अधिकारी ने उन्हें भी पीटा।

प्रवक्ता ने कहा कि अधिकारी के सामान का वजन 10 किलोग्राम था जबकि, मुसाफिरों को विमान के अदंर केवल सात किलोग्राम ले जाने की इजाजत है।

प्रवक्ता ने कहा, ''जब उनको विनम्रतापूर्वक इस बारे में बताया गया और लागू शुल्क का भुगतान के लिए कहा गया, तो यात्री ने इन्कार कर दिया और बोर्डिंग प्रक्रिया पूरी किए बिना ही जबरन एयरोब्रिज में प्रवेश कर गया। यह विमानन सुरक्षा प्रोटोकॉल का स्पष्ट उल्लंघन था।''

प्रवक्ता ने कहा, ''सीआईएसएफ के एक अधिकारी ने उसे वापस गेट तक पहुँचाया।''

इस मामले में सेना ने कहा है कि वह जांच में पूरा सहयोग करेगी। सेना ने बयान में कहा, हम अनुशासन के उच्च मानकों पर चलते हैं और इस घटना को गंभीरता से ले रहे हैं।

बद्रीनाथ हाईवे पर पुल क्षतिग्रस्त, भारी वाहनों पर रोक

- **हल्के वाहनों का आवागमन चालू रखा गया है तथा बद्रीनाथ यात्रा भी फिलहाल जारी है।**

चमोली, 03 अगस्त। उत्तराखण्ड के चमोली जिले मे शनिवार रात्रि को भारी वर्षा होने के कारण बदरीनाथ हाईवे पर हनुमान चट्टी स्थित मोटर पुल के दोनों ओर की एबटमेंट सुरक्षा दीवार क्षतिग्रस्त हो गयी है। सतर्कता और सुरक्षा को देखते हुए फिलहाल भारी वाहनों के आवागमन पर रोक लगाई गई है। छोटे वाहनों टैक्सी, कार सहित अन्य हल्के वाहनों के आवागमन पर कोई रोक नहीं लगाई गई है। बदरीनाथ यात्रा फिलहाल जारी है।

पुलिस अधीक्षक कार्यालय ने जानकारी देते हुए रविवार को बताया फिलहाल बदरीनाथ हाईवे यहाँ पर हल्के वाहनों के ही खोला गया है। पांडुकेश्वर से ऊपर सभी भारी वाहनों को प्रतिबंधित किया गया है।

मुख्यमंत्री भजनलाल ने जोधपुर हाउस में बिल्व का पौधा लगाया

दिल्ली में पत्रकारों से वार्ता में उन्होंने रिफाइनरी के काम में तेजी लाने की बात कही

- **मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में धार्मिक पर्यटन तथा विरासत से जुड़े पर्यटन स्थलों को बढ़ावा दिया जायेगा। प्राचीन हवेलियों और हेरिटेज सम्पत्तियों की सूची बनवाई गई है तथा उनके उचित रखरखाव के लिए सरकार हर संभव सहयोग करेगी।**

नई दिल्ली/जयपुर, 3 अगस्त। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने रविवार को नई दिल्ली के जोधपुर हाउस में 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत बिल्व का पौधरोपण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि बिल्व जैसे पौधे धार्मिक और औषधीय दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। जैव विविधता को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाने चाहिए।

शर्मा ने रविवार को नई दिल्ली के बीकानेर हाउस में पत्रकारों के साथ बातचीत में कहा कि हमारी सरकार राजस्थान के चहुंमुखी विकास के लिए कार्य कर रही है। राजस्थान रिफाइनरी के काम में तीव्रता लाकर यहां बनने वाले बाय-प्रोडक्ट्स को संसाधित करके इससे जुड़े उद्योगों की स्थापना पर केंद्र सरकार के साथ मिलकर काम किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहा कि प्रदेश में विभिन्न प्रकार के पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिसमें विशेष रूप से धार्मिक पर्यटन और हमारी विरासत से जुड़े पर्यटन स्थल शामिल हैं। उन्होंने कहा कि प्राचीन हवेलियों और हेरिटेज संपत्तियों की सूची बनवाई गई है। इनके उचित रखरखाव के लिए सरकार हर संभव सहयोग करेगी।

रीट पेपर लीक में जब्त 1.20 करोड़ की एफडी होगी

यह राशि गत चार साल से गंगापुर सिटी थाने में रखी हुई थी

जयपुर, 3 अगस्त। राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा 2021 पेपरलीक मामले में जब्त 1.20 करोड़ रुपए से अधिक राशि की एफडी होगी।

ईडी मामलों की विशेष अदालत ने एसओजी को इसके निर्देश दिए हैं। यह राशि पिछले चार साल से गंगापुरसिटी थाने में रखी थी, लेकिन अब पेपरलीक का मामला जयपुर ट्रांसफर होने के बाद जब्त कैश और अन्य माल ईडी कोर्ट को भेज दिया गया।

यह राशि गंगापुरसिटी थाना पुलिस ने साल 2021-22 में अलग-अलग आरोपियों से बरामद की थी।

मामले में विशिष्ट लोक अभियोजक बीएस चौहान ने बताया कि गंगापुर सिटी थानाधिकारी की ओर से प्रार्थना पत्र पेश करके जब्तशुदा एक करोड़ 20 लाख दो हजार रुपए व सामान को न्यायालय में जमा करवाने का आग्रह किया गया। कोर्ट ने प्रार्थना पत्र को निस्तारित कर नकदी को एफडी में जमा करवाने का आदेश दिया, वहीं जब्तशुदा सामान एसओजी थाने को सौंप दिया।

कोर्ट ने कहा कि एफडी अधिक ब्याज देने वाले बैंक में करवाई जाए और बैंक का नाम विशिष्ट लोक अभियोजक को बताया जाए।

सुनवाई के दौरान रीट पेपरलीक मामले के आरोपी चन्दनराम, कमला विश्नोई, सुमन, सोहिनी महेन्द्र कुमार, सुरेन्द्र सिंह, राजेश कुमार मीना, संजय कुमार मीना बत्ती लाल मीणा, रवि मीणा, अमित कुमार मीणा, कमलेश मीणा, शिवदान मीना, नरेन्द्र विश्नोई, मुन्नीलाल विश्नोई व अशोक कुमार मौजूद रहे, जबकि शेष आरोपियों का हाजिरी माफी का प्रार्थना पत्र स्वीकार कर लिया। अब 11 अगस्त को मामले की सुनवाई करेगी।

गडकरी के घर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पुलिस और डॉग स्कॉयड की टीम ने गडकरी के घर मेंसर्च ऑपरेशन भी चलाया।

कुछ घंटों बाद गडकरी के घर को बम से उड़ाने की धमकी देने वाले आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार आरोपी का नाम उमेश विष्णु राउत है। उमेश विष्णु राउत मेडिकल चौक स्थित एक देसी शराब की दुकान पर काम करता है। पुलिस ने उसे नागपुर के बीमा दवाखाना के पास से गिरफ्तार किया है।

बता दें कि केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी नागपुर में ही मौजूद हैं। पुलिस की टीम अब गिरफ्तार आरोपी से पूछताछ कर धमकी देने के पीछे की मंशा को जानना चाहेगी कि कहीं इस घटना में कोई और एंगल तो नहीं है।

सरकार ने 35 ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अधिक वसूली गई राशि को वसूलना शामिल होगा। एनपीपीए ने साफ किया है कि निर्धारित मूल्यों में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) शामिल नहीं है, जिसे लागू होने पर जोड़ा जा सकता है।

निर्माताओं को सभी वैधानिक आवश्यकताओं का पालन करना होगा, इंटीग्रेटेड फार्मास्युटिकल डेटाबेस मैनेजमेंट सिस्टम के माध्यम से फॉर्म वी में अपडेटेड प्राइस लिस्ट जारी करनी होगी और एनपीपीए तथा राज्य औषधि नियंत्रकों को जानकारी देनी होगी। स्पेसिफाइड फॉर्मूलेशन और निर्माताओं के लिए जारी किए गए किसी भी पूर्व मूल्य आदेश को इस लेटेस्ट नोटिफिकेशन द्वारा निरस्त कर दिया गया है।

सुप्रीम कोर्ट में सोमवार को भूपेश बघेल की अग्रिम जमानत पर सुनवाई की संभावना

छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री ने आशंका जताई है कि राजनीतिक प्रतिशोध के तहत उनकी गिरफ्तारी की जा सकती है

- **शराब, कोयला तथा महादेव सट्टा घोटाले में सीबीआई और ईडी की जाँच के बाद उनके पुत्र चैतन्य बघेल की गिरफ्तारी हो चुकी है। राज्य व केन्द्र की जाँच एजेन्सियों ने कुछ समय पूर्व संबंधित मामलों की जाँच की गति तेज कर दी है।**

रायपुर, 03 अगस्त। छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव तथा पंजाब प्रभारी भूपेश बघेल को आशंका है कि उन्हें शराब,कोयला और महादेव सट्टा एप घोटालों में नाम आने के बाद कभी भी गिरफ्तार किया जा सकता है।

इस गिरफ्तारी से बचने के लिए बघेल ने सर्वोच्च न्यायालय में अग्रिम जमानत याचिका लगाई है और न्यायालय सोमवार को उनकी याचिका पर सुनवाई के लिए विचार कर सकता है।

बघेल ने याचिका में मांग की है कि उन्हें इन मामलों में किसी भी तरह से गिरफ्तार न किया जाए और जांच में सहयोग करने का अवसर दिया जाए। याचिका में यह भी उल्लेख किया है कि जिस तरह उनके बेटे चैतन्य बघेल की गिरफ्तारी राजनीतिक द्वेष के चलते की गई, उसी तरह उन्हें भी निशाना बनाया जा सकता है।

पूर्व मुख्यमंत्री ने आशंका जताई है कि, राजनीतिक प्रतिशोध के तहत उनकी गिरफ्तारी की जा सकती है। यह याचिका ऐसे समय में दाखिल की गई है जब राज्य और केन्द्र की जांच एजेसिंयों, ईडी तथा आर्थिक अपराध शाखा सहित कई केन्द्रीय जांच एजेंसियों ने संबंधित मामलों की जांच तेज कर दी है।

यह याचिका सोमवार को सर्वोच्च न्यायालय में सुनवाई के लिए लिस्टिंग की गई है। इसके अलावा बघेल और उनके बेटे ने सीबीआई और ईडी द्वारा की जा रही जांचों की वैधता को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी है। याचिका में सवाल उठाया गया है कि सीबीआई और ईडी को छत्तीसगढ़ में जांच करने का अधिकार किस आधार पर मिला, जब राज्य सरकार ने पहले ही उनकी आम सहमति वापस ले ली थी।

सितंबर से ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

12 के अनुसार हर साल रजिस्टर्ड पोस्ट की संख्या में गिरावट आ रही है। साल 2011-12 में रजिस्टर्ड डाक से भेजने वाले आर्टिकल 24 करोड़ से घटकर 2019-20 में 18 करोड़ के रह गए। 25 फीसदी की कमी साफ देखी जा सकती है। कोरोना के बाद से तो स्थिति और खराब हो गई है।

सरयू नहर में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आया। बमुश्किल खिड़की का शीशा तोड़कर एक-एक को बाहर निकाला। तब तक सभी की मौत हो चुकी थी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दुर्घटना का संज्ञान लेकर शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की है। उन्होंने घायलों के समुचित उपचार के निर्देश दिए हैं। सीएम ने मृतकों के परिजनों को पांच लाख की आर्थिक सहायता दिए जाने के निर्देश दिए हैं।

चुनाव आयोग ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पत्र नहीं रख सकता है। अगर रखता है तो यह अपराध है। एनडीए के प्रवक्ताओं ने साफ कहा कि चुनाव आयोग को इस पर संज्ञान लेना चाहिए और तत्काल इस मामले को लेकर तेजस्वी यादव पर मुकदमा दायर करना चाहिए।

'साढ़े छः ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आयोग के कथित कदम का विरोध करते हुए आरोप लगाया था कि यह भाजपा की उन राज्यों की वोट देने वाली आबादी का डेटा बदलने की चाल है जहाँ उसकी कोई पकड़ नहीं है।

ग्रेनाइट खदान ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने इस दुर्घटना पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए अधिकारियों को घायल श्रमिकों को बेहतर चिकित्सा प्रदान करने के निर्देश दिये हैं।

भारत ने अमेरिका से इस वर्ष दोगुनी राशि का तेल खरीदा

नई दिल्ली, 03 अगस्त। रूस से कच्चा तेल खरीदने पर आपत्ति जताने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति के लिए खुशखबरी है। भारत ने पिछले तीन महीने में पिछले साल की अपेक्षा 114 प्रतिशत ज्यादा कच्चा तेल खरीदा है। अगर जनवरी से 25 जून तक बात करें तो भारत ने पिछले साल की अपेक्षा अमेरिका से 51 प्रतिशत ज्यादा कच्चा तेल खरीदा है। पिछले साल जनवरी से जून तक 0.18 एमबी/डी कच्चा तेल भारत में आयात हुआ था, इस साल अब तक इसकी मात्रा .271 एमबी/डी पहुंच चुकी है। 2024 की तुलना में अप्रैल से जून 2025 तिमाही में भारत ने अमेरिका से 114 प्रतिशत ज्यादा कच्चा तेल आयात किया है। इन आयातों का वित्तीय मूल्य दोगुने से भी अधिक हो गया है। 2024-25 की पहली तिमाही में 1.73 बिलियन डॉलर से बढ़ कर 2025-26 की अप्रैल से जून में 3.7 बिलियन डॉलर हो गया है।

- **अप्रैल-जून 2024 में आयात 1.73 बिलियन डॉलर था, जो इस अप्रैल-जून में 3.7 बिलियन डॉलर हो गया।**

सूत्रों के अनुसार, कच्चे तेल के आयात की गति और तेज होती दिख रही है। गर्मियों के महीनों में भी यह वृद्धि जारी रहने की उम्मीद है। गत जुलाई में भारत ने जून की तुलना में अमेरिका से 23 प्रतिशत ज्यादा कच्चा तेल आयात किया है। भारत के कुल कच्चे तेल आयात में अमेरिका की हिस्सेदारी महज 3 प्रतिशत थी, जो जुलाई में बढ़ कर 8 प्रतिशत हो गई है। सूत्रों का कहना है कि वित्तीय साल 2025-2026 में भारतीय कंपनियां अपने कच्चे तेल के आयात में 150 प्रतिशत की वृद्धि करेंगी। आयात की यह बढ़त केवल कच्चे तेल पर नहीं है। यह बढ़त अन्य इनर्जी प्रोडक्ट पर भी है। अमेरिका से भारत आने वाला तरलीकृत पेट्रोलियम गैस (एलपीजी) और तरलीकृत प्राकृतिक गैस (एलएनजी) का आयात भी तेजी से बढ़ा है। वित्तीय साल 2024-25 में एलएनजी आयात 2.46 अरब डॉलर तक पहुंच गया, जो पिछले वर्ष के 1.41 अरब डॉलर से लगभग दोगुना है। यानी एलएनजी आयात में करीब 100 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

ऊँची लहरों से केरल के तटों पर पानी भरने की आशंका

- **मछुआरों व स्थानीय नागरिकों से अत्यधिक सावधानी बरतने व इन क्षेत्रों में जाने से बचने को कहा गया है।**

तिरुवनंतपुरम, 03 अगस्त। भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र ने केरल के तटीय इलाकों में ऊंची लहरों के कारण पानी का स्तर बढ़ने की आशंका को देखते हुये चेतावनी जारी की है।

स्थानीय भाषा में इसे कल्लक्कडल के नाम से भी जाना जाता है जो शक्तिशाली समुद्री उफानों के कारण तटीय बाढ़ की घटना को संदर्भित करता है ।

यह अक्सर दूर के तूफानों से उत्पन्न होती है । समुद्र में दूर-दूर तक तेज हवाओं या तूफानों के कारण उत्पन्न ये लहरें लंबी दूरी तय करती हैं और तट पर पहुंचकर भारी बाढ़ और क्षति का कारण बन सकती हैं।

कल्लक्कडल एक स्थानीय शब्द है जिसका प्रयोग केरल में, विशेष रूप से मानसून-पूर्व मौसम के दौरान, उफान के कारण आने वाली बाढ़ के लिए किया जाता है।

इन हालात को देखते हुए मछुआरों और तटीय निवासियों को अत्यधिक सावधानी बरतने की सलाह देते हुए कहा गया है कि वे इन क्षेत्रों में जाने से बचें और स्थानीय अधिकारियों के निर्देशों का पालन करें।

'योगी के कैबिनेट मंत्री राजभर बिहार में भाजपा पर दबाव बना रहे हैं'

वे बिहार विधानसभा चुनाव में सम्मानजनक सीटों पर गठबंधन करना चाहते हैं

- **राजभर ने कहा कि उनकी पार्टी कई वर्षों से बिहार में सक्रिय है, इसलिए वे विधानसभा चुनाव में अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहते है।**

लखनऊ, 3 अगस्त। उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ सरकार में कैबिनेट मंत्री ओम प्रकाश राजभर ने अब नए समीकरण के तहत भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर दबाव बनाना शुरू कर दिया है। इसके संकेत उस समय मिलने शुरू हो गए जब उन्होंने कहा कि बिहार विधानसभा चुनाव में भाजपा के साथ गठबंधन नहीं हुआ तो सारे विकल्प खुले हुए हैं।

दरअसल, भाजपा की सहयोगी सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी ने बिहार चुनाव लड़ने के लिए गैर-भाजपा दलों के साथ तीसरा मोर्चा बनाने के संकेत देकर अपनी राजनीतिक ताकत फिर से दिखानी शुरू कर दी है।

सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) प्रमुख ओम प्रकाश राजभर ने अपने बयान में कहा अगर बिहार में भाजपा के साथ हमारा गठबंधन नहीं होता है, तो हम सभी विकल्प खुले रखेंगे।

योगी सरकार में मंत्री राजभर ने कहा कि उनकी पार्टी प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी और मुकेश साहनी की विकासशील इंसान पार्टी (वीआईपी) सहित कई छोटी पार्टियों के साथ बातचीत कर रही है।

राजभर ने कहा कि उनकी पार्टी बिहार की 243 विधानसभा सीटों में से कम से कम 156 पर चुनाव लड़ने की योजना बना रही है। उन्होंने कहा यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि स्थिति क्या और कैसी बनती है। हम बिहार में अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहते हैं, जहां हम पिछले कई वर्षों से सक्रिय हैं।

भाजपा के सूत्रों ने बताया कि राजभर सीवान, चंपारण, सारण, गोपालगंज और बक्सर के कुछ इलाकों में सम्मानजनक सीटों के लिए भाजपा से कड़ी मोलभाव कर रहे हैं जहां राजभर, राजवंशी, राजधोबी और भर समुदायों की अच्छी-खासी मौजूदगी है। पार्टी का लक्ष्य पटवा और मंडल जैसी जातियों को भी एकजुट करना है।

एयर इंडिया का पुनः ''राष्ट्रीयकरण'' ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

- **पर, यह भी जरूरी है कि एयर इंडिया का मैनेजमैंट अपनी दिक्कतों व कमियों के बारे में सही जानकारी दे जनता को, नहीं तो यह ''इम्प्रेशन'' जोर पकड़ लेगा कि मैनेजमैंट के पास सिविल एविएशन का पूरा अनुभव नहीं है और कार्य कुशलता के अभाव में कंपनी डूब जायेगी।**

विमान ऑर्डर दिया है, तकनीक और कर्मचारियों के प्रशिक्षण में निवेश किया है, और ब्रांड की साख वापस लाने की कोशिश की जा रही है। इस तरह का बदलाव, अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार भी, कई सालों में होता है, महीनों में नहीं।

आज जो समस्याएं एयर इंडिया में देखी जा रही हैं, वे पुनर्गठन की प्रक्रिया का हिस्सा हैं, न कि व्यवस्था की विफलता। अभी अगर फिर से इसका राष्ट्रीयकरण किया गया, तो भारत के आर्थिक सुधारों की साख को बड़ा झटका लगेगा और वैश्विक निवेशकों का भरोसा कमजोर होगा, जिन्हें नीति में स्थिरता चाहिए।

यह बात सही है कि एयर इंडिया के साथ भावनात्मक लगाव आज भी बना हुआ है। दशकों तक यह भारत की हवाई पहचान रही है, प्रधानमंत्रियों को ले जाने वाली, संकट में नागरिकों को वापस लाने वाली और प्रवासी भारतीयों को देश से जोड़ने वाली एयरलाइन। जब वही एयरलाइन निजी हाथों में संघर्ष करती दिखती है, तो लोगों को पीड़ा होती है।

अगर टाटा समूह द्वारा दी जा रही पूंजी और स्वतंत्रता के बावजूद एयरलाइन लगातार विफल होती है, तो सार्वजनिक हित की बात फिर से उठ सकती है। मनीष तिवारी की यह चिंता, कि गैर-विमानन पेशेवर (नॉन एविएशन प्रॉफैशनल्स) इसे चला रहे हैं, इस बड़े भय को दर्शाती है कि एयर इंडिया की आत्मा सिर्फ लाभ कमाने के चक्कर में कहीं खो रही है।

इसके अलावा, भारत जैसे विशाल देश में हवाई संपर्क एक रणनीतिक संसाधन है। अगर निजी नियंत्रण में कुछ प्रमुख मार्ग घाटे का सौदा बनते हैं, तो जनता की जरूरतें पूरी नहीं होंगी। ऐसे में सरकार को सीधे या रैग्युलेशन के ज़रिए हस्तक्षेप करना पड़ सकता है।

फिर भी, एयर इंडिया का पुनः राष्ट्रीयकरण अभी जल्दबाज़ी होगी और मुश्किल से हो रहे सुधारों को कमज़ोर करने का खतरा पैदा हो सकता है। एयर इंडिया को कब्ज़े में लेने की नहीं, बल्कि कड़ी निगरानी की ज़रूरत है। सरकार को अपने नियामक अधिकारों का इस्तेमाल करते हुए सेवा गुणवत्ता, सुरक्षा और प्रतिस्पर्धा पर नज़र रखनी चाहिए। वहीं, टाटा समूह को संवाद बेहतर करना होगा, तेज़ी से कदम उठाने होंगे और यात्रियों व नीति-निर्माताओं, दोनों को यह भरोसा दिलाना होगा कि वे इस जिम्मेदारी के लायक हैं।

निजीकरण कभी कोई जादू की छड़ी नहीं था। यह एक ऐसा कदम था, जिससे सरकार को एयरलाइन चलाने के काम से आज़ाद किया जा सके, ताकि वह शासन पर ध्यान दे सके। इसी भावना में, ज़रूरी है कि जो टूटा है, उसे ठीक किया जाए, बिना उसे फिर से पूरी तरह बिगाड़े।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com **कोटा कार्यालय:**-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 **बीकानेर कार्यालय:**-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 **उदयपुर कार्यालय:**-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 **अजमेर कार्यालय:**-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 **जालोर कार्यालय :**- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 **हिण्डौनसिटी कार्यालय :**- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 **चूरू कार्यालय:** एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908